04 - भागवत के वक्तव्य का इतना विरोध क्यों

05 - लुई ब्रेल : जिसने नेत्रहीनों के लिए शिक्षा के द्वार खोले

06 - पुलिस कर रही हादसे की जांच, हादसे के वक्त बस में 20 यात्री थे सवार

07 - योजनाएं सिर्फ योजना नहीं लोगों की जिंदगी बदलने का...

A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 4 जनवरी, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-125 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

अंबेडकर मौजूदा राजनीति के लिए क्यों हो गए हैं इतने जरूरी?

सैयद मोजिज इमाम

बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर एक बार फिर चर्चा में हैं। वजह पिछले दिनों राज्यसभा में दिया गया गृहमंत्री अमित शाह का एक बयान है। इसने विपक्ष को गृहमंत्री और उनकी पार्टी पर हमलावर होने का मौक़ा दे दिया है। हालाँकि, अमित शाह का कहना है कि उनके बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है।

यही नहीं, उनके बयान के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म 'एक्स' पर कांग्रेस पर पलटवार किया। अमित शाह ने प्रेस वार्ता की। इससे भी अंदाज़ा लगता है कि भारतीय जनता पार्टी इस विवाद से कितनी बेचैन है।

आखिर डॉ. अंबेडकर आज के वक़्त और राजनीति में क्यों महत्वपूर्ण हैं, हमने कुछ विशेषज्ञों के ज़रिए इसे समझने की कोशिश की। पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफ़ेसर श्याम लाल ने कहा, 'डॉ. अंबेडकर ने दलित समाज के उत्थान के लिए जैसा काम किया है, ऐसे में अगर वह समाज उन्हें अपना मसीहा या भगवान मानता है तो इसमें कोई अतिश्योक्ति भी नहीं है।'

पूर्व आईएएस अधिकारी और कांग्रेस के नेता पीएल पुनिया का कहना है, 'अगर अंबेडकर ने सामाजिक परिवर्तन की लड़ाई न लड़ी होती, तो हम लोग आईएएस अधिकारी न बनकर आज भी ग़ुलामी की ज़िंदगी जी रहे होते। बाबा साहेब की मूल लड़ाई समाज में बराबरी के अधिकार की थी। उनका संघर्ष इस बात के लिए भी था कि राजनीतिक शक्ति समाज के आख़िरी व्यक्ति तक कैसे पहुँचे।'

दिल्ली के भारती कॉलेज के अंबेडकर स्टडी सर्किल के डॉ. जसपाल सिंह का कहना है, 'अंबेडकर ने सिर्फ़ दलित वर्ग के लिए ही नहीं बल्कि समाज के सभी दबे-कुचले लोगों की बेहतरी के लिए काम किया। हालाँकि, इस संदर्भ में दूसरों के साथ उनके राजनीतिक मतभेद भी रहे लेकिन उनका मूल लक्ष्य समाज में बराबरी का ही था।'

साल 2024 के लोकसभा चुनाव में विपक्ष ने संविधान और आरक्षण के मुद्दे पर ही भाजपा को घेरने की कोशिश की थी। ऐसा माना जाता है कि इस वजह से भी भाजपा अकेले बहुमत के आँकड़े तक नहीं पहुँच सकी। लिहाज़ा, अमित शाह के बयान पर भाजपा चिंतित दिख रही है।

अमित शाह ने राज्यसभा में अपने भाषण के दौरान डॉ. बीआर अंबेडकर की विरासत पर कहा था, 'अब ये एक फ़ैशन हो गया है। अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर... इतना नाम अगर भगवान का लेते तो सात जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता।' गृह मंत्री के भाषण के इसी छोटे से अंश पर विपक्षी दल आपत्ति जता रहे थे।

वरिष्ठ पत्रकार विनोद शुक्ला कहते हैं, 'बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर पर राजनीतिक दलों के बीच चल रहे आरोप-प्रत्यारोप के केंद्र में अनुसूचित जाति के 20-22 प्रतिशत मतदाता हैं। 'असली लड़ाई इस वोट बैंक को हासिल करने और उसे बरक़रार रखने की है। वास्तव में लंबे प्रयास के बाद पिछले दिनों भाजपा अनुसूचित जाति के एक बड़े वर्ग को लुभाने में कामयाब हुई थी।'

इसीलिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और शाह के हमलों के बावजूद कांग्रेस इस मुद्दे पर पीछे हटते दिखना नहीं चाहती। कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा, 'बाबा साहेब अंबेडकरजी ने हमें हमारा संविधान दिया। हर नागरिक को अधिकार दिया है।'

'भाजपा ने जिस तरह से उनका अपमान किया, उससे पूरे देश की जनता आहत है। बाबा साहेब का इस तरह से अपमान देश नहीं सहेगा।'

कांग्रेस के साथ ही बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) भी भाजपा के ख़िलाफ़ सड़कों पर उतर आई। अभी तक ज़्यादातर मुद्दों पर ख़ामोश रहने वाले बीएसपी के कार्यकर्ताओं ने हर ज़िला मुख्यालय पर प्रदर्शन किया और राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन भी दिया।

दलित समाज में अंबेडकर का क्या स्थान है, भाजपा को भी ये बात बख़ूबी पता है।

इसलिए इस मुद्दे पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आगे तो आए लेकिन उन्होंने बीएसपी के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कहा।

वरिष्ठ पत्रकार विनोद शुक्ला के मुताबिक, 'साल 2024 के लोकसभा के चुनावों के दौरान इंडिया गठबंधन ने दलित समाज के एक धड़े को अपने पक्ष में कर लिया था। विपक्ष ने भाजपा के कई नेताओं के बयानों के आधार पर जनता को यह बताया कि अगर भाजपा चुनाव जीतती है तो आरक्षण समाप्त कर देगी। संविधान बदल देगी।' शुक्ला नहीं मानते कि यह रणनीति दोबारा काम करेगी।

वरिष्ठ पत्रकार अनिल चमड़िया का कहना है, 'भाजपा और कांग्रेस ने अंबेडकर की विचारधारा का समर्थन राजनीतिक कारणों से ही किया है लेकिन इसका समायोजन नहीं किया। अंबेडकर जाति व्यवस्था के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे। इसके ख़िलाफ़ उनकी विचारधारा की लड़ाई अब भी जारी है। डॉ. अंबेडकर ने हिन्दुत्ववादी यानी मनुवादी विचारधारा को किसी भी स्तर पर स्वीकार करने वाली राजनीतिक पार्टियों की आलोचना की है। उन्हें समाज में समानता विरोधी बताया है।'

दूसरी ओर, प्रोफ़ेसर श्याम लाल का मानना है, 'एक राष्ट्र को कैसे सबको एक साथ लेकर चलना चाहिए। यह सोच अंबेडकर ने ही दी है। एक राष्ट्र तभी अग्रसर हो सकता है, जब समाज में सबको बराबरी को दर्जा प्राप्त हो।'

हिंदू धर्म से जुड़े मुद्दों पर अंबेडकर और सावरकर की राय अलग-अलग थी।

बाबा साहब आंबेडकर ने बहुत पहले ही कह दिया था, 'हम समाज में बराबरी का अधिकार चाहते हैं और हम जहाँ तक संभव है, हिंदू समाज में ही रहकर ये अधिकार लेना चाहते हैं। अगर ज़रूरी हुआ तो हम हिंदुत्व से पिंड छुड़ाने से नहीं हिचकेंगे। अगर हम हिंदुत्व को छोड़ते हैं तो मंदिर जाने में हमारी कोई दिलचस्पी नहीं रहेगी।'

हिंदू धर्म से जुड़े मुद्दों पर अंबेडकर और सावरकर की राय अलग-अलग थी। जब अंबेडकर ने ये कहा था कि हिंदू धर्म छोड़ने में उन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं होगी, तब उन्होंने ये साफ़ नहीं किया था कि वह बौद्ध धर्म अपनाने के बारे में सोच रहे हैं। इस विषय में सावरकर ने 'निर्भिक' के तीन नवंबर 1935 के अंक में एक विस्तृत लेख लिखा था।

सावरकर ने अंबेडकर के हिंदू धर्म छोड़ने की इच्छा पर सवाल उठाते हुए लिखा था, 'हिंदू धर्म में भी हर संगठित धर्म की तरह तर्कहीनता के कुछ तत्व हैं। लेकिन दूसरे धर्मों में भी इस तरह की तर्कहीनता पाई जाती है।'

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

बिहार में बीपीएससी कैंडीडेट्स का जोरदार प्रदर्शन

● पप्पू यादव समर्थकों ने रोकीं ट्रेनें, 12 जिलों में हाईवे जाम

सीएम हाउस को घेरने निकले संगठनों को पुलिस ने रोका

पटना (एजेंसी)। बिहार की राजधानी पटना में बीपीएससी कैंडीडेट्स धरना दे रहे हैं। कैंडीडेट्स की मांग है कि 70वीं प्रारंभिक परीक्षा रद्द की जाए। इसके अलावा लाठीचार्ज के दोषियों को सजा देने और मृतक बीपीएससी छात्र सोनू को 5 करोड़ रुपए की मुआवजा देने की मांग की है। कैंडीडेट्स के समर्थन में पप्पू यादव ने आज बिहार बंद बुलाया है। जनसुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर कैंडीडेट्स के समर्थन में गुरुवार शाम से आमरण अनशन पर बैठे हैं। इंडिया अलायंस के छात्र संगठन सीएम हाउस का घेराव करने निकले। पुलिस ने उन्हें 2 बार बैरिकेडिंग कर रोका। पहली बार वो बैरिकेडिंग तोड़कर आगे निकल गए। दूसरी बार पुलिस ने उन्हें रोक लिया। छात्र संगठनों ने अपना प्रदर्शन खत्म कर

दिया है। उनका कहना है कि अब 6 जनवरी को आगे की रणनीति बनेगी। वहीं, महागठबंधन छात्र संगठन ने मांग पूरी नहीं होने पर 6 जनवरी को पूरे राज्य में विरोध प्रदर्शन का ऐलान किया है। राजद नेता और विपक्ष के लीडर तेजस्वी यादव ने भी छात्रों को समर्थन दिया था। पप्पू यादव और उनके समर्थकों ने पैसेंजर ट्रेनें रोकीं। पप्पू यादव भी सचिवालय हाल्ट रेलवे स्टेशन पहुंचे। यहां एक और ट्रेन को रोका गया।

मुख्यमंत्री ने 10वें राष्ट्रीय कला उत्सव का दीप प्रज्वलित कर किया शुभारंभ

सुनाई राजा भोज, गंगू तेली की कहानी

● सीएम ने कहा कि भारत की कला संस्कृति की पहचान बना राष्ट्रीय कला उत्सव ● सांस्कृतिक रुप से समृद्ध विभिन्न विरासतों को देखने समझने का मौका मिलता है

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल में एनसीईआरटी परिसर में आयोजित राष्ट्रीय कला उत्सव का शुभारंभ किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2015 में इस कला उत्सव की शुरुआत की थी। इसके माध्यम से स्कूली छात्रों की कला को पहचानने और प्रतिभा को निखारने का अवसर मिला। साथ ही भारत

जिसकी विशेषता अनेकता में एकता की है। वहां सांस्कृतिक रुप से समृद्ध विभिन्न विरासतों को देखने समझने का मौका मिलता है. उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इस आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

64 कला 14 विद्याओं में निष्णात थे श्रीकृष्ण : उन्होंने कहा कि कंस वध के बाद श्रीकृष्ण शिक्षा प्राप्त करने इसी मध्यप्रदेश के सांदीपनी आश्रम आए और गुरुकुल पद्धति के माध्यम से शिक्षा गृहण की। श्रीकृष्ण 64 कला और 14 विद्याओं में निष्णात थे। इसीलिए कहा गया कि श्रीकृष्ण वंदे जगतगुरुं यानि शिष्य रहते भी उन्हें गुरु का दर्जा दिया गया। श्रीकृष्ण बांसुरी वादन करते थे तो सुदर्शन चक्र भी योग के माध्यम से धारण किया। उन्होंने विराट स्वरुप के दर्शन भी कराए। श्रीकृष्ण ने एक ही जीवन में कई स्वरुपों के दर्शन कराएं। इनकी कथाओं को भारत की अलग अलग नृत्य विधाओं में प्रदर्शित किया जाता है।

कहां राजा भोज कहां गंगू तेली की सुनाई कहानीः उन्होंने बताया कि सिंधुराज ने अपने दत्तक पुत्र मुंज को राजपाट सौंपा जिनका एक युद्ध में प्राणांत हुआ। उनके बाद राजा भोज ने राजपाट संभाला लेकिन वे युद्ध की बजाय अन्य कलाओं में रुचि रखते थे। इसके बाद राजा भोज को एक नाटक के माध्यम से राजा मुंज के युद्ध में हार और अपमान का दृश्य दिखाया गया। तब राजा भोज का खून खौल उठा और उन्होंने एक साथ राजा गांगेय और राजा तैलव की सेना को हराया। तभी से ये कहावत चली कि कहा राजा भोज और कहां गांगेय तैलव जो बाद में अपभ्रंश होकर कहां राजा भोज और कहां गंगू तेली में बदल गई।

प्रोफेसर ज्योत्सना तिवारी ने बताया कि इस बार पारंपरिक कहानी वाचन जैसी विद्या को भी जोड़ा गया है। कार्यक्रम में 30 सब कैटेगिरी हैं। रिजल्ट 5 जनवरी को घोषित होगा और समापन 6 जनवरी को सम्मान कार्यक्रम के साथ होगा।

एनसीईआरटी के डायरेक्टर प्रोफेसर दिनेश प्रसाद सकलानी ने कहा कि जो पुस्तकें बन रही हैं, उनमें भारतीयता की विशेषता होगी।कश्मीर, लद्दाख और कई अन्य जनजातीय क्षेत्रों की संस्कृति और परंपराओं को अपनी कला के माध्यम से जीवंत किया।

यह आयोजन स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 3 से 6 जनवरी तक आयोजित किया गया है, जिसमें देशभर से 700 छात्र-छात्रा भाग लेंगे। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन करना है, जो स्कूल , जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया जाता है। इसके माध्यम से छात्रों को भारतीय कला और सांस्कृतिक विविधता को समझने का अवसर मिलता है।

कार्यक्रम की थीम 'विकसित भारत वर्ष 2047 में भारत के लिए एक दृष्टिकोण' रखी गई है। यह कला उत्सव 2015 से आयोजित किया जा रहा है, और इस साल यह तीसरी बार है जब भोपाल को राष्ट्रीय स्तर पर मेज़बानी का अवसर मिला है। इस आयोजन का उद्देश्य छात्रों की कलात्मक प्रतिभा को पहचानना, उन्हें प्रदर्शित करने का एक मंच प्रदान करना और समाज के सभी वर्ग को मुख्य धारा में लाना है।

सुप्रभात

तुम आना तो, ऐसे आना
जैसे, समय ताल में
झिलमिलाता है सूरज
तुम रख लेना अपने पर्स में
चिल्लर सरीखी, कुछ यादें
बीते वर्ष की, और दे देना
मेरे मन में उठती उन
अनगिनत ऊष्मित इच्छाओं को
जो देर तक गरमाये रखे
अपनी हथेलियों के ताप से मुझे
देखना ! उसी ताप से
कुछ किरणें उपहार में देगी
मेरे मन की दिशाओं को
सतरंगी दुपट्टा बुनकर
बोलो ! जनवरी2025
तुम आओगी ना ऐसे...!
जैसे आती है, अपने बेआवाज
कदमों से ओस
और देर तक सहलाया करती है
नवांकुरित बीज के गालों को
अपने नाजुक हाथों से।

- अरुण सातले

संपत्ति का अधिकार सभी का संवैधानिक अधिकार है

● मुआवजे में देरी होने पर सुप्रीम कोर्ट ने दिया ऐतिहासिक फैसला

● 22 साल बाद भी मुअवजा नहीं दिए जाने पर की कड़ी टिप्पणी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि संपत्ति का अधिकार एक संवैधानिक अधिकार है। किसी व्यक्ति को उसकी संपत्ति से तब तक वंचित नहीं किया जा सकता जब तक कि उसे कानून के अनुसार उचित मुआवजा न दिया जाए। जस्टिस बी. आर. गवई और जस्टिस के. वी. विश्वनाथन की बेंच ने कहा कि 1978 के संविधान (चवालीसवां संशोधन) अधिनियम के तहत संपत्ति का अधिकार मौलिक अधिकार नहीं रहा, लेकिन यह एक कल्याणकारी राज्य में मानव अधिकार और संविधान के अनुच्छेद 300-ए के तहत संवैधानिक अधिकार बना हुआ है। अनुच्छेद 300-ए के अनुसार, किसी भी व्यक्ति को उसकी संपत्ति से केवल कानून के अधिकार के तहत ही वंचित किया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला कर्नाटक हाई कोर्ट के नवंबर 2022 के एक फैसले को चुनौती देने वाली अपील पर दिया गया, जो बेंगलुरु-मैसूर इन्फ्रास्ट्रक्चर कॉरीडोर प्रोजेक्ट के तहत भूमि अधिग्रहण से संबंधित था। बेंच ने कहा कि हालांकि संपत्ति का अधिकार अब मौलिक अधिकार नहीं है, लेकिन भारत के संविधान के अनुच्छेद 300-ए के प्रावधानों के तहत यह एक संवैधानिक अधिकार है। सुप्रीम कोर्ट ने पाया कि 2003 में इंडस्ट्रियल एरियाज डेवलपमेंट बोर्ड द्वारा परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण की अधिसूचना जारी की गई थी।

दिल्ली में आपदा सरकार, ये कट्टर बेईमान लोग

पीएम मोदी बोले-मैं भी शीश महल बनवा सकता था, लेकिन गरीबों के लिए 4 करोड़ घर बनवाए

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में आगामी विधानसभा चुनावों को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार से चुनाव प्रचार की शुरुआत की। पीएम ने अशोक विहार में जनता को संबोधित करते हुए एएपी सरकार पर निशाना साधा। मोदी ने आप सरकार को आपदा सरकार बताया। उन्होंने कहा- सत्ता में खुद को कट्टर बेईमान बताने वाले लोग बैठे हैं। जो खुद शराब घोटाले के आरोपी हैं। ये चोरी भी करते हैं और सीनाजोरी भी। दिल्ली वालों को इस आपदा सरकार को सत्ता से हटाना है। आज हर गली कहती है आपदा को नहीं सहेंगे, बदलकर रहेंगे। पीएम ने इस चुनाव के लिए नारा दिया कि आपदा को हटाना है, भाजपा को लाना है। पीएम मोदी ने आज दिल्ली में 4500 करोड़ रुपए की कई परियोजनाओं का इनॉगरेशन और शिलान्यास किया। उन्होंने दिल्ली के

अशोक विहार में बने 1,675 फ्लैट्स का भी उद्घाटन किया। गरीबों के लिए नए घर का इनॉगरेशन करते हुए पीएम मोदी ने कहा- मैं भी शीशमहल बना सकता था लेकिन मैंने कभी अपना घर नहीं बनाया, 10 सालों में 4 करोड़ गरीब परिवारों को पक्का घर दिया है। बीते 10 साल में दिल्ली एक बड़ी आपदा से घिरी है। अन्ना हजारे जी को सामने करके कुछ कट्टर बेईमान लोगों ने दिल्ली को आपदा में धकेल दिया। शराब ठेकों में घोटाला, बच्चों के स्कूल में घोटाला, गरीबों के इलाज में घोटाला, प्रदूषण से लड़ने के नाम पर घोटाला। दिल्ली वालों ने आपदा के विरुद्ध जंग छेड़ दी है। वोटर आपदा से दिल्ली को मुक्त करने की ठान चुका है। दिल्ली का हर नागरिक कह रहा है, हर बच्चा कह रहा है, हर गली से आवाज आ रही है- आपदा को नहीं सहेंगे, बदलकर रहेंगे।

आपदा वाले आयुष्मान योजना को दिल्ली में लागू नहीं होने देते

पीएम ने कहा–दिल्ली में 500 जन औषधि केंद्र बनाए गए हैं। 80 फीसदी दवाओं पर डिस्काउंट मिलता है। 100 रुपए की दवा 15 रुपए में मिलती है। मुफ्त इलाज की सुविधा देने वाली आयुष्मान योजना का लाभ देना चाहता हूं, लेकिन आपदा सरकार को दिल्ली वालों से दुश्मनी है। आपदा वाले योजना लागू नहीं होने दे रहे हैं। नुकसान दिल्लीवालों को उठाना पड़ रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा, दिल्ली राजधानी है, बड़े खर्चों वाले बहुत से काम यहां होते हैं वो केंद्र सरकार के जिम्मे है। सड़कें, मेट्रो, अस्पताल, कॉलेज कैंपस सब केंद्र ही बना रही है लेकिन यहां की आपदा सरकार के पास ब्रेक लगी हुई है। मैंने लोगों से पूछा छठ पूजा कैसी रही। पीएम बोले कि साहब यमुनाजी की ऐसी हालत है कि हमने जैसे तैसे पूजा कर ली मोहल्ले में मां यमुना से क्षमा मांग ली। बेशर्मी देखिए, इन लोगों को लाज शर्म नहीं आती है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18°c न्यूनतम 13°c

2

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 04 जनवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

चीन में फैले नए वायरस से हर ओर फैली सनसनी

● ऐक्शन में आया भारत,स्वास्थ्य मंत्रालय कर रहा है जांच, सावधानी रखने की दी सलाह,

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन में एक और वायरस ने दस्तक दी है जिसे लेकर लोगों में चिंताएं बढ़ती जा रही हैं। कोरोना वायरस के बाद चीन में वायरस के मामले सामने आए हैं। खबरों में दावा किया जा रहा है कि चीन के अस्पताल इस वायरस से ग्रसित मरीजों से भरे हुए हैं। अब भारत ने भी इस मामले पर कोताही ना बरतते हुए संज्ञान लिया है। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के तहत नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल (राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र) देश में सांस संबंधी लक्षणों और इन्फ्लूएंजा के मामलों की बारीकी से निगरानी कर रहा है और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के संपर्क में है। आधिकारिक सूत्रों के हवाले से बताया है कि स्थिति पर जल्द ही अपडेट दिया जाएगा। एक अधिकारी ने बताया,हम स्थिति की बारीकी से निगरानी कर रहे हैं। हम खबरों की जांच करेंगे और इसके हिसाब से अपडेट करेंगे। वहीं सूत्रों ने वायरस से जुड़ी एक एजेंसी से मिले अपडेट के बाद कहा, 16-22 दिसंबर के डेटा से पता चलता है कि चीन में मौसमी इन्फ्लूएंजा, राइनोवायरस, रेस्पिरेटरी सिंसिटियल वायरस और ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस सहित तीव्र सांस से जुड़े संक्रमणों में वृद्धि हुई है। वहीं विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह के मामलों को गंभीरता से लेने की जरूरत है। मामले पर बातचीत करते हुए डॉ. डैंग्स लैब के सीईओ डॉ. अर्जुन डैंग ने कहा है कि चीन में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए निगरानी बढ़ाने और शुरुआती लक्षण पहचानने की जरूरत है। डॉ अर्जुन डैंग ने कहा, वायरस का फिर से उभरना सांस से जुड़े वायरस द्वारा उत्पन्न चुनौतियों को दर्शाता है।

छोटे बच्चों पर ज्यादा असर, दावा- प्रभावित इलाकों में इमरजेंसी; 2019 में वुहान से कोविड फैला था

कोविड-19 के 5 साल बाद चीन में फिर एक बार नए वायरस का संक्रमण फैल रहा है। इसके लक्षण भी कोरोना वायरस की तरह ही है। इस नए वायरस का नाम ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस है, जो कि एक RNA वायरस है। वायरस से संक्रमित होने पर मरीजों में सर्दी और कोविड-19 जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। इसका सबसे ज्यादा असर छोटे बच्चों पर देखा जा रहा है। इनमें 2 साल से कम उम्र के बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित हैं।रॉयटर्स के मुताबिक 16 से 25 दिसंबर के बीच सांस संबंधी समस्याओं के सबसे ज्यादा मामले सामने आए हैं।सोशल मीडिया पर किए गए एक पोस्ट में मरीजों की फोटो पोस्ट करते हुए दावा किया गया है कि चीन ने वायरस के फैलने के बाद कई जगहों पर इमरजेंसी घोषित कर दी है। दावे के मुताबिक अस्पतालों और श्मशान घाटों में भीड़ बढ़ रही है। हालांकि, चीन की तरफ से ऐसी कोई जानकारी नहीं दी गई है। द स्टार की रिपोर्ट के मुताबिक ष्छष्ट ने पहले से अस्थमा और क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी जैसी बीमारियों से जूझ रहे मरीजों में संक्रमण का खतरा ज्यादा होने की बात कही है। खांसने और छींकने से वायरस के फैलने का खतरा अधिक है।

संक्षिप्त समाचार

मनमोहन सिंह के घर अखंड पाठ और भोग का आयोजन

सोनिया गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे पहुंचे,पूर्व पीएम को दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन के 7 दिन बाद उनके घर पर अखंड पाठ और भोग कार्यक्रम रखा गया। इसमें कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी और कांग्रेस चीफ मल्लिकार्जुन खड़गे शामिल हुए। सोनिया और खड़गे ने मनमोहन सिंह के घर पहुंचकर सबसे पहले उन्हें श्रद्धांजलि दी। फिर परिवार से मुलाकात की। इस दौरान कांग्रेस के अन्य बड़े नेता भी मौजूद थे। पूर्व

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का 26 दिसंबर की रात निधन हो गया था। वे 92 साल के थे। वे लंबे समय से बीमार थे। घर पर बेहोश होने के बाद उन्हें रात 8:06 बजे दिल्ली एम्स लाया गया था। हॉस्पिटल बुलेटिन के मुताबिक, रात 9.51 बजे उन्होंने आखिरी सांस ली। इसके बाद 28 दिसंबर को निगमबोध घाट पर उनका राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस पार्लियामेंट्री पार्टी की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने संदेश जारी किया था।

भुवनेश्वर में 8 जनवरी से प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन

● राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 10 को समापन समारोह में होंगी शामिल

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में 8 से 10 जनवरी तक 18वां प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 9 जनवरी को इसका उद्घाटन करेंगे। सम्मेलन का समापन 10 जनवरी को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू करेंगी। इस दिन प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार समारोह भी होगा। सम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप में त्रिनिदाद और टोबैगो

की राष्ट्रपति क्रिस्टीन कार्ला कंगालू शामिल होंगी। सम्मेलन की शुरुआत 8 जनवरी को युवा प्रवासी भारतीय दिवस के साथ होगी। पहली बार आयोजन का जिम्मा संभाल रही ओडिशा सरकार ने 50 देशों से 3,500 प्रवासियों को बुलाने का लक्ष्य रखा है। तीन दिवसीय सम्मेलन में कुल उपस्थिति लगभग 7,500 लोगों की होगी। ओडिशा सरकार के गृह विभाग के अधिकारियों के अनुसार, पिछले कुछ दिनों में डेली रजिस्ट्रेशन की संख्या 150 से अधिक हो गई है। एक सप्ताह पहले यह संख्या 40 से 50 तक थी।

पत्नी की हत्या कर चंबल के बीहड़ में जलाया

हड्डियां और राख नदी में बहा दी ; सिर पर पत्थर मारने के बाद दबाया था गला

पति ससुर एम्बुलेंस ड्राइवर

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में एक युवक पत्नी की हत्या कर एम्बुलेंस से शव को मुरैना स्थित अपने गांव कैमारकलां ले गया। यहां किसी को बिना बताए शव जला दिया। हड्डियां समेटकर चंबल नदी में फेंक आया। आरोपी ने ग्वालियर लौटकर 1 जनवरी 2025 को थाटीपुर थाने में पत्नी की गुमशुदगी दर्ज कराई। इसके बाद पत्नी चंचल राजे (जाटव) के मायके वालों को लापता होने की सूचना दी।

मायके पक्ष ने चंचल के पति दीनू टेगौर पर संदेह जताया। पुलिस ने आरोपी पति के घर के आसपास पड़ताल की तो पूरे मामले का खुलासा हो गया। घटना 31 दिसंबर को न्यू ईयर सेलिब्रेशन के बाद न्यू सुरेश नगर की है। शव को जलाने और हड्डियां बहाने में महिला के पति के अलावा ससुर और एक एम्बुलेंस चालक को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

लाश ठिकाने लगाने के बाद खुद थाने पहुंचा- थाटीपुर न्यू सुरेश नगर सरकारी मल्टी निवासी दीनू टेगौर मूल रूप से मुरैना के कैमाराकलां गांव का रहने वाला है। एक साल पहले उसकी शादी पुरानी छावनी निवासी 26 वर्षीय चंचल राजे के साथ हुई थी। 1 जनवरी 2025 को दीनू थाटीपुर थाना पुलिस के पास पहुंचा और शिकायत की कि उसकी पत्नी चंचल बिना बताए कहीं चली गई है। उसको काफी तलाश किया, लेकिन कुछ पता नहीं चला है। पुलिस ने महिला की तलाश शुरू कर दी।

मामले की सूचना चंचल के मायकेवालों को भी दी गई थी। जिस पर चंचल का भाई नवीन राजे थाटीपुर थाने पहुंचा और बहन के साथ अनहोनी की आशंका जताई। नवीन के अनुसार दीनू उसे बहुत परेशान करता था। पुलिस ने जांच की तो दीनू की भूमिका और कहानी पूरी तरह संदिग्ध नजर आई। पुलिस ने दीनू को थाने बुलाकर मोबाइल लोकेशन और आसपास के लोगों के बयान के आधार पर पूछताछ की तो उसने पुलिस के सामने पूरी घटना कबूल कर ली।

छत्तीसगढ़-ओडिशा बॉर्डर पर मुठभेड़ में 3 नक्सली ढेर

गरियाबंद (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले के नक्सल प्रभावित सोरनामाल जंगल में सुरक्षाबलों ने 3 नक्सलियों को मार गिराया है। बताया जा रहा है कि डीआरजी

(डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड) और एसटीएफ (स्पेशल टास्क फोर्स) की टीम ने नक्सलियों को घेरा है। छत्तीसगढ़ और ओडिशा दोनों राज्यों के करीब 300 जवान मौके पर मौजूद हैं। ओडिशा के नवरंगपुर की ओर से भी जवानों ने घेराबंदी की थी, जिससे नक्सलियों को भागने का मौका नहीं मिला।

युवाओं का एकलव्य जैसा अंगूठा काट रही बीजेपी

● बेरहमी से कुचल रही आवाज, छात्र प्रदर्शन पर राहुल गांधी

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को भारतीय जनता पार्टी पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग की परीक्षा से जुड़े विवाद को लेकर आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ पार्टी देश के युवाओं का भविष्य मिटा रही है। राहुल ने यह दावा भी किया कि मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार ने छात्रों के भरोसे को तोड़ने के साथ ही लोकतांत्रिक प्रणाली का गला घोंटा है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, भाजपा भारत के युवाओं का बिल्कुल एकलव्य जैसा अंगूठा काट रही है, उनका भविष्य मिटा रही है। उन्होंने दावा किया कि सरकारी भर्ती में विफलता बड़ा अन्याय है। राहुल गांधी ने कहा,पहले तो भर्ती नहीं निकलती। भर्ती निकल जाए तो परीक्षा समय पर नहीं होती। परीक्षा हो तो पेपर लीक करवा दिए जाते हैं। जब युवा न्याय मांगते हैं तब उनकी आवाज को बेरहमी से कुचला जाता है। उन्होंने पोस्ट में लिखा कि हाल ही में उत्तर प्रदेश और बिहार की घटनाओं के बाद अब मध्यप्रदेश में एमपीपीएससी में हुई गड़बड़ी का विरोध कर रहे 2 छात्रों को जेल में डाल दिया गया है।

किसान आंदोलन पर सुप्रीम कोर्ट कमेटी की मीटिंग रद्द

चंडीगढ़ (एजेंसी)। किसानों से बातचीत के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित हाई पावर कमेटी की बैठक स्थगित कर दी गई है। किसान संगठनों द्वारा बैठक में भाग लेने से

इनकार करने के कारण बैठक स्थगित की गई है। यह बैठक सुबह 11 बजे होनी थी।

अब कमेटी ने संयुक्त किसान मोर्चा उगराहां को 4 जनवरी को बातचीत का न्योता भेजा है। बता दें कि संयुक्त किसान मोर्चा आज लुधियाना में एक अहम बैठक करेगा इधर, किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल का आमरण अनशन 39वें दिन में प्रवेश कर गया है।

उनकी हालत गंभीर बनी हुई है।

एसकेएम ने शामिल होने से किया इनकार,दूसरी यूनियन को पंचकूला बुलाया

डल्लेवाल ने आज सुबह एक वीडियो जारी कर लोगों से चार जनवरी को खनौरी पहुंचने की अपील की है। जगजीत सिंह डल्लेवाल ने आज सुबह लोगों से एक मिनट 10 सेकेंड का वीडियो शेयर चार जनवरी को खनौरी बॉर्डर पर पहुंचने की अपील की है।

संविदा कर्मचारियों का धरना तीसरे दिन भी जारी

पापा के संघर्ष में बच्चे भी शामिल, ठंड में तख्ती लेकर धरने पर बैठे

भोपाल (नप्र)। वेतनवृद्धि और संविदा नीति लागू करने की मांग को लेकर कुक्कुट विकास निगम के संविदा कर्मचारियों का धरना प्रदर्शन तीसरे दिन (शुक्रवार) को भी जारी रहा। काले कपड़े पहनकर, हाथों में स्लोगन की तख्ती लिए, अपने छोटे बच्चों और परिवारों के साथ वैशाली नगर स्थित कुक्कुट विकास निगम मुख्यालय के सामने बैठे प्रदर्शनकारियों ने विरोध दर्ज कराया। बच्चे भी अपने पापा के साथ दे रहे हैं। ऐसी ठंड में वे हाथ में स्लोगन की तख्ती लिए बैठे हैं।

इन कर्मचारियों ने बताया कि उनकी आर्थिक स्थिति बदतर हो चुकी है। बच्चों की पढ़ाई बाधित हो रही है और परिवारों को दैनिक जीवन चलाना मुश्किल हो गया है। निगम मंडल की चुप्पी और ठोस जवाब न मिलने से कर्मचारियों में आक्रोश है। मध्य प्रदेश संविदा कर्मचारी महासंघ के सदस्य प्रणय सक्सेना ने कहा कि हमारे छोटे-छोटे बच्चे इस सर्द मौसम में हमारे साथ बैठकर न्याय की लड़ाई लड़ रहे हैं। यह सिर्फ हमारी नहीं, बल्कि हमारे बच्चों और परिवारों के भविष्य की लड़ाई है। धरने को विभिन्न कर्मचारी संगठनों के नेताओ ने समर्थन देते हुए संबोधित किया।

प्रदर्शन का प्रभाव

- सेंट्रल सीमेन स्टेशन और अन्य इकाइयों में कामकाज पूरी तरह ठप। रोज साढ़े चार लाख का नुकसान।
- सभी जिलों को भोपाल से भेजे जाने वाले सीमन की सप्लाई प्रभावित।
- संस्थान में मौजूद पशुओं का इलाज नहीं हो पा रहा।
- केंद्रीय वीर्य संस्थान दतिया में 3500 सीमन के डोसेज बनाए जाते हैं।
- कम्यूटर से संबंधित कार्य भी प्रभावित हुआ।
- निगम मुख्यालय भोपाल में निर्माण प्रकोष्ठ संबंधी समस्त कार्य प्रभावित।
- निगम की योजनाओं से संबंधित कार्य भी प्रभावित,फाइलों का मूवमेंट पूर्ण रुप से बंद।
- उज्जैन का नाइट्रोजन प्लांट तकनीकी खराबी के कारण गुरुवार शाम से बंद। नाइट्रोजन का उत्पादन ठप।
- जबलपुर-सागर में नाइट्रोजन का वितरण प्रभावित हुआ है। जिससे सीमेन डोज खराब हो रहे।
- पशु आहार संयंत्र में 60 टन प्रोडक्शन प्रभावित।
- कर्मचारियों के बच्चों की पढ़ाई और परिवारों के दिनचर्या प्रभावित।

प्रयागराज महाकुंभ का आप घर बैठे ले सकेंगे नजारा

● मेला प्राधिकरण ने की विशेष तैयारी

सोशल मीडिया पर होगा लाइव कवरेज,सुरक्षा के भी रहेंगे खास इंतजाम

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज में लगने जा रहे महाकुंभ को लोगों तक पहुंचाने में सोशल मीडिया इस बार बड़ी भूमिका निभाने जा रहा है। इसके लिए मेला प्राधिकरण की तरफ से विशेष तैयारी की गई है। जहां लोग मेला क्षेत्र में प्रवेश के पहले ही सोशल मीडिया के जरिए सभी जानकारियां एकत्र कर सकेंगे। श्रद्धालुओं की सुरक्षा से लेकर रास्तों तक की अपडेट सोशल मीडिया के जरिए लोगों को उपलब्ध करायी जा रही है। इसके लिए मेला प्रशासन की तरफ से इंफ्लूएंसन को लगाया गया है। 100 से अधिक इंफ्लूएंसर है तैनात महाकुंभ की ब्रांडिंग के लिए इस बार मेला प्राधिकरण की तरफ से हर स्तर पर प्रयास किया जा रहा है। मेले की तैयारियों से लेकर उसकी सुंदरता को प्रदर्शित करने के लिए मेला प्रशासन की तरफ से सोशल मीडिया इंफ्लूएसर लगाए गए है। जो महाकुंभ को सोशल मीडिया के जरिए जन जन तक पहुंचाएंगे। पहली बार श्रद्धालुओं को महाकुम्भ के दौरान सोशल मीडिया के माध्यम से पल पल की अपडेट मिलेगी। श्रद्धालु अपनी बात सेकेंडों में बड़े पुलिस अफसरों से लेकर पूरे महकमे तक पहुंचा पाएंगे। महाकुम्भ पुलिस ने सुरक्षा के चार ऐसे डिजिटल दरवाजे बनाए हैं, जिनके माध्यम से यह सब कुछ पल भर में किया जा सकेगा। इसके लिए लोगों को सिर्फ क्यूआर कोड स्कैन करना होगा। इसके अलावा अखाड़ों में होने वाल आयोजन से लेकर शाही स्नान और अन्य जानकारियां भी आसानी से लोगों तक पहुंच सकेंगी। जिससे लोग घर बैठे ही मेल को लेकर सभी अपडेट जान सकेंगे। सुरक्षित महाकुम्भ की तैयारी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तरफ से इस बार महाकुम्भ को दिव्य और भव्य बनाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं जिससे देश दुनिया से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सभी जरूरी इंतजाम किए जा रहे हैं। विशेष तौर पर सुरक्षा को लेकर व्यापक इंतजाम किए जा रहे हैं। महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं की डिजिटल सुरक्षा का पूरा इंतजाम किया गया है। अधिकारियों की माने तो पहली बार यहां चार प्रकार के ऐसे क्यूआर कोड जारी किए गए हैं, जिन्हें स्कैन करते ही चार डिजिटल दरवाजे खुल जाएंगे।

राफेल संग भारत पहुंचा यूरोप का शक्तिशाली परमाणु युद्धपोत

40 साल बाद ऐक्शन में फ्रांसीसी नौसेना,भेजा अपना कैरियर

पेरिस/पणजी (एजेंसी)। यूरोप का सबसे शक्तिशाली युद्धपोत चार्ल्स डी गाले भारत पहुंचा है। परमाणु एयरक्राफ्ट कैरियर चार्ल्स डी गाले फ्रांसीसी नौसेना के कैरियर स्ट्राइक ग्रुप के साथ हिंद महासागर पहुंचा है। बताया जा रहा है कि करीब 40 साल बाद फ्रांस ने हिंद प्रशांत क्षेत्र में अपना कैरियर स्ट्राइक ग्रुप भेजा है।

यह फ्रांसीसी बेड़ा गोवा तट के पास भारतीय नौसेना के साथ वरुणा नौसैनिक अभ्यास में हिस्सा लेगा। इस नौसैनिक अभ्यास का मकसद इलाके में समुद्री सुरक्षा को मजबूत करना है। चार्ल्स डी गाले पर राफेल फाइटर जेट हमेशा तैनात रहते हैं और ये परमाणु हमला करने की ताकत रखते हैं। माना जा रहा है कि फ्रांस ने चीन को कड़ा संदेश देने के लिए अपने कैरियर स्ट्राइक ग्रुप को इस इलाके में भेजा है। चीन लगातार हिंद प्रशांत क्षेत्र में दादागिरी दिखा रहा है। फ्रांसीसी कैरियर स्ट्राइक ग्रुप फ्रांस की नौसेना के मिशन 25 के तहत आया है ताकि हिंद प्रशांत क्षेत्र में देश के हितों की रक्षा की जा सके। साथ ही इस इलाके में यूरोपीय अभियानों में योगदान दिया जा सके। फ्रांसीसी नौसेना ने कहा कि कैरियर स्ट्राइक ग्रुप क्षेत्रीय भागीदारों और सहयोगियों खासकर भारत के साथ संयुक्त ट्रेनिंग को अंजाम दे रहे हैं। इस अभ्यास के दौरान दोनों देशों के युद्धपोतों पर एक-दूसरे के सैनिकों के काम करने का अभ्यास किया जाएगा। इस दौरान खतरे से निपटने का भी अभ्यास किया जाएगा।

प्रदेश में वन्य-जीव पर्यटन अभियान की आज शुरुआत करेंगे : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को करेंगे चंबल अभयारण्य का भ्रमण

भोपाल.(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि वन्य जीव पर्यटन की दिशा में मध्यप्रदेश महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। शनिवार 4 जनवरी से वन्य-जीव पर्यटन को एक नया आयाम मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव चंबल अभयारण्य का भ्रमण कर चंबल नदी के घड़ियाल अभयारण्य की व्यवस्थाओं का अवलोकन कर पर्यटन सुविधाओं का जायजा लेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रकृति ने मध्यप्रदेश को कई वरदान दिए हैं। सघन वन, वृक्षों की विविधता के साथ ही वन्य-प्राणियों की भी विविधता मध्यप्रदेश में देखने को मिलती है। वनों और वन्य-प्राणियों से मध्यप्रदेश की एक अलग पहचान बनी है। मध्यप्रदेश बाघ, तेंदुआ और घड़ियाल जैसे प्राणियों की सर्वाधिक संख्या वाला प्रदेश है। चीता पुनर्स्थापन करने वाला मध्यप्रदेश एक मात्र प्रदेश है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश में ही नहीं पूरे विश्व में सर्वाधिक घड़ियाल चंबल नदी में पाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि विश्व में लगभग तीन हजार घड़ियाल हैं, तो इनमें से 85 प्रतिशत चंबल नदी में हैं। करीब चार दशक पहले घड़ियालों की गणना का कार्य शुरू हुआ, जिससे घड़ियालों के इतनी बड़ी संख्या में चंबल में होने की जानकारियां सामने आईं। जनवरी और फरवरी महीने में अनुकूल तापमान का अनुभव कर घड़ियाल पानी से बाहर निकलते हैं और उस वक्त घड़ियालों और मगरमच्छों की गिनती आसानी से हो जाती है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य को राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल वन्य-जीव अभयारण्य के नाम से भी जाना जाता है। पर्यटकों में यह चंबल बोट सफारी के नाम से प्रसिद्ध है। यह तीन राज्यों मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के संयुक्त प्रयासों से एक प्रमुख संरक्षण परियोजना है। मध्यप्रदेश में वर्ष 1978 में इसे वन्य-जीव अभयारण्य के रूप में मान्यता दी गई थी। चंबल घड़ियाल वन्य-जीव अभयारण्य का मुख्य उद्देश्य लुप्तप्राय घड़ियाल, लाल मुकुट वाले छत कछुए और लुप्तप्राय गांगेय डॉल्फिन को संरक्षित करना है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह अभयारण्य लगभग साढ़े पांच वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। पहाड़ियों और रेतीले समुद्र तटों से यह धरती भरी हुई है। यह वन्य-जीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत संरक्षित है और इसका मुख्यालय मुरैना में है।

घड़ियालों और गंगा डॉल्फिनों का निवास स्थान, पारिस्थितिकी संवेदनशील क्षेत्र घोषित किया गया है। घड़ियाल, लाल मुकुट वाले कछुए और डॉल्फ़िन यहाँ पाए जाते हैं। अन्य जानवर जो (दुर्लभ) श्रेणी में हैं, उनमें मगरमच्छ, चिकने-लेपित ऊदबिलाव, धारीदार लकड़बग्घा और भारतीय भेड़िये हैं, जो संरक्षण सूची की अनुसूची-1 में शामिल हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि चंबल नदी में कछुआ परिवार की 26 दुर्लभ प्रजातियों में से 08 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इनमें भारतीय संकीर्ण सिर एवं नरम खोल वाला कछुआ, तीन धारीदार छत वाला कछुआ और मुकुटधारी नदी वाला कछुआ शामिल हैं, जो यहां की पहचान है।

शीतकाल है घड़ियाल देखने का उपयुक्त समय

चंबल में घड़ियाल अभयारण्य देखने के लिए यात्रा का सर्वोत्तम समय अक्टूबर से जून तक रहता है। शीतकाल में घड़ियाल देखने और यह क्षेत्र घूमने का सबसे अच्छा समय माना गया है। राष्ट्रीय चंबल वन्य-जीव अभयारण्य में प्रकृति को देखने की बहुत सी गतिविधियाँ होती हैं। घड़ियाल, डॉल्फ़िन, अन्य सरीसृप, जल निकायों और सुंदर परिदृश्य की फोटोग्राफी नाव की सवारी से की जा सकती है। यहाँ की घाटियों और नदियों के किनारे पगडंडियों पर चलना प्रकृति को करीब से देखने का मौका देता है। चंबल नदी लगभग एक हजार किलोमीटर लंबी है। पर्यटक चंबल घड़ियाल सफारी अभयारण्य का आनंद उक्त क्षेत्र के निकटवर्ती नगरों में रहवास सुविधा का उपयोग ले सकते हैं।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल से लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके ने राजभवन में सौजन्य भेंट की।

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल को नववर्ष पर शुभकामनाएं दीं

भोपाल। नववर्ष के उपलक्ष में मंत्रालय सेवा अधिकारी कर्मचारी संघ के प्रतिनिधि मंडल ने अध्यक्ष श्री सुधीर नायक कार्यकारी अध्यक्ष श्री राजकुमार पटेल के नेतृत्व में माननीय उपमुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल से उनके चार इमली स्थित शासकीय आवास पर भेंट कर नववर्ष पर शुभकामनाएं प्रेषित की और कर्मचारी मुद्दों पर चर्चा की।

प्रतिनिधि मंडल में मंत्रालय सेवा अधिकारी कर्मचारी संघ के पदाधिकारी सर्व श्री राजेश कौल, संरक्षक आशीष सोनी, सलाहकार आलोक वर्मा, सचिव, सतीश शर्मा प्रमुख महामंत्री एल एस धुर्वे, दयानंद उपाध्याय,उपाध्यक्ष हरिशरण द्विवेदी, उपाध्यक्ष,दिलीप सोनी, साधना मिश्रा संतोष बड़ोदिया नरेश सोनी दीप्ति बच्चानी, ठाकुरदास प्रजापति,मतीन खान ,विष्णु नाथानी,हरीश बाथम श्याम बिहारी दुबे, विक्रम बाथम बादामी लाल, मंगल सोनवाने उपस्थित थे।

अद्वैत वेदान्त दर्शन के अध्ययन के लिए इस वर्ष 20 शिविर

18 से 40 वर्ष तक के युवा 10 आचार्यों के दिव्य सान्निध्य में कर सकेंगे अध्ययन

भोपाल (नप्र)। आचार्य शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन और शिक्षाओं से युवाओं को परिष्कृत और सुसंस्कृत बनाने के लिए आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास वर्ष-2025 में 20 अद्वैत जागरण युवा शिविर आयोजित करेगा। 10 आचार्यों की दिव्य सान्निध्य में देश-विदेश के 18 वर्ष से 40 वर्ष आयु वर्ग के प्रतिभाशाली युवा अद्वैत वेदान्त अध्ययन कर सकेंगे। शिविर में शामिल होने के लिए इच्छुक युवा पर जाकर पंजीयन करा सकते हैं।

वर्ष-2025 का प्रथम शिविर 17 से 26 जनवरी तक आयोजित होगा। इसमें चिन्मय गार्डन, कोयम्बटूर, तमिलनाडु की स्वामिनी विमलानंद सरस्वती मनीषा पंचकम के माध्यम से युवाओं को अद्वैत से जोड़ेंगी। इसके बाद 1 से 10 फरवरी एवं 1 अगस्त से 10 अगस्त तक आर्ष विद्या गुरुकुलम्, कोयम्बटूर, तमिलनाडु में स्वामी परमात्मानंद सरस्वती तत्वबोध पर, 8 से 17 फरवरी तक श्री श्री ओंकारेश्वर आश्रम, मध्यप्रदेश में स्वामी प्रबुद्धानंद सरस्वती तत्वबोध पर, 15 से 24 फरवरी एवं 22 जून से 1 जुलाई तक अद्वैत आश्रम, मायावती, उत्तराखंड में स्वामी शुद्धिदानंद विवेक चूड़ामणि पर, 01 से 10 अप्रैल तक चिन्मय तपोवन, सिद्धबाड़ी, हिमाचल प्रदेश में स्वामी मित्रानंद सरस्वती, साधना पंचकम् पर, 4 से 13 अप्रैल एवं 21 से 30 मई तक तपोवन कुटी, उत्तरकाशी, उत्तराखंड में स्वामी हरिब्रह्मेद्रानंद तीर्थ तत्वबोध पर, 14 से 23 जुलाई तक चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन, केरल में स्वामी स्वात्मानंद सरस्वती साधना पंचकम पर युवाओं को अद्वैत वेदान्त का अध्ययन कराएंगे।युवाओं को 12 से 21 अगस्त एवं 23 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चिन्मय गार्डन, कोयम्बटूर, तमिलनाडु की स्वामिनी विमलानंद सरस्वती मनीषा पंचकम पर 27 अगस्त से 5 सितंबर एवं 24 सितंबर से 3 अक्टूबर तक चिन्मय विभूति, पुणे, (महाराष्ट्र) में स्वामी अद्वैतानंद सरस्वती तत्वबोध पर, 4 से 13 अक्टूबर तक श्री श्री ओंकारेश्वर आश्रम, मध्यप्रदेश में स्वामिनी प्रव्राजिका दिव्यानंद प्राण तत्वबोध पर, 1 से 10 नवंबर तक आर्ष विद्या मंदिर, राजकोट, गुजरात के स्वामी परमात्मानंद सरस्वती तत्वबोध पर, 21 से 30 नवंबर तक चिन्मय तरंगिणी, चेन्नई, तमिलनाडु में स्वामी मित्रानंद सरस्वती भज गोविंदम् पर तथा इस वर्ष के अंतिम शिविर में 5 से 14 दिसंबर तक श्री श्री ओंकारेश्वर आश्रम में स्वामी प्रबुद्धानंद सरस्वती तत्वबोध पर युवाओं को व्याख्यान देंगे।

जल्द आ सकती है बीजेपी जिलाध्यक्षों की पहली लिस्ट

एमपी के 50 जिलों में बनी सहमति
दिल्ली से हरी झंडी मिलते ही ऐलान

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बीजेपी के जिलाध्यक्षों के नामों का पैनल तैयार हो गया है। करीब 50 जिलों में रायशुमारी

के बाद सहमति बन गई है। नामों के इस पैनल को अब भोपाल से ई-मेल के जरिए दिल्ली भेजा जाएगा। दिल्ली से हरी झंडी मिलने के बाद आज रात तक पहली सूची आने की संभावना है। इसमें 50 जिलों के अध्यक्ष घोषित किए जा सकते हैं। इससे पहले गुरुवार देर रात तक बीजेपी के जिला निर्वाचन अधिकारियों और पर्यवेक्षकों ने रायशुमारी में आए नामों की मेरिट लिस्ट के आधार पर पैनल तैयार किए। हर जिले के पैनल में एक महिला और एसटी-एससी नेता का नाम भी शामिल किया गया है।केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान मध्यप्रदेश में बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष और राष्ट्रीय परिषद सदस्यों का चुनाव कराएंगे। पार्टी ने उन्हें प्रदेश संगठन के लिए चुनाव अधिकारी नियुक्त किया है।

गुरुवार देर रात तक चली थी बैठक-प्रदेश भाजपा कार्यालय में गुरुवार देर रात करीब सवा दस बजे तक जिलेवार वन-टू-वन बैठक चली। इससे पहले सुबह 11 बजे से बीजेपी की प्रदेश संगठन चुनाव की पर्यवेक्षक सरोज पांडे, राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिवप्रकाश, प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और प्रदेश चुनाव अधिकारी विवेक शेजवलकर, सह चुनाव अधिकारी रजनीश अग्रवाल ने जिला निर्वाचन अधिकारियों और पर्यवेक्षकों के साथ रायशुमारी के टेबुलेशन शीट और पैनल पर चर्चा की।

भोपाल में 31वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का शुभारंभ

6 देशों के 700 से अधिक बाल वैज्ञानिक, सीएम यादव ने मॉडल देखे

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आज भोपाल में 31वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का शुभारंभ किया। जिसके बाद उन्होंने बाल वैज्ञानिक द्वारा बनाए मॉडल भी देखकर सराहना की।

यह 4 दिवसीय आयोजन 3 से 6 जनवरी तक चलेगा, जिसमें भारत के विभिन्न राज्यों से 700 से अधिक बाल वैज्ञानिक, शिक्षक और मेंटर्स भाग लेंगे।इसके अलावा, ग़ल्फ़ देशों जैसे बहरीन, यूएई, कुवैत, ओमान और सऊदी अरब से भी बाल वैज्ञानिक अपनी प्रस्तुतियां देंगे। राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का सीएम ने शुभारंभ किया। जिसके बाद उन्होंने बाल वैज्ञानिक द्वारा बनाए मॉडल भी देखकर सराहना की।

इस वर्ष का मुख्य विषय 'स्वास्थ्य और कल्याण के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को समझना' है। यह कार्यक्रम बच्चों में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने और उन्हें समाज की समस्याओं के समाधान में नवाचार का उपयोग करने के लिए प्रेरित करेगा। कार्यक्रम के दौरान चंद्रयान मिशन, रोबोटिक्स, हाईड्रोपोनिक्स, वॉटर रॉकेटरी, पर्यावरण पर आधारित प्रदर्शनी और लोक गीत जैसे कई आकर्षक आयोजन होंगे। प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. चेतन सोलंकी, डॉ. नंद कुमार और डॉ. चैतन्य पूरी बच्चों के साथ संवाद करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव वराह मिहिर खगोलीय वेधशाला के ऑटोमेशन का भी उद्घाटन करेंगे, जिससे लोग घर बैठे खगोलीय अध्ययन कर सकेंगे। यह पहल मध्यप्रदेश को खगोल विज्ञान के क्षेत्र में नई पहचान दिलाएगी। बाल विज्ञान कांग्रेस बच्चों में जिज्ञासा और खोज की भावना को बढ़ावा देती है और उन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सोचने के लिए प्रेरित करती है।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की शुरुआत 1993 में हुई थी और यह भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तहत संचालित एक मंच है।

सहकारिता मंत्री सारंग ने करोंद स्थित सीएम राइज स्कूल का निरीक्षण कर पूछा- 50 बच्चों के लिए रूम कितना बड़ा हो?

सीएम राइज स्कूल की बिल्डिंग में देरी पर नाराज हुए सारंग; बोले- जल्दी बनाओ

भोपाल (नप्र)। भोपाल के करोंद स्थित सरदार पटेल सीएम राइज स्कूल की निर्माणाधीन बिल्डिंग को देखने के लिए शुक्रवार को मंत्री विश्वास सारंग अचानक पहुंच गए। उन्होंने अफसरों से पूछा कि 50 बच्चों के लिए रूम कितना बड़ा होना चाहिए? इस सवाल का जवाब अफसर नहीं दे सके। इस पर मंत्री सारंग ने नाराजगी जताई और कहा कि बिल्डिंग जल्दी बनाओं।

मंत्री सारंग ने बताया, करोंद में सीएम राइज स्कूल को मंजूरी मिली है। इसकी बिल्डिंग का निरीक्षण किया। निर्माण कार्य काफी धीमा है। इससे लग रहा है कि बिल्डिंग पूरी तरह से बनने में अभी 1 साल और लग जाएगा। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि निर्माण एजेंसी और जिम्मेदारों की लापरवाही सहन नहीं की जाएगी। इस पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

मंत्री के सवालों के जवाब नहीं दे सके अधिकारी- निरीक्षण के दौरान मंत्री सारंग ने स्कूल के डिजाइन और क्लास रूम के स्पेस को लेकर अधिकारियों से जानकारी मांगी, लेकिन अधिकारी संतोषजनक जवाब नहीं दे पाए। इस पर मंत्री सारंग ने नाराजगी जताते हुए कहा कि बच्चों की संख्या के अनुसार पर्याप्त स्थान सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने स्कूल के मुख्य भवन में बने कॉरिडोर का भी निरीक्षण किया। कॉरिडोर की चौड़ाई बच्चों की संख्या के लिहाज से कम होने पर निर्देश दिया कि कॉरिडोर के पास बनी असेंबली एरिया को बंद करने के बजाय खुला रखा जाए। ताकि विद्यार्थियों को पर्याप्त स्थान मिल सके।

792 वन ग्रामों का राजस्व ग्रामों में किया परिवर्तन : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

चलाया गया 6 माह का विशेष अभियान

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में 6 माह का विशेष अभियान चलाकर 792 वन ग्रामों को राजस्व ग्राम में परिवर्तित करने की अधिसूचना संबंधित कलेक्टर्स द्वारा जारी कर दी गई है। इसमें बैतूल जिले के 91, डिंडौरी के 86, मंडला के 75, खरगोन के 65, बड़वानी के 64, खंडवा के 51, सीहोर के 49, छिंदवाड़ा के 48, बालाघाट के 46, हरदा के 42, बुरहानपुर के 37, सिवनी के 28, नर्मदापुरम के 24, भोपाल के 14, धार के 13, देवास के 12, सिंगरौली के 11, नरसिंहपुर के 10, रायसेन के 7, टीकमगढ़ एवं जबलपुर के 5-5, सागर के 4, विदिशा, राजगढ़, इंदौर, कटनी और गुना के 1-1 गांव शामिल हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में कुल 827 वन ग्राम बचे थे। इनमें से 792 को राजस्व ग्राम में परिवर्तित किया जा चुका है। शेष 35 वन ग्रामों के वीरान/विस्थापित होने अथवा डूब क्षेत्र में होने से परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं रही। इस प्रकार विस्थापित होने वाले गांव को छोड़कर प्रदेश के सभी वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित कर दिया गया है। इन 792 ग्रामों के राजस्व नक्शा बनाने का कार्य राजस्व विभाग द्वारा शुरू कर दिया है। भू-अभिलेख और नक्शा पूरे हो जाने से अब ग्रामवासियों को बड़ी सहूलियत होगी।

अब यह सुविधाएं मिल सकेंगी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वन ग्राम के राजस्व ग्राम में परिवर्तित हो जाने से ग्रामवासियों को अनेक सुविधाएं और विकास की सौगातें मिल सकेंगी। बँटवारा और नामांतरण होने के साथ फसलों की गिरदावरी भी हो सकेगी। प्राकृतिक आपदा पर फसल बीमा योजना का लाभ मिलेगा, आँगनवाड़ी एवं विद्यालय भवन स्वीकृत हो सकेंगे और स्वास्थ्य की बेहतर सुविधाएँ मिलेंगी। बिजली, पानी, सड़क और तालाबों आदि सुविधाओं का निर्माण भी हो सकेगा।

संभावना ट्रस्ट को मिलेगा विदेशी फंड, एफसीआरए पाबंदी हटी

6 जनवरी से खुलेगा क्लिनिक ; भोपाल के 37 हजार गैस पीड़ितों को इलाज मिलेगा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के संभावना ट्रस्ट को अब विदेशी फंड मिल सकेगा। ट्रस्ट की एफसीआरए (फॉरेन कॉन्ट्रीब्यूशन रेगुलेशन एक्ट) के रिन्युअल की फाइल अप्रूड हो गई है। जैसे ही ये जानकारी ट्रस्ट से जुड़े लोग और गैस पीड़ितों को लगी, वे झूम उठे। क्लिनिक परिसर में ही उन्होंने एक-दूसरे को मिठाई भी खिलाई। ट्रस्ट से भोपाल के करीब 37 हजार गैस पीड़ित रजिस्टर्ड हैं। ट्रस्ट ने फंड की कमी का हवाला देते हुए 1 जनवरी से क्लिनिक बंद कर दिया था और अस्पताल परिसर में ही धरना प्रदर्शन किया जा रहा था। पिछले 2 दिन से क्लिनिक बंद रहा।

गृह मंत्रालय के पोर्टल से मिली जानकारी- यूनियन कार्बाइड जहर पीड़ितों के इलाज अधिकार मोर्चा के नेताओं ने बताया कि शुक्रवार सुबह उन्हें गृह मंत्रालय के पोर्टल पर एक संदेश मिला कि संभावना ट्रस्ट को एफसीआरए पुनः पंजीकरण प्रदान किया गया है।

क्लिनिक में इलाज लेने वाले सैकड़ों गैस एवं प्रदूषित भूजल पीड़ित ढोल की थाप पर जश्न के नाच में कर्मचारियों के साथ शामिल हुए। संभावना ट्रस्ट क्लिनिक को अब विदेशी दानदाता भी दान दे सकेंगे। इसके चलते 6 जनवरी से क्लिनिक फिर से खोल दिया जाएगा।

5 साल पहले रद्द कर दिया था- क्लिनिक बंद करने के साथ ही ट्रस्ट से जुड़े लोग धरने पर बैठ गए थे। बाफना कॉलोनी स्थित क्लिनिक के बाहर धरना हो रहा था। उनका कहना है कि फाइल फरवरी-23 से गृह मंत्रालय के एफसीआरए विंग के विदेशी प्रभाग के पास पेंडिंग है। ट्रस्ट का 2 मई 2001 को रजिस्ट्रेशन हुआ था, लेकिन इसे अक्टूबर 2019 में गलत तरीके से रद्द कर दिया गया था। पुनर्विचार के लिए कई बार लेटर लिखे गए, लेकिन उन्हें नजर अंदाज कर दिया गया। इस कारण विदेशी फंड नहीं मिल पा रहा है और ट्रस्ट की आर्थिक स्थिति गड़बड़ा गई।

37 हजार गैस पीड़ित रजिस्टर्ड- ट्रस्ट के क्लिनिक में कुल 51 कर्मचारी कार्यरत हैं। वर्तमान में 80 से 100 मरीज रोज क्लिनिक पर आते हैं। पैसों की कमी की वजह से डॉक्टर और कर्मचारियों की संख्या में कटौती की गई है। क्लिनिक में कुल 37 हजार गैस पीड़ित रजिस्टर्ड हैं।

क्लिनिक बंद होने से यह नुकसान- संभावना ट्रस्ट के सलाहकार डॉ. सतीनाथ षड़ंगी ने बताया, संभावना क्लिनिक आयुर्वेद और योग विधियों के साथ आधुनिक तरीके से इलाज करता है। यह विशेष इलाज मिथाइल आइसो-साइनाइट और यूनियन कार्बाइड के अन्य जहर पर प्रभावी पाया गया है। क्लिनिक बंद होने से रोगियों की सेहत पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा था। अब 6 जनवरी से फिर से खोल दिया जाएगा।

समय पर पूर्ण करें चिकित्सकीय पदों पर भर्ती प्रकिया : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने मंत्रालय में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में ईएसबी एवं पीएससी के अंतर्गत की जा रही भर्ती प्रक्रिया की समीक्षा की

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय भोपाल में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में ईएसबी एवं पीएससी के अंतर्गत प्रक्रियाधीन विभिन्न चिकित्सकीय एवं सहायक चिकित्सकीय पदों में भर्ती प्रक्रिया की समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने निर्देश दिए कि सभी भर्ती प्रक्रियाएं निर्धारित समय सीमा में पूरी की जाएं। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं को सशक्त बनाने के लिए मैन-पॉवर की समय पर नियुक्ति अत्यंत आवश्यक है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मेडिकल कॉलेजों में पे-प्रोटेक्शन के विषय पर आवश्यक प्रस्ताव तैयार कर, सभी औपचारिकताओं को पूर्ण करते हुए इसे शीघ्र कैबिनेट अनुमोदन के लिए प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने सीधी भर्ती एवं बैकलॉग पदों पर अब तक की गई कार्रवाई की पदवार समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देशित किया कि भर्ती प्रक्रिया में किसी भी स्तर पर अनावश्यक देरी न हो। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि सभी कैबिनेट स्वीकृत समस्त पदों पर भर्ती तय समय सीमा में पूरी की जाये। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की समस्या आने पर उसे तत्काल संज्ञान में लाया जाए। सभी औपचारिकताएं समयबद्ध ढंग से पूरी हों।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग में 33 हज़ार से अधिक पदों पर भर्ती की जा रही है। आईपीएचएस मानक अनुसार 18 हज़ार 653 पद पर, 454 उन्नयित स्वास्थ्य संस्थानों में 7 हज़ार 977 पद पर, कैलाशनाथ काटजू हॉस्पिटल में 195 पदों पर, 18 शासकीय नर्सिंग महाविद्यालयों के लिये 414 पद सहित 273 अन्य स्वीकृत स्वास्थ्य संस्थानों में 5 हज़ार 779 चिकित्सकीय एवं सहायक चिकित्सकीय पदों पर नियुक्ति प्रक्रियाधीन है। बैठक में आयुक्त स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री तरुण राठी सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

संपादकीय

विरोध के बीच जायज सवाल

भोपाल में कहर ढाने वाली यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री का 337 मीट्रिक टन जहरीला कचरा आखिर औद्योगिक क्षेत्र पीथमपुर में नष्ट करने के लिए व्यापक सुरक्षा के बीच पहुंचा दिया गया है, लेकिन वहां भी इसका स्थानीय स्तर पर विरोध हो रहा है। आखिर कोई भी जहरीले कचरे को अपने यहां क्यों आने देगा, खासकर तब कि जब सबको पता है कि इसी कारखाने से निकली जहरीली गैस ने भोपाल में 10 हजार से ज्यादा लोगों को मौत की नींद सुला दिया था। और लगभग 1 लाख लोग इसके दुष्परिणामों को आज तक भुगत रहे हैं। हालांकि मुख्यमंत्री मोहन यादव ने अपील की है कि यह गंभीर और जन सुरक्षा से जुड़ा मामला है। इस पर राजनीति करना उचित नहीं है। जो लोग और संगठन जहरीले कचरे के पीथमपुर में जलाने का विरोध कर रहे हैं, उन्हें 'मैनेज' करने का काम वरिष्ठ मंत्री कैलाश विजयवर्गीय को सौंपा गया है। जबकि विपक्षी कांग्रेस ने इसे मुद्दा बना दिया है। वैसे स्थानीय लोगों का भय निराधार नहीं है कि जिस विषाक्त कचरे को किसी न किसी कारण से आज तक नष्ट नहीं किया गया, उसे पीथमपुर लाने का क्या औचित्य है? क्या इसे कहीं और नहीं निपटाया जा सकता था? यह सवाल तो हमेशा पूछे जाएंगे, लेकिन सरकार ने जो भी कार्रवाई की है, वह भी हाई कोर्ट के निर्देश पर की है। क्योंकि यूका के जहरीले कचरे को नष्ट नहीं करना भी वहां की जमीन को विषाक्त बना रहा है। जहरीले कचरे का निपटान कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक संस्थाओं की निगरानी में हो रहा है। इस संदर्भ में मुख्यमंत्री का यह बयान महत्वपूर्ण है कि इस विषाक्त कचरे में 60 प्रतिशत स्थानीय मिट्टी, 40 प्रतिशत रासायनिक अपशिष्ट हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, इस कचरे का विषैला प्रभाव 25 वर्षों में खत्म हो जाता है। सीएम ने दावा किया कि इस कचरे के निपटान के पीथमपुर में हुए तीन ट्रायल सफल रहे, जिनमें पर्यावरण या स्थानीय क्षेत्र पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पाया गया। पीथमपुर में इस कचरे को जलाया जाएगा तथा उसकी राख कैप्सूल में दफन कर दी जाएगी। इसके लिए निपटान स्थल रामकी इनवायरो परिसर में विशेष इंतजाम किए गए हैं। कचरे को 1200 डिग्री सेल्सियस तापमान पर जलाया जाएगा। दरअसल लोगों के विरोध के कारण कचरा निपटान की लागत लगातार बढ़ती गई है। इस बार की प्रक्रिया में 126 करोड़ खर्च होने का अनुमान है। इस मुद्दे पर राजनीति को अलग रखें तो असली सवाल इस कचरे से जुड़े पर्यावरणीय दुष्प्रभावों का है। लोगों की यह चिंता जायज है कि इस कचरे से भविष्य में उनके जीवन पर कोई बुरा असर तो नहीं होगा। इस बारे में जो तर्क दिए जा रहे हैं, उनमें पहला तो इस कचरे की वजह से जमीन का भी जहरीला हो जाना है। खुद भोपाल में जहां यह गैस कांड हुआ था, वहां की जमीन जहरीली गैस के कारण अभी भी प्रभावित है। उसके ट्रीटमेंट की भी बात हो रही है। नई जगह कचरे का दुष्प्रभाव नहीं होगा, इसकी गारंटी देने की स्थिति में कोई नहीं है। दरअसल यह बात अकेले जहरीली गैस पर ही लागू नहीं होती। दूसरी प्रौद्योगिकियों और रसायनों के दुष्प्रभावों से बचना बेहद मुश्किल है। तमाम सावधानियों और सुरक्षा के दावों के बावजूद मानव सभ्यता को इसके बुरे असर से बचाना बेहद कठिन ही रहा है। भोपाल गैस त्रासदी तो दुनिया की अब तक की सबसे बड़ी औद्योगिक त्रासदी थी, जिसने औद्योगिक विकास के काले चेहरे को विश्व के सामने उजागर कर दिया था। बावजूद इसके जहरीले कचरे के निपटान का राजनीतिक विरोध इसलिए बेमानी है क्योंकि आप इस खतरे को कब तक टालते रहेंगे। यह काम पहले ही हो गया होता तो आज यह स्थिति ही न बनती।

नजरिया

अवधेश कुमार

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भागवत के वक्तव्य का इतना विरोध क्यों?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत द्वारा वर्तमान मंदिर- मस्जिद उभरते विवादों पर दिए वक्तव्य को लेकर अनेक धर्माचार्यों और हिंदू संगठनों के नेताओं की विरोधी प्रतिक्रियायें लगातार आ रही हैं। इस संदर्भ में सबसे कड़ा बयान जगतगुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी का आया। उन्होंने कहा कि मैं भागवत के बयान से पूरी तरह असहमत हूं। मैं यह स्पष्ट कर दूं कि भागवत हमारे अनुशासक नहीं है, बल्कि हम हैं। बाद में उन्होंने एक टेलीविजन पर बात करते हुए ऐसा कुछ बोला जो उनके अंदर व्याप्त नाराजगी को साफ दर्शा रहा था। वैसे रामभद्राचार्य जी ने कहा कि संभल में अभी जो कुछ हो रहा है वह बहुत बुरा है। हालांकि सकारात्मक पहलू यह है कि चीज हिंदुओं के पक्ष में सामने आ रही हैं। हम न्यायालय में मतदान और जनता के समर्थन से इसे सुरक्षित करेंगे। वैसे अनेक संगठनों, बुद्धिजीवियों, नेताओं आदि ने डॉ. भागवत के बयान का समर्थन भी किया है। विडंबना यह है कि पहले जब सरसंघचालक ने ऐसे वक्तव्य दिए तब उसे झूठ, पाखंड और आंखों में धूल झोंकने वाला तक कहा गया। इसलिए विरोधियों की प्रतिक्रियाएं इन संदर्भों में न नैतिक है, न विश्वसनीय और न इनका कोई अर्थ है। हमें पूरे विषय को सही संदर्भों में देखना और निष्कर्ष निकालना होगा।

पिछले वर्षों में यह पहली बार नहीं है जब भागवत के वक्तव्य पर विरोधी तीखी प्रतिक्रियाएं हिंदू संगठनों, नेताओं और कुछ धर्माचार्यों की ओर से आया है। 2 जून, 2022 को नागपुर में जब उन्होंने कहा था कि अयोध्या, काशी और मथुरा की मान्यता रही है लेकिन हर मस्जिद में मंदिर क्यों तलाशें तब भी इसी तरह की प्रतिक्रियाएं थी और उसके पूर्व धर्म संसदों में दिए गए आक्रामक वक्तव्यों के संदर्भ में भी उनके विचारों का कुछ पक्षों ने विरोध किया था। ऐसा नहीं है कि संघ प्रमुख या संघ के शीर्ष नेतृत्व को इसका आभास पहले से नहीं होगा। बावजूद उन्होंने ऐसा वक्तव्य दिया और पहले भी देते रहे हैं तो निश्चित रूप से इसके पीछे गहरी सोच, अतीत और वर्तमान का विश्लेषण तथा भविष्य की दृष्टि होगी। हम संघ के विचारों या कुछ कार्यों से सहमत असहमत हो सकते हैं लेकिन निष्पक्ष होकर विश्लेषण और विचार करने वाले मानते हैं कि शीर्ष स्तर से दिया गया हर वक्तव्य और भाषण काफी सोच -समझकर ही सामने आता है। वैसे भी सरसंघचालक का वक्तव्य संगठन परिवार के लिए अंतिम शब्द माना जाता है। स्वाभाविक ही जब ऐसा बोल रहे थे तो देश में बने वातावरण और आम हिंदू समाज की उस पर हो रही प्रतिक्रियाएं सब उनके सामने थे और हैं। तो फिर ऐसा उन्होंने क्यों कहा होगा?

पहले उनके भाषण की उन पंक्तियों को देखें। 19 दिसंबर को पुणे के सहजीवन व्याख्यानमाला में ' इंडिया द विश्व गुरु' विषय पर उनका भाषण था और उन्होंने मराठी में बोला। बोलते हुए डॉक्टर भागवत ने कहा' हम लंबे समय से सद्भावना से रह रहे हैं। अगर देश में सौहार्द्र चाहिए तो इसकी मिसाल हमारे देश में होनी चाहिए, हमारे देश में आस्था का सम्मान होना चाहिए। हिंदुओं का मानना है कि राम मंदिर बनना चाहिए, क्योंकि यह आस्था का स्थान है। लेकिन ऐसा करने से आप हिंदुओं के नेता बन जाएंगे ऐसा नहीं है या किसी हिंसक अतीत के फलस्वरुप अत्यधिक नफरत, द्वेष,शत्रुता, संशय से हर दिन एक नया मामला उठाना यह कैसे काम कर सकता है।' स्वाभाविक है कि संभल से लेकर बदायूं ,दिल्ली का जामा मस्जिद, कानपुर, वाराणसी आदि में नए मंदिरों का मिलना, पहले से चल रहे वाराणसी के ज्ञानवापी और मथुरा श्रीकृष्ण जन्मभूमि न्यायिक विवादों के बीच बने हुए वातावरण में सहसा इन पंक्तियों को पचा पाना आसान नहीं हो सकता। विचार करने वाली बात यह है कि क्या संघ जैसा संगठन, जिसने अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण के लिए अपनी पूरी

शक्ति लगाई तथा मथुरा और काशी को लेकर भी उसके मत उन दिनों से स्पष्ट रहे हैं जब दूसरे संगठनों का प्रभाव नहीं था, या वे थे नहीं तो वह ऐसा कैसे बोल सकते हैं? वह भी उन स्थितियों में जब संभल से लेकर बदायूं वाराणसी दिल्ली भोजशाला आदि सभी जगह ऐतिहासिक रूप से घटनाएं और वर्तमान स्थिति हिंदुओं के पक्ष में जातीं है। मुस्लिम काल में इन मंदिरों को ध्वस्त किया गया और उनमें निहित प्रतिमाओं को अपमानित करने के लिए अनेक उपक्रम हुए स्वतंत्रता के बाद भी अपने ही मूल शहर से हिंदुओं को दूसरी जगह पलायन करना पड़ा उनके मंदिरों में पूजा पाठ करना, लोगों का जाना कठिन हुआ, बंद हुए और कई जगहों पर बेदर्दी से स्थलों को कब्जा करने के उपक्रम भी हुए। स्थानीय स्तरों पर इनमें से ज्यादातर स्थानों को प्राप्त करने की भावनायें या उन मुद्दों को उठाने और कहीं-कहीं संघर्ष करने का भी लंबा अतीत है। इसमें अगर व्यक्तिगत रूप से किसी हिंदू समूह या पूरे समाज को लगता है कि हमें वह स्थल वापस मिलने चाहिएं और जहां प्रतिमाओं का अपमान हुआ उनका निराकरण भी हो और इसके लिए वे सामने आते हैं, न्यायालय में जाते हैं तो यह स्वाभाविक है। भागवत जिस विषय पर बोल रहे थे वह भारत के विश्व गुरु बनने पर था और उनका पूरा भाषण 1 घंटे से ज्यादा का है। इसमें वह प्राचीन भारत से लेकर मुस्लिम काल, अंग्रेजों की गुलामी आदि के प्रभाव, वर्तमान में भारत किस तरह विश्व दृष्टि से कम कर रहा है आदि सभी बातें शामिल हैं जिनकी लोग अपेक्षा रखते हैं। फिर भविष्य की दृष्टि है और उसी में लगभग अंत में केवल एक कुछ पंक्तियां हैं। किसी देश को पूरा संसार अपना आदर्श तभी मानेगा और उसका अनुसरण भी करेगा जब वह देश अपने अंदर विवादों को सही तरीके से सुलझाने, सभी पंथो, मजहबों के बीच के तनावों को तरीके से समाप्त करने और सहजीवन के साथ रहते हुए आदर्श देश की मिसाल रखेगा। यानी उठाए जा रहे मुद्दों के अन्य पहलुओं पर गहराई से नहीं विचार होगा तो समस्यायें सुलझने के बजाय उलझेंगी और फिर इनका समाधान भी संभव नहीं होगा। कोई भी विवेकशील व्यक्ति कह नहीं सकता कि जो अतीत में अन्याय, अत्याचार, ध्वंस और कब्जे हुए वो वैसे ही रहे और लोगों की भावनाएं दमित हों। इनसे भविष्य में हिंसा व तनाव बढ़ाने की संभावनाएं ज्यादा होती हैं।

समस्या यह है कि संपूर्ण देश में ऐसे हजारों स्थान है। कल्पना करिए धीरे-धीरे पूरे देश में ऐसे विषय उठ जाएं और स्थिति संभल जैसी पैदा हों तो क्या होगा? क्या देश की इन विवादों के अंतिम समाधान की अभी तक तैयारी है? क्या हिंदू समाज इनके विरुद्ध होने वाली अनेक तरह की विपरीत प्रतिक्रियाओं का सफलतापूर्वक सामना करने की अवस्था में पहुंच गया है? क्या जो लोग इन विषयों को न्यायालय में ले जा रहे हैं उनकी ऐसी क्षमता है कि वो इनका सामना भी कर सकें? क्या उन सब की विश्वसनीयता भी है? क्या धर्माचार्य और अन्य हिंदू संगठनों ने उन स्थितियों के लिए अपनी तैयारी कर रखी है? अभी तक ज्यादातर धर्माचार्ययों ने संगठित होकर किसी ऐसे विषय के समाधान की न पहल की न वे लोगों के बीच गए। संभल में ही समस्या पैदा होने पर कितने समाधान या संघर्ष के लिए आगे आए इन पर अवश्य दृष्टि रखिए। सारे प्रश्नों का उत्तर भारत के व्यापक राष्ट्रीय वैश्विक लक्ष्यों का ध्यान रखते हुए शांतिपूर्वक तलाश से जाने की आवश्यकता है। सच यह है कि लगभग 1000 वर्षों की हिंदू मुस्लिम विवादों के समाधान पर देश के राजनीतिक, धार्मिक और बौद्धिक नेतृत्व ने कभी लंबा विचार ही नहीं किया और जब विचार नहीं होगा तो फिर रास्ता निकालेगा कौन? इसके विपरीत राजनीतिक दलों ने वोट के लिए अपने बयानों और नीतियों से अतीत या वर्तमान के अन्यायों का ही समर्थन किया और जो इन विषयों को उठा रहे हैं उन्हें आज भी उन्हें ही निंदा आलोचना और विरोध का सामना करना पड़ता है। इस सच को स्वीकार करना होगा कि ऐसी नीतियों और आचरणों से सनातनी समाज के अंदर व्यापक असंतोष और क्षोभ पैदा हुआ जिसकी परिणति इन छिटपुट विवादों के रूप में सामने आ रहीं हैं। दूसरी ओर जब इन विवादों से समस्याएं बढ़तीं हैं या प्रतिक्रियाएं विकराल रूप में सामने आतीं हैं तो न कोई संगठन दिखता है और न ही हमारे धर्माचार्य। संभल में सर्वे के सामान्य न्यायिक प्रक्रिया के विरुद्ध जितनी सुनियोजित तरीके से हिंसा हुई और उसकी आलोचना की जगह जिस दिशा में पूरे मुद्दे को व्याप्त इकोसिस्टम ले गया उनका सामना कौन करेगा? विरोधी इन सारे विवादों के लिए किस संगठन को जिम्मेदार ठहराते हैं? संघ और भाजपा। संघ की प्रकृति कभी ऐसी नहीं दिखी कि वह आरोपों का खंडन करने या विवादों पर स्पष्टीकरण देने आए। जिस संगठन को दीर्घकालिक दृष्टि से काम करना है वह त्वरित और तात्कालिकता का समर्थन नहीं कर सकता। जिस तरह संभल से कानपुर और अन्य शहरों में स्वतंत्रता के बाद भी सक्रिय मंदिरों पर कब्जे हुए, बंद किए गए, पवित्र कुएं तक पाटे गए और ऐसे स्थान काफी संख्या में सामने आ रहे हैं,उनकी आवाज उठाने और प्रशासन की मदद से उनके समाधान की,कोशिशें हो रहीं हैं, सर्तकतापूर्वक होनी चाहिए। संघ प्रमुख ने उन पर बात नहीं की है। संघ का रुख यही रहा है कि हम हिंदू समाज के संगठन है लेकिन सभी हिंदू हमारे साथ है ऐसा नहीं है। गहराई से देखें तो डॉ. भागवत का वक्तव्य भविष्य दृष्टि से सभी के लिए सुझाव और सलाह की तरह है और इसी दृष्टि से देखा जाना चाहिए। संघ या कोई संगठन धर्माचार्यों का अनुशासक या उनका मार्गदर्शक न हो सकता है और न उनके अंदर ऐसा भाव होगा। लेकिन सभी को समस्याओं के स्थायी समाधान,भारत के वर्तमान और भविष्य की दूरगामी दृष्टि से विचार कर आगे बढ़ना चाहिए।

राजनीति

रमेश सर्राफ धमोरा

लेखक पत्रकार हैं।

अपनों के निशाने पर कांग्रेस पार्टी

कांग्रेस पार्टी इन दिनों अपने ही साथी दलों के निशाने पर है। भाजपा के खिलाफ विपक्षी दलों के संयुक्त इंडिया गठबंधन में शामिल विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं द्वारा कांग्रेस पार्टी से इंडिया गठबंधन का नेतृत्व वापस लेने की मांग की जा रही है। इंडिया गठबंधन में शामिल बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो ममता बनर्जी खुलेआम कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व पर सवाल उठा रही है। उनकी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने प्रेस कांफ्रेंस करके कांग्रेस पार्टी को इंडिया गठबंधन के नेता पद से हटाने की मांग की हैं। ममता बनर्जी की मांग के समर्थन में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री व राष्ट्रीय जनता दल के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने भी अपनी सहमति जताई है। इससे इंडिया गठबंधन की स्थिति लगातार कमजोर हो रही है।

जून 2023 में 26 विपक्षी दलों के साथ बना इंडिया गठबंधन अब टूट के कगार पर खड़ा है। लोकसभा चुनाव में मिली हार और उसके बाद हरियाणा व महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में हुई पराजय ने इस गठबंधन को कमजोर कर दिया है। इसी के चलते कांग्रेस के सहयोगी दल ही उसकी नेतृत्व क्षमता पर सवाल उठाकर अलग राह पकड़ने के संकेत दे रहे हैं। हाल ही में दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर आम आदमी पार्टी ने तो कांग्रेस को इंडिया गठबंधन से बाहर निकलवाने तक की धमकी दे दी है। कांग्रेस द्वारा दिल्ली विधानसभा चुनाव अकेले लड़ने की घोषणा के बाद से ही आम आदमी पार्टी कांग्रेस से खासी नाराज नजर आ रही है। पार्टी नेताओं का कहना है कि कांग्रेस जिस तरह से चुनाव लड़ रही है उससे भाजपा को लाभ मिल रहा है। कांग्रेस नेता अजय माकन व संदीप दीक्षित के बयान विपक्ष को कमजोर करने के लिए भाजपा के कहने पर दिए जा रहे हैं। समाजवादी पार्टी, शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे), राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद चंद पवार), नेशनल कांफ्रेंस तो खुलकर कांग्रेस की मुखालफत करने लगी है।

हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस अपनी जीत तय मानकर आम आदमी पार्टी से गठबंधन करने से इनकार कर दिया था। जिसके चलते आम आदमी पार्टी ने कई सीटों पर अकेले ही चुनाव लड़कर 1.8 प्रतिशत वोट प्राप्त किए थे। जबकि हरियाणा में कांग्रेस को 39.34 प्रतिशत वोट व भाजपा को 39.94 प्रतिशत वोट मिले थे। यदि हरियाणा में कांग्रेस आम आदमी पार्टी से समझौता करके चुनाव लड़ती तो निश्चय ही सरकार बन सकती थी। मगर कांग्रेस ने अवसर गवां दिया और वहां भाजपा ने आसानी से तीसरी बार पहले से भी अधिक बहुमत से सरकार बना ली। उत्तर प्रदेश विधानसभा के उपचुनाव में तो समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस के लिए एक भी सीट नहीं छोड़ी थी। जबकि लोकसभा चुनाव कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने मिलकर ही लड़ा था।

महाराष्ट्र में कांग्रेस नीत महा विकास अघाड़ी की करारी हार होने के बाद शिवसेना (यूबीटी) ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधते हुए कहा था कि कांग्रेस ने हरियाणा में आप और समाजवादी पार्टी को सीट ना देकर गलती की थी। पार्टी के मुखपत्र सामना में भी लिखा गया कि कांग्रेस नेताओं के अति आत्मविश्वास और घमंड ने हरियाणा में हार के लिए भूमिका निभाई। पार्टी नेता संजय राउत ने तो यहां तक कह दिया कि कांग्रेस को लगने लगा था कि वह अकेले ही जीत सकती है। इसलिए किसी को भी सत्ता में भागीदार बनाना उचित नहीं समझा था।

पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 99 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। कांग्रेस कुल 329 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। जिसमें से 145 सीटों पर बिना किसी गठबंधन की अकेले चुनाव लड़ी थी। जिसमें कांग्रेस 37 सीटों पर चुनाव जीती थी। कांग्रेस का बिना किसी दल से गठबंधन में जीत का रेशियो 25.52 प्रतिशत रहा था। जबकि कांग्रेस 184 सीटों पर साथी दलों से गठबंधन करके चुनाव लड़ी थी। इसमें कांग्रेस ने 62 सीट जीती थी और जीत का रेशियो 33.75 प्रतिशत रहा था। इस तरह से देखे तो कांग्रेस पार्टी को अकेले चुनाव लड़ने की बजाय गठबंधन साथियों की बदौलत बड़ी जीत हासिल हुई थी। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 13 करोड़ 67 लाख 59 हजार 64 यानी 21.29 प्रतिशत वोट मिले थे। गठबंधन करने के कारण 2019 की तुलना में 2024 में कांग्रेस को 1.91 प्रतिशत अधिक वोट मिले थे।

कांग्रेस पार्टी ने पंजाब, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, गोवा, कर्नाटक, लक्षद्वीप, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, उड़ीसा, तेलंगाना व पश्चिम बंगाल में अपने बूते चुनाव लड़ा था। जबकि बिहार, गुजरात हरियाणा झारखंड, केरल, महाराष्ट्र, पांडिचेरी, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश में गठबंधन करके चुनाव लड़ा था। अंडमान निकोबार दीप समूह, आंध्र प्रदेश, दादरा नगर हवेली व दमन दीव, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, मध्य प्रदेश, मिजोरम, सिक्किम, त्रिपुरा, उत्तराखंड ऐसे प्रदेश है जहां लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का खाता भी नहीं खुल सका था।

हरियाणा विधानसभा चुनाव में हार के बाद कांग्रेस को सबसे बड़ा झटका महाराष्ट्र में लगा जहां उनकी सीटे 44 से घटकर 16 रह गई। महाराष्ट्र में कांग्रेस शिवसेना (यूबीटी) व राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के साथ महाविकास अघाड़ी बनाकर चुनाव मैदान में उतरी थी। वहां कांग्रेस सबसे अधिक 101 सीटों पर चुनाव लड़ी जिसमें महज 16 सीट ही जीत पाई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 80 लाख 20 हजार 921 वोट मिले जो कुल मतदान का 12. 42 प्रतिशत थे। महाराष्ट्र में कांग्रेस की जीत का स्ट्राइक रेट 15.38 प्रतिशत ही रहा।

संसद का शीतकालीन सत्र का समापन हो चुका है। जिसमें अधिकांश समय कांग्रेस ने अदानी मुद्दे को लेकर संसद नहीं चलने दी। इससे संसद का कार्य पूरी तरह प्रभावित रहा। इसको लेकर भी कांग्रेस की सहयोगी तृणमूल कांग्रेस, सपा ने कांग्रेस को घेरते हुये आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी राष्ट्रीय हित के मुद्दों पर बहस नहीं होने देना चाहती है तथा सिर्फ अदानी मुद्दे को ही जिंदा रखे हुए हैं। यदि संसद चलती तो कई तरह के मुद्दों पर सरकार को घेरा जा सकता था।

इंडिया अलायंस में जिस तरह की खटपट वर्तमान समय में चलने लगी है वह अलायंस के लिए शुभ नहीं मानी जा सकती है। अलायंस में शामिल दल ही विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस के नेतृत्व को नकारने लगे है इससे बुरी बात कांग्रेस पार्टी के लिए और क्या हो सकती है। लोकसभा चुनाव में जिस तरह से विपक्षी पार्टियों ने एकजुट होकर इंडिया गठबंधन बनाकर केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा को कड़ी टक्कर दी थी। वही गठबंधन अब धीरे-धीरे कमजोर पड़ता जा रहा है।

आने वाले समय में दिल्ली विधानसभा के चुनाव होने हैं। वहां भाजपा चुनाव जीतने की पूरी रणनीति बनाने में जुटी हुई है। आम आदमी पार्टी चाहती है कि वह दिल्ली की सत्ता पर फिर से काबिज हो। मगर कांग्रेस का रवैया देखकर आम आदमी पार्टी भी सकते में है। पार्टी के नेता कांग्रेस को वोट कटवा के रूप में देख रहे हैं तथा खुले आम भाजपा की बी टीम के रूप में काम करने का आरोप लगा रहे हैं। कांग्रेस ने अपने उम्मीदवारों की दो सूची जारी कर दी है। शेष सीटों पर भी जल्दी ही प्रत्याशियों के नाम घोषित करने की तैयारी चल रही है। यदि दिल्ली चुनाव में आम आदमी पार्टी पराजित हो जाती है तो इंडिया गठबंधन के ताबूत में वह आखरी कील साबित होगी।

कांग्रेस को यदि इंडिया गठबंधन को बचाना है तो अपने सहयोगी क्षेत्रीय दलों की भावनाओं को समझ कर फैसला करना होगा। तभी कांग्रेस अपने राजनीतिक वजूद को बचा पाएगी। इंडिया गठबंधन टूटने की स्थिति में कांग्रेस का भी कमजोर होना तय माना जा रहा है। क्योंकि कांग्रेस अकेले भाजपा से मुकाबला नहीं कर सकती है। गठबंधन के साथी दलों की मदद से ही कांग्रेस मजबूत हो सकेगी इस बात से कांग्रेस नेता भी अच्छे से वाकिफ है।

फॉर्म का तिलस्म

वक्रोक्ति

मृदुल कश्यप

लेखक व्यंग्यकार हैं।

फॉर्म क्रिकेट का एक बेहद गोपनीय टाइप का शब्द है टापम टॉप सीक्रेट! एक ऐसा तिलस्म जिसे देवकीनंदन खत्री जी का ऐयार तक समझ नहीं पाया। एक अंधी गुफा जिसका कोई ओर छोर नहीं है। यह ठंड में बिना आमंत्रण के आए कुहासे जैसा खिलाड़ियों के इर्द गिर्द बना रहता है पर फिर भी ज्ञानी क्रिकेट पंडित तक कुछ भी नहीं बता पाते।

मोटे तौर पर फॉर्म को दो भागों में बांट सकते है - अच्छा फॉर्म और बुरा फॉर्म। अनेक सालों की स्टडी के अनुसार यह कहा जा सकता है कि खिलाड़ी फॉर्म के पूरी तरह बस में रहता है । खिलाड़ी बेचारा फॉर्म के सामने बेबस घिघिया सा रहता है। वह फॉर्म के हाथ पैर जोड़ता रहता है, गिड़गिड़ा रहता है कि भैया बस कर! अपनी लुटिया डूबने से पहले जल्दी से अच्छा बन जा। साबुन का विज्ञापन तो हाथ से निकल ही गया है, यह तेल का भी निकल जाएगा।

फॉर्म कब अच्छे से बुरा या बुरे से अच्छे में परिवर्तित हो जाए कुछ अनुमान नहीं लगा सकते। जैसे कि एक अच्छे खासे मैच में अच्छे फॉर्म वाला खिलाड़ी खूब चौकें छक्के कूट रहा हो और अचानक फॉर्म बदल जाए तो वह साधारण सी बॉल पर आउट हो जाता है । इस उदाहरण से स्पष्ट है कि फॉर्म कुछ मूडी टाइप का भी है।

फॉर्म कब जाता है और कब वापस आता है यह ऐसे गहन शोध का विषय है जिस पर आज तक शोध नहीं हो पाया। किसी अच्छे भले खिलाड़ी का फॉर्म एक साधारण से मैच में वैसे ही खो जाता है जैसे पहले कुंभ मेले में दो भाई बिछुड़ जाया करते थे। फिर अनेक मैच खेल कर भी फॉर्म वापस नहीं आता।

एक अच्छा फॉर्म खिलाड़ी के जीवन में जुबां केसरी जैसा जोश देता है। इसकी ऊर्जा से वह ऊंची छलांग लगा सकता है। अगर उसमें अन्य आवश्यक गुण हो तो वह टीम में साधारण सदस्य से लेकर कप्तान तक का सफर तय कर सकता है। वहीं दूसरी ओर खराब फॉर्म खिलाड़ी को बल्ला टांगने पर मजबूर कर देता है। कल का वह सितारा कोच का प्रार्थना पत्र भरने लगता है या बोलने में एक्सपर्ट कमेंटेटर के रूप में माइक थाम लेता है।

मेरे मोहल्ले के क्रिकेट के जानकार बज्जू भैया दबे स्वरों में यह बताते हैं - 'सरमा जी कई खिलाड़ी तो अपने घर पर ही अपना फॉर्म भूल जाते हैं तो कुछ खिलाड़ी होटल में फॉर्म भूल जाते हैं। वह मैदान बिना फॉर्म के उतरते है।' यह सुनकर मैं बुरी तरह से झनझना गया।

मैंने डरते डरते पूछा - 'बज्जू भैया विदेश दौरे पर जाने वाले खिलाड़ी अगर फॉर्म अपने देश में ही छोड़ गए तो क्या होता ?'

मेरी बात सुनकर बज्जू भैया उल्लू जैसे मेरा चेहरा देखने लगे। पान की गुमटी वाला पनवाड़ी खैनी मिलता हुआ बोला - 'गहरी बात पूछ ली सिरीमान जी ने!'

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

दिनेश विजयवर्गीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मुझसे मेरा तकिया कभी जुदा न हो

आज भौतिकवादी संस्कृति में हर व्यक्ति अपने हिस्से में अधिक से अधिक सुविधाएं जुटाने में लगा हुआ है। व्यक्ति के जीवन में जितनी भी प्राप्त वस्तुएं, सुविधाओं का एहसास कराती हैं, उसमें से घर-घर में पाए जाने वाली एक सुविधा है तकिया। हर कोई इसे बचपन से लेकर जीवन में आखिरी सांस तक अपने पास ही रोके रखना चाहता है । जीवन में हर रिश्ते छिटक कर दूर हो सकते हैं, पर तकिये का रिश्ता भला कभी दूर हुआ है क्या? हर दिन इसकी नजदीकी का एहसास ही इसकी उपयोगिता सिद्ध करता है। दुल्हन को दहेज में मिलने वाले डबल बेड में यदि तकियों का सुख न हो तो डनलप के गुदगुदे गद्दे का आनंद भी फीका हो जाता है ।

एक समय था जब कहानी किस्सों में भी राजा महाराजाओं के महलों के पास ही रूठी रानी के लिए भी, फूटे महल हुआ करते थे। जिसमें राजा से रूठी रानी जाकर रहने लगती थी और इसके चलते वह अपनी नाराजगी को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती थी। पर आज फूटे महलों वाली परंपरा समाप्त हो गई। अब तो पैसे वालों से लेकर गांव गरीब तक की महिलाएं अपनी नाराजगी का एहसास कहीं इधर-उधर जाकर नहीं अपितु घर के बेड पर पड़े तकिये में मुंह छिपा कर व सिसकियां लेकर जताती हैं। यह तकिया सबके लिए समान सुविधा उपलब्ध कराता है। वह बिना किसी भेदभाव के सभी के आंसुओं को ब्लोटिंग पेपर की तरह सोख लेता है। महिलाओं के लिए यह सहानुभूति व संवेदना से भरे मित्र की भूमिका निभाने में,कभी अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं रहता।

श्रीजी एक बार किसी बरात में बराती बनकर दूसरे शहर में पहुंचे। गद्दे तकिये व साफ धुली चादर पाकर आराम की मुद्रा में थकावट मिटाने लगे। देर रात जब वह शादी के समारोह के बाद सोने आए तो देखते हैं कि तकिया ही गायब। बेचारे घर पर दो तकिये लगाकर सोने वाले श्रीजी के हिस्से का एक तकिया भी कोई अपनी सुविधा के लिए ले गया। वह रात भर करवट बदलते रहे। तकिये बिना नींद तो जैसे पराई होकर रह गई।

मुरली बाबू एक माह के लिए रेल से तीर्थ यात्रा कर रहे थे । रात को जब सोने लगते हैं तो अटैची में से फूंक वाला तकिया निकाल कर उसमें समुचित सुविधा स्तर की फूंक भरते और सहारा लगाकर सो जाते ।

मैं एक दिन अपने लेखक मित्र के घर गया। वह ड्राइंग रूम की गरिमा को ताक में रख मोटे गद्दे पर, एक गोल तकिये को टांग के नीचे तथा एक तकिये को अपनी बगल में दबा, आंखें बंद कर लेखन से पहले का चिंतन कर रहे थे। मैंने उनसे लेखन में तकियों के सहयोग के बारे में पूछा तो वह चाय की सिप लेते हुए बोले 'असल में तो रचना को श्रेष्ठ बनाने की प्रक्रिया में इन तकियों का ही महत्वपूर्ण योगदान है। इनकी सुख सुविधा पहुंचाने की क्षमता से में गहरी एकाग्रता स्थापित कर पाता हूं। ऐसे में रचना स्तरीय रूप पाकर पत्रिकाओं में स्थान पा लेती है।' वह तकियों की उपयोगिता से दिली खुशी जाहिर कर रहे थे।

सेठ साहूकारों के प्रतिष्ठानों की शोभा बढ़ाने में मोटे आकार वाले गोल मटोल व चोकोर तकियों का अपना विशेष महत्व होता है । सफेद गिलाफ वाले झकाझक तकियों का सहारा लेकर ही सेठ लोग धन-धान्य से महान होने का गौरव प्राप्त करते हैं। इन तकियों का आराम ही उन्हें शारीरिक दृष्टि से सेठ नुमा आकार देकर समाज में पद प्रतिष्ठा दिलाने में अपनी भूमिका निभाता है । सोकर उठते समय अलसाये पन का सुख भी आम जन इन्हीं तकियों की मेहरबानी से प्राप्त कर पता है। तकियों की सुख सुविधा देने का सिलसिला वर्षों से चला रहा है। तभी तो हर घर से यही आवाज सुनाई देती है 'सुख की नींद सुलाता तकिया,सुख-दुख का है साथी तकिया।' अब तो आप भी ईश्वर से यही प्रार्थना ? करेंगे ना,कि मुझसे मेरा तकिया कभी जुदा न हो।

जयंती पर विशेष

प्रमोद दीक्षित मलय
लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

लुई ब्रेल : जिसने नेत्रहीनों के लिए शिक्षा के द्वार खोले

सभा में खुशी की लहर छा गयी और करतल ध्वनि से गगन गुंजित हो गया। तब पूरे राजकीय सम्मान एवं प्रतिष्ठा के साथ धार्मिक संस्कारोंपरांत कब्र से शव को निकाला गया। उपस्थित जन समुदाय ने अपनी गलती स्वीकार की और धार्मिक रस्में पूर्ण कर लुई के सम्मान में राष्ट्रीय धुन बजा उन्हें दफनाया गया। उपस्थित लोगों ने उनके महनीय मानवीय योगदान को स्वीकृति देते हुए अपने भूल के लिए प्रायश्चित किया। यह लुई ब्रेल की मृत्यु के सौ साल के बाद का एक सम्माननीय दृश्य था। नेत्रहीनों के लिए प्रकृति के अप्रतिम सौंदर्य का दर्शन अछूता और रसानुभूति से परे था, क्योंकि वे न तो देखकर आनन्द उठा सकते थे और न ही पढ़कर। दृष्टिहीनों के लिए यह दुनिया अंधकारमय, नीरस और बेरंग थी। नेत्रहीन भी काव्य, कहानी, नाटक को पढ़कर आनन्द सागर में डूब सकें, ऐसा सहज सम्भव हुआ है एक विशेष लिपि में अंकित पाठ्य सामग्री के द्वारा, जिसे विश्व ब्रेल लिपि के नाम से जानता है। ब्रेल लिपि के जनक हैं फ्रांस के शिक्षाविद् लुई ब्रेल। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 2019 से 4 जनवरी को विश्व ब्रेल दिवस के रुप में मनाया जा रहा है।

20 जून, 1952। पेरिस से थोड़ी दूर बसे एक गांव कूप्रे में सुबह से ही लोग जुट रहे थे। सरकारी अधिकारियों एवं नेताओं की गाड़ियों का काफिला भी गांव की ओर बढ़ा चला जा रहा था। गांव के निवासी स्त्री, पुरुष और बच्चे भी आश्चर्यचकित हो भीड़ का हिस्सा बन जाते हैं। भीड़ एक कब्रिस्तान जाकर एक सभा में बदल जाती है। एक खास कब्र को सजाया गया है। एक अधिकारी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज फ्रांस की सरकार ने ब्रेल लिपि के जनक लुई ब्रेल के सम्मान का दिन घोषित किया गया है। सभा में खुशी की लहर छा गयी और करतल ध्वनि से गगन गुंजित हो गया। तब पूरे राजकीय सम्मान एवं प्रतिष्ठा के साथ धार्मिक संस्कारोंपरांत कब्र से शव को निकाला गया। उपस्थित जन समुदाय ने अपनी गलती स्वीकार की और धार्मिक रस्में पूर्ण कर लुई के सम्मान में राष्ट्रीय धुन बजा उन्हें दफनाया गया। उपस्थित लोगों ने उनके महनीय मानवीय योगदान को स्वीकृति देते हुए अपने भूल के लिए प्रायश्चित किया। यह लुई ब्रेल की मृत्यु के सौ साल के बाद का एक सम्माननीय दृश्य था। नेत्रहीनों के लिए प्रकृति के अप्रतिम सौंदर्य का दर्शन अछूता और रसानुभूति से परे था, क्योंकि वे न तो देखकर आनन्द उठा सकते थे और न ही पढ़कर। दृष्टिहीनों के लिए यह दुनिया अंधकारमय, नीरस और बेरंग थी। नेत्रहीन भी काव्य, कहानी, नाटक को पढ़कर आनन्द सागर में डूब सकें, ऐसा सहज सम्भव हुआ है एक विशेष लिपि में अंकित पाठ्य सामग्री के द्वारा, जिसे विश्व ब्रेल लिपि के नाम से जानता है। ब्रेल लिपि के जनक हैं फ्रांस के शिक्षाविद् लुई ब्रेल। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 2019 से 4 जनवरी को विश्व ब्रेल दिवस के रुप में मनाया जा रहा है।

लुई ब्रेल का जन्म फ्रांस के एक गांव में 4 जनवरी, 1809 को पिता साइमन रेले ब्रेल एवं माता मोनिक ब्रेल के परिवार में हुआ था। पिता के आर्थिक संसाधन सीमित थे एवं आजीविका का एकमात्र साधन उनका मोचीगिरी का ही काम था। वह चमड़े का काम करने के साथ ही फ्रांस के शाही परिवार एवं अमीरों के घोड़ों की काठी एवं जीन बनाने का काम किया करते थे। लेकिन कठोर श्रम एवं समय साध्य काम होने के बावजूद भी उनकी कमाई इतनी न थी कि छह सदस्यों के परिवार का भरण-पोषण एवं उचित देखरेख संभव हो पाती। और जैसा कि परंपरागत रोजगार करने वाले परिवारों में होता है कि अपने पारंपरिक कार्य से बच्चों को जोड़े रखने एवं सिखाने की दृष्टि से छोटी उम्र से ही अपने साथ काम पर ले जाते हैं। साइमन रेले ने भी ऐसा ही किया और अपनी मोची की दूकान पर तीन वर्ष के बालक लुई ब्रेल को साथ ले जाने लगे। स्वभावतः बालक जिज्ञासु एवं चंचल होते हैं। दुकान पर चमड़े के काम में प्रयुक्त होने वाले लोहे के औजारों यथा चाकू, सूजा, हथौड़ी, कटर, आरी आदि से बालक संपर्क में आया। वह पिता की मदद करते हुए उनसे खेलने लगता। एक दिन पिता की अनुपस्थिति में खेलते समय सूजा उछल कर बालक की आंख में जा लगा और खून की धार फूट पड़ी। बालक को घर पहुंचाया गया और आंख साफ कर जड़ी-बूटी युक्त घरेलू औषधि का लेपन कर पट्टी बांध दी गई और यह सोचा गया कि अपने आप जल्दी ही ठीक हो जाएगी। लेकिन उचित चिकित्सा के अभाव या अभिभावकों की लापरवाही के चलते घायल संक्रमित आंख का दुष्प्रभाव दूसरे आंख पर भी पड़ने लगा। आठ वर्ष का होते-होते बालक ने अपनी दृष्टि पूरी तरह खो दी। अब बालक के लिए सूरज के प्रकाश में कोई रंग न थे। उसके लिए दुनिया अब केवल अंधेरे का एक गोला थी। परिवार एवं समाज में वह दया एवं सहानुभूति का पात्र बन गया लेकिन उसे यह निरीह जीवन स्वीकार न था। उसका अंतर्मन उसे पढ़ने के लिए कचोटता रहता। पर तत्कालीन समय में नेत्रहीनों की शिक्षा-दीक्षा के लिए कोई विशेष संसाधन एवं व्यवस्थाएं न थी। पेरिस में एक अंध विद्यालय अवश्य था पर वहां सामान्य परिवारों के

बालकों का प्रवेश हो पाना बहुत कठिन था। बालक लुई में कुछ नया करने की लगन थी, साथ ही शिक्षा प्राप्ति का जज्बा एवं संकल्प भी। उसके निरन्तर आग्रह को स्वीकार कर पिता उसे एक परिचित पादरी के पास ले गए, जिनकी सिफारिश और मदद से लुई ब्रेल का नामांकन पेरिस के अंध विद्यालय 'रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड' में 1821 में हो गया। तब तक नेत्रहीनों को पढ़ाने के लिए कोई विशेष लिपि व्यवहार में नहीं थी। आधे-अधूरे प्रयासों से उपलब्ध सामग्री से उक्त विद्यालय में बच्चों को इतिहास, भूगोल एवं गणित की सामान्य जानकारी दी जाती थी। एक दिन शाही सेना का एक पदाधिकारी चार्ल्स बार्बियर, जो सैनिकों के लिए रात में भी टटोलकर पढ़ सकने वाली पठन सामग्री तैयार करने में जुटा हुआ था, उक्त विद्यालय में प्रशिक्षण हेतु आया। उन्होंने एक दिन संवाद करते हुए बताया कि अपने सैनिकों को अंधेरे में भी पढ़े जा सकने वाले गुप्त संदेशों को एक खास लिपि में अंकित कर भेजता है। उस लिपि में 12 बिंदुओं को 6-6 की दो पंक्तियों पर रखा जाता है जिसे सैनिक टटोलकर पढ़ लेते हैं। लेकिन एक बहुत बड़ी कमी थी कि उसमें विराम या गणितीय चिह्नों का अंकन सम्भव न था और चार्ल्स उसे बेहतर करने के लिए कुछ शोध कर रहा था। बालक लुई सेनानायक चार्ल्स के काम से प्रभावित हुआ और उनकी कूट लिपि को पढ़ने-समझने के लिए पादरी की मदद से चार्ल्स से भेंट की। बातचीत के बाद बालक लुई ने लिपि में कुछ संशोधन करने के सुझाव दिये। चार्ल्स बालक के सुझावों को सुन हतप्रभ था और तुरन्त ही स्वीकार कर लिया जिससे सैनिकों तक संदेश पहुंचाना अब और सरल हो गया।

चार्ल्स बार्बियर की कूट लिपि को पढ़-समझ कर बालक लुई ब्रेल नेत्रहीनों के लिए उपयोगी एक खास लिपि को विकसित करने की साधना में जुट गया। आखिर 1829 में, आठ सालों की अनथक साधना का परिणाम एक विशेष विकसित लिपि के रूप में हुआ जिसे दुनिया ब्रेल लिपि से जानती है, जिसमें 6 उभरे बिंदुओं के आधार पर 64 अक्षर, विराम एवं गणित चिह्नों सहित संगीत के नोटेशन बनाना भी सम्भव हो गया। ब्रेल लिपि विकसित हो जाने से नेत्रहीनों के लिए पढ़ना एवं मनोभावों को अभिव्यक्त करना सहज संभव हो गया था। लेकिन ब्रेल लिपि को समाज एवं सरकार द्वारा मान्यता नहीं मिली। उसे सेना द्वारा प्रयोग किए जाने वाला कूट रचित अंकन ही समझा गया। लुई ब्रेल जीवन भर ब्रेल लिपि की मान्यता हेतु संघर्ष करते रहे। साथ ही लिपि के प्रचार-प्रसार में भी सतत समर्पित रहे।

विश्व को ब्रेल लिपि के रूप में अमूल्य उपहार देने वाला यह महान व्यक्तित्व 43 वर्ष की अल्पायु में ही 6 जनवरी, 1852 को लौकिक जीवन पूर्ण कर यमलोक की अनंत की यात्रा पर प्रस्थान कर गया। लुई ब्रेल की मृत्यु के 16 वर्ष बाद 1868 में फ्रांस की सरकार ने ब्रेल लिपि को मान्यता प्रदान की। धीरे-धीरे ब्रेल लिपि सम्पूर्ण विश्व प्रचलित हो गयी। भारत में भी ब्रेल लिपि के माध्यम से नेत्रहीनों के लिए पढ़ने एवं प्रशिक्षण के लिए तमाम विद्यालय एवं प्रशिक्षण केंद्र खोले गए। 4 जनवरी, 2009 को लुई ब्रेल के 200वें जन्मदिन के अवसर पर भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी कर उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वास्तव में जीवन रहते हुए वह जिस सम्मान और प्रतिष्ठा के हकदार थे वह उनको नहीं मिला लेकिन उनकी मृत्यु के बाद उनके योगदान को सिर माथे लिया गया। संपूर्ण जग उनका ऋणी है और ऋणी रहेगा।

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल
लेखक जन नीतियों के विश्लेषक हैं।

प्रेम और सौंदर्य के गायक- नीरज

4 जनवरी 1925 को पुरावली ग्राम जिला इटावा उत्तर प्रदेश में जन्मे गोपालदास नीरज ने पिछले तीन दशकों से कवि सम्मेलनों और लोकप्रिय फिल्मी गीतों के माध्यम से काव्य प्रेमियों के हृदय में अपनी पहचान निर्मित की। उन्हें जीवन में अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए । विश्व उर्दू परिषद पुरस्कार यश भारती पुरस्कार के अतिरिक्त फिल्मों में श्रेष्ठ गीत लेखन के लिए लगातार तीन बार फिल्म फेयर पुरस्कार भी दिया गया। मंचीय कवि के रूप में वह भारतीय जनमानस में बहुत लोकप्रिय रहे। उनकी अनेक कविताओं के गुजराती, मराठी, बंगाली पंजाबी रूसी आदि भाषाओं में अनुवाद भी हुए। उनकी प्रकाशित कृतियां हैं-संघर्ष 1944 अंर्तध्वनि 1946 विभावरी 1948 प्राणगीत 1951 दर्द दिया है 1956 बादर बरस गयो 1957 मुक्तकी 1958 दो गीत 1958 नीरज की पाती 1958 गीत भी अगीत भी 1959 आसावरी 1963 नदी किनारे 1963 लहर पुकारे 1963 कारवाँ गुजर गया 1964 फिर दीप जलेगा 1970 तुम्हारे लिये 1972।

1986 में नीरज की गीतिकायें शीर्षक से उनकी ग़ज़लें पुस्तकाकार रूप में ग़ज़ल प्रेमियों को उपलब्ध हुई।उनकी ग़ज़लें देश की हर प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका मंप प्रकाशित भी हुई।उनकी ग़ज़लों में प्रेम एवं विरह के विविध पक्षों की मार्मिक एवं कोमलतम अनुभूतियां आम आदमी के त्रस्त जीवन का पिघलता अवसाद वर्तमान जटिल परिस्थितियों में परिवर्तन के लिये जन जन को संघर्ष की प्रेरणा तथा क्रांति का आव्हान राष्ट्र प्रेम साम्प्रदायिक सद्भाव और भाई चारे का संदेश तथा समग्र मानव जीवन को दृष्टिगत रखते हुए जीवन के दार्शनिक पक्षों की सरस अभिव्यक्ति हुई है।

नीरज जी कविता को जीवन-ऊष्मा से ऊर्जस्वित बनाये रखने के पक्ष में हैं।उनके मतानुसार जिस कविता में मानव जीवन की अनुभूतियां न हों, वह कविता शाश्वत साहित्य नहीं बन सकती। देखें-

जिसमें इंसान के दिल की न हो धड़कन नीरज
शायरी तो है वह अख़बार की कतरन की तरह

उनकी ग़ज़लों में प्रेम तथा पीर की महत्ता स्थापित करने की प्रवृत्ति विद्यमान है।वह मानव जीवन में प्रेम और पीर दोनों को अति आवश्यक मानते हैं।

नीरज से बढ़के और धनी कौन हैं यहां
उसके हृदय में पीर है सारे जहान की

यहां नीरज की वैचारिकता सूफी कवियों से समानता का प्रयत्न करती दृष्टिगोचर होती है।यहां तक कि नीरज भी सूफी दर्शन के अनरूप प्रेम को ही परमेश्वर की प्राप्ति का सर्वाधिक संगत माध्यम मानने लगते हैं-

तू ढूंढता है कहां उसको काबा-काशी में
वहीं वो होगा जहां प्रेम का कथन होगा

चूंकि सूफी मत के अनुसार लौकिकता से गुज़रते हुए ही अलौकिकता तक पहुंचा जा सकता है अतः नीरज की ग़ज़लों में वर्णित मानवीय प्रेम आध्यात्मिक प्रेम की प्रथम सीढ़ी है। शराब को भी उन्होंने कहीं लौकिक और कहीं अलौकिक आनन्द की व्यंजना के लिये प्रयोग किया है। एक अदृश्य अगोचर सत्ता के प्रति जिज्ञासा का भाव ही उन्हें दार्शनिकता के क्षेत्र में ले आता है-

जाने वो किसका था साया कि जिसे छूने को
हम भटकते रहे आवारा हवाओं की तरह

मनुष्य जीवन भर मोहमाया से बिंधा रहता हैं और मोक्ष की तलाश करता है परन्तु उसकी तलाश पूरी नहीं होती क्योंकि वह जीवन सत्य से कोसों दूर होता है।कवि ने मानव जीवन के अनेक दार्शनिक पक्षों पर गंभीरता पूर्वक विचार किया है।काल के प्रवाह की भांति जीवन का प्रवाह भी सतत रूप से गतिमान है। सृष्टि चक्र इसी प्रकार निरंतर गतिशील रहता है।प्राणियों का आवागमन और जगत का नैरन्तर्य शाश्वत है सनातन है।

हज़ारों लोग इधर से गुज़र गये फिर भी
ये सिलसिला न कभी खत्म होने वाला है

मनुष्य इस भौतिक संसार में यायावर के समान है जिसे स्वयं अपने लक्ष्य का ज्ञान नहीं है मृत्युपर्यन्त पंचतत्व में लीन होने की लीला उतनी ही रहस्यमय है, जितना कि सृष्टि का नियंता-

हरेक शख्स मुसाफ़िर था इस जगह लेकिन
पता किसी को नहीं था कहां पे जाना है

कवि उस रहस्मय अस्तित्व को जानने के लिये

उत्सुक है, उस अनुभूति को अंगीकार करने का आकांक्षी है जो भौतिक संसार में जीव और ब्रह्म के एकाकार होने से उद्भूत होती है।उस अलौकिक आनन्द की कल्पना ही कवि की बैचेनी का मूल कारण है-

न जाने फूल महकते हैं किस तरह के वहां
जो तेरी सिम्त गये लौटकर न घर आये

निश्चय ही नीरज की ग़ज़लों में ईश्वरीय सत्ता के प्रति प्रगाढ़ आस्था है और उनका यह कथन भी समीचीन है कि मेरी गीतिकायें (ग़ज़लें) भारतीय चिन्तन तथा दर्शन को प्रमुख रूप से प्रस्तुत करती हैं। यद्यपि उन पर फारसी दर्शन का भी प्रभाव है।उनकी प्रेम एवं सौन्दर्य विषयक अनुभूतियों में भी दार्शनिकता का पुट है।

कवि ने वर्तमान जीवन सामाजिक परिस्थितियों, राष्ट्रीय समस्याओं पर भी गंभीर चिंता व्यक्त की है।उनकी ग़ज़लों में समाज और देश का यथार्थ चित्रण है, राजनीतिज्ञों पर गहरे कटाक्ष हैं। उदाहरण स्वरूप-

तुम समझ जाओगे क्या चीज है भारत माता
तुमने बेटी किसी निर्धन की अगर देखी है

कवि ने वर्तमान दुर्दशाओं से क्षुब्ध है। नव विकसित सभ्यता और संस्कृति ने सामाजिक नियमों को भंग किया है पारिवारिक मर्यादाओं को तोड़ा है युवा पीढ़ी को उद्दंड और उच्छृंखल बनाया है अतः समय के साथ बदलते हुए सामाजिक दृश्यों का चित्रण भी उनकी ग़ज़लों में बहुधा हुआ है।

जो उठाती थी न सर अपने बड़ों के आगे
हमने तहज़ीब वो अब न तो इधर देखी है

कवि के समक्ष उपस्थित आधुनिक जीवन में अतिव्यस्तता है, यांत्रिक दिनचर्या है, अभाव और अवसाद है अतः वह वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तन के लिये प्रतीक्षारत है।जीवन और जगत के वर्तमान स्वरूप से क्षुब्ध दुखी कवि हृदय यथासंभव परिदृश्य के बदलने की आकांक्षा व्यक्त करता है-

है बहुत अंधियार अब सूरज निकलना चाहिये
जिस तरह से भी हो ये मौसम बदलना चाहिये
फूल बनकर जो जिया वह बस यहां मसला गया

जीस्त को फौलाद के सांचे में ढलना चाहिये
छीनता हो जब तुम्हारा हक़ कोई उस वक़्त तो
आंख से आंसू नहीं शोला निकलना चाहिये

आम आदमी की कमजोर व दुर्बल स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए वह उसे और अधिक समर्थ रूप में देखना चाहते हैं ताकि वह अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों, अनाचारों का सबल प्रतिरोध कर सके।कवि का अपना दृष्टिकोण है कि शोषण व दमन के विरूद्ध एक सक्षम और सार्थक विद्रोह जनसामान्य की ओर से होना ही चाहिए। इसीलिये वह शोषण और पीड़ित जन को कमर कसकर संघर्ष के लिये तैयार रहने की प्रेरणा देते हैं। वह व्यवस्था से किसी सार्थक परिणाम की अपेक्षा नहीं रखते क्योंकि वहां तो इतनी अंधेरगर्दी है कि अपराध कोई और करता है तथा उसकी सजा किसी और को मिलती है-

वो क़त्ल किसने किया है सभी को है मालुम
ये देखना है कि इल्ज़ाम किसके सर आये

साम्प्रदायिक दंगों की आंच में झुलसती हुई मानवीय अस्मिता की सुरक्षा के प्रति चिंताकुल नीरज साम्प्रदायिक सद्भाव के लिये उचित वातावरण बनाने की रचनात्मक पहल करते हैं-

दिलों को तोड़ के मन्दिर जो बना के लौटे
उन्हें बताओ कि वह क्या गुनाह कर आये

असफलताओं और दुर्व्यवस्थाओं के बोझिल वातावरण में भी वह निराशा या हताशा को निकट नहीं आने देते बल्कि आम आदमी की क्षमताओं को उभारने का प्रयत्न करते हैं। उनकी ग़ज़लों में इन विशिष्टताओं के साथ एक और विशेषता है - अपने व्यक्तित्व और कृतित्व में विनम्रता का भाव जो कि उनकी महानता का परिचायक है-

जी हां नीरज में बहुत दोष हैं लेकिन फिर भी
माफ कर दो उसे बच्चों की खताओं की तरह

प्राध्यापक होने के कारण भाषा पर उनका असाधारण अधिकार था और शब्दों को उन्होंने बहुत सलीके से बरता है।उनकी सहज सरल भाषा पर मंचीय कविता का गहरा प्रभाव भी रहा।शिल्प के प्रति भी वह सचेत व संवेदनशील रहे।उन्होंने अपनी रचनाओं को गीतिका कहा क्योंकि वह जानते थे कि उनकी ग़ज़लें ग़ज़ल के लिए निर्धारित बहरों का पालन नहीं करतीं।लेकिन वह अपने विशिष्ट लहजे में मंचों से उनका सस्वर पाठ करते थे।हिन्दी साहित्य में ग़ज़ल को लोकप्रिय बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

19 जुलाई 2018 को 93 वर्ष की उम्र में उपचार के दौरान एम्स नई दिल्ली में उन्होंने अंतिम सांस ली मगर उनकी रचनाएं आज भी हमारे साथ हमारे ज़हनों में ज़िन्दा हैं।

विश्व ब्रेल दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

दृष्टिहीनों की शिक्षा में ब्रेल लिपि की भूमिका

'ब्रेल लिपि नेत्र विकारों वाले व्यक्तियों और दृष्टि विकलांग लोगों के लिए पढ़ने और लिखने की स्पर्शनीय प्रणाली है, जिसकी खोज 4 जनवरी 1809 को फ्रांस के कूपवरे में जन्मे लुई ब्रेल ने महज 15 वर्ष की आयु में की थी। संचार के साधन के रूप में ब्रेल लिपि के महत्व के बारे में विश्वभर में जागरूकता फैलाने, दृष्टि-बाधित लोगों को उनके अधिकार प्रदान करने और ब्रेल लिपि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 4 जनवरी को ब्रेल लिपि के आविष्कारक लुई ब्रेल के जन्मदिवस को 'विश्व ब्रेल दिवस' मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के 'विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेन्शन' में ब्रेल लिपि को संचार के एक साधन के रूप में उद्धृत किया गया है। संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन 'यूनेस्को' ने वर्ष 1949 में ब्रेल लिपि में एकरूपता लाने के उद्देश्य से समस्याओं पर ध्यान देने वाला एक सर्वेक्षण आगे बढ़ाने की पहल की थी।

लुई ब्रेल ने केवल तीन साल की उम्र में ही एक दुर्घटना के कारण अपनी दोनों आंखों की रोशनी खो दी थी। आंखें संक्रमित होने के कारण उनकी आंखों की दृष्टि पूरी तरह चली गई थी लेकिन दृष्टिहीनता के बावजूद उन्होंने न केवल अकादमिक रूप से उत्कृष्ट प्रदर्शन किया बल्कि छात्रवृत्ति पर 'रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ' चले गए। 1821 में फ्रांसीसी सेना के एक कैप्टन चार्ल्स बार्बियर लुई ब्रेल के स्कूल के दौरे पर आए थे, जिन्होंने सेना के लिए एक विशेष क्रिप्टोग्राफी लिपि का विकास किया था, जिसकी मदद से सैनिक रात के अंधेरे में भी संदेशों को पढ़ सकते हैं। चार्ल्स ने स्कूल में बच्चों के साथ 'नाइट राइटिंग' नामक यही तकनीक साझा की, जिसका उपयोग सैनिक दुश्मनों से बचने के लिए किया करते थे। इसके तहत वे उभरे हुए बिन्दुओं में गुप्त संदेशों का आदान-प्रदान करते थे किन्तु उनका यह कोड बहुत जटिल था। इसीलिए ब्रेल ने इसी आइडिया के आधार पर अपनी लिपि पर कार्य शुरू किया और 'रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ' में अध्ययन के दौरान ही उन्होंने 1824 में अपनी लिपि को तैयार कर लिया, जो काफी सरल थी। इसी लिपि को ब्रेल लिपि के नाम से जाना गया और सरल लिपि की खोज के बाद दुनियाभर में नेत्रहीन या आंशिक रूप से नेत्रहीन लोगों की जिंदगी काफी हद तक आसान हो गई। अपने इसी आविष्कार के कारण लुई ब्रेल दुनियाभर में दृष्टिबाधित लोगों के लिए मसीहा बन गए।

ब्रेल लिपि कोई भाषा नहीं है बल्कि एक तरह का कोड है। यह ऐसी लिपि है, जिसे एक विशेष प्रकार के उभरे कागज पर लिखा जाता है और इसमें उभरे हुए बिन्दुओं की श्रृंखला पर उंगलियां रखकर या उन्हें उंगलियों से छूकर पढ़ा जाता है। ब्रेल लिपि को टाइपराइटर जैसी दिखने वाली एक मशीन 'ब्रेलराइटर' के जरिये लिखा जा सकता है या पेंसिल जैसी नुकीली चीज 'स्टायलस' और ब्रेल स्लेट 'पट्ट' का इस्तेमाल करके कागज पर बिन्दु उकेरकर लिखा जा सकता है।

ब्रेल में उभरे हुए बिन्दुओं को 'सेल' के नाम से जाना जाता है। 1 से 6 बिन्दुओं की यह एक व्यवस्था या प्रणाली होती है, जिसमें बिन्दु अक्षर, संख्या और संगीत व गणितीय चिन्हों के संकेतकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ब्रेल लिपि के अंतर्गत उभरे हुए बिन्दुओं से एक कोड बनाया जाता है, जिसमें 6 बिन्दुओं की तीन पंक्तियां होती हैं और इन्हीं में इस पूरे सिस्टम का कोड छिपा होता है। चार्ल्स बार्बियर की शुरुआती कूट लिपि 12 बिन्दुओं पर आधारित थी, जिन्हें 66 की पंक्तियों में रखा जाता था। तब इसमें विराम, संख्या और गणितीय चिन्ह मौजूद नहीं थे। लुई ब्रेल ने इसमें सुधार करते हुए 12 की जगह 6 बिन्दुओं का उपयोग कर 64 अक्षर और चिह्न का आविष्कार किया, जिसमें उन्होंने विराम चिन्ह, संख्या और संगीत के नोटेशन लिखने के लिए भी जरूरी चिह्न उपलब्ध कराए। ब्रेल ने हालांकि 1824 में पहली बार सार्वजनिक रूप से अपने कार्य को प्रस्तुत किया था लेकिन ब्रेल लिपि प्रणाली को 1829 में पहली बार प्रकाशित कराया। उन्होंने एक प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएं दी और अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय ब्रेल लिपि प्रणाली का विस्तार करने में बिताया। हालांकि जीते जी उनके काम को उचित सम्मान नहीं मिला और उनके निधन के 16 वर्ष बाद 1868 में ब्रेल लिपि को प्रामाणिक रूप से मान्यता मिली, जो आज दुनियाभर में मान्य है।

समय के साथ तकनीकी युग में ब्रेल लिपि में कुछ बदलाव होते रहे हैं और अब ब्रेल लिपि कम्प्यूटर तक भी पहुंच गई है। ब्रेल लिपि वाले ऐसे कम्प्यूटर में गोल व उभरे हुए बिन्दु होते हैं और कम्प्यूटरों में यह तकनीक उपलब्ध होने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि अब दृष्टिहीन व्यक्ति भी तकनीकी रूप से मजबूत हो रहे हैं। ब्रेल लिपि में अब बहुत सारी पुस्तकें निकलती हैं, यहां तक कि स्कूली बच्चों के लिए पाठ्य पुस्तकों के अलावा रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथ भी छपते हैं। भारत सरकार द्वारा 4 जनवरी 2009 को लुई ब्रेल के जन्म को 200 वर्ष पूरे होने पर उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया था। 43 वर्ष की आयु में 6 जनवरी 1852 को लुई ब्रेल का निधन हो गया लेकिन उनकी खोजी ब्रेल लिपि ने आज विश्वभर में दृष्टिहीनों तथा आंशिक रूप से नेत्रहीनों की जिंदगी को बहुत आसान बना दिया है।

निजी स्कूलों के लिए मान्यता के लिये 23 जनवरी तक ऑनलाइन आवेदन

बैतूल। कक्षा एक से 8 तक के निजी विद्यालय शिक्षा का अधिकार अधिनियम अंतर्गत नवीन मान्यता एवं मान्यता नवीनीकरण के लिये 23 जनवरी तक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। राज्य शिक्षा केन्द्र ने मान्यता आवेदन की प्रक्रिया को सरलीकृत एवं पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से आरटीई एमपी मोबाइल ऐप तैयार किया है। इसके माध्यम से अशासकीय स्कूल स्वयं अपने मोबाइल के द्वारा आवश्यक जानकारी दर्ज कर जरूरी फोटोग्राफ तथा दस्तावेज अपलोड करते हुए मान्यता के लिये ऑनलाइन आवेदन कर सकेगे। संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र ने कलेक्टर और मैदानी अधिकारियों को पत्र के माध्यम से निर्देशित किया है कि वे इस सबंध में अपने जिले के सभी निजी विद्यालयों को अवगत कराते हुए नवीन मान्यता अथवा पूर्व मान्यता के नवीनीकरण के लिये निर्धारित समय सीमा में कार्यवाही पूर्ण कराये। जिन स्कूलों की मान्यता अवधि मार्च 2025 में पूर्ण हो रही है ऐसे स्कूल समय-सीमा में मान्यता नवीनीकरण हेतु आवेदन करेंगे। साथ ही यदि कोई स्कूल कक्षा में वृद्धि करना चाहता है तो वह भी नवीनीकरण के लिये आवेदन कर सकता है। मान्यता नवीनीकरण के लिये जो अशासकीय स्कूलों समय सीमा में आवेदन नही करते है तो वह आगामी सत्र में स्कूल संचालन के लिए पात्र नही होंगे। राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा जारी विस्तृत निर्देश एमपी एज्युकेशन पोर्टल तथा आरटीई पोर्टल पर भी देखे जा सकते हैं।

शासकीय विद्यालयों की वार्षिक परीक्षा की समय-सारणी जारी

बैतूल। राज्य शिक्षा केंद्र ने प्रदेश के शासकीय विद्यालयों में कक्षा-3, 4, 6 और कक्षा-7 की वार्षिक परीक्षा की समय-सारणी जारी की है। परीक्षा के आयोजन के संबंध में कलेक्टर को आवश्यक निर्देश भी जारी किये गये हैं। स्कूल शिक्षा विभाग ने वार्षिक परीक्षा के आयोजन के पहले बैठक व्यवस्था और अन्य तैयारियों के संबंध में जिला परियोजना समन्वयकों को पूर्व तैयारी करने के लिये कहा है। कक्षा-3 और 4 की वार्षिक परीक्षा 6 मार्च से शुरू होकर 11 मार्च को समाप्त होगी। इन कक्षाओं की परीक्षा का समय दोपहर 2 से शाम 4:30 बजे तक रहेगा। कक्षा-6 और 7 की वार्षिक परीक्षा 6 मार्च से शुरू होकर 12 मार्च, 2025 को समाप्त होगी। इन कक्षाओं की परीक्षा का समय दोपहर 2 से शाम 4:30 बजे तक रहेगा। परीक्षा में शामिल होने वाले दिव्यांग विद्यार्थियों को अतिरिक्त समय और लेखक की सुविधा प्रदान की जायेगी।

प्राचीन नागदेव मंदिर में तोड़फोड़, मूर्ति को किया खंडित

ग्रामीणों ने कार्यवाही मांग को लेकर सौंपा ज्ञापन

बैतूल। चिचोली ब्लाक के ग्राम बोरी में असामाजिक तत्वों ने मंदिर में तोडफ़ोड़ की और प्राचीन नागदेव मंदिर की मूर्ति को भी खंडित कर दिया है। इससे श्रद्धालुओं में आक्रोश है। इस संबंध में श्रद्धालुओं ने ज्ञापन देकर प्रतिमा तोडने वालों पर कार्रवाही की मांग की है। बताया जाता है कि बुधवार शाम को किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा मंदिर में प्राचीन नागदेव मंदिर में तोडफ़ोड़ की है। नाग देवता की मूर्ति को खंडित कर दिया है। सुबह गांव वालों ने देखा तो मूर्ति टूटी हुई थी। ग्रामीणों ने नागदेव मंदिर में तोडफ़ोड़ करने वालों आरोपी की पहचान कर एवं आरोपी पर कड़ी कार्रवाई करने को लेकर तहसील कार्यालय में तहसीलदार अतुल श्रीवास्तव और थाना प्रभारी हरिओम पटेल को ज्ञापन देकर कर कडी कार्यवाई की मांग की है। ज्ञापन देते समय संतोष यादव, आनंद बिहारे, ओम प्रकाश यादव ,नारायण यादव ,चंदर यादव, भिक्कू यादव मनोज यादव सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

उस्ताद अमानत अली खां साहब को स्मरण दिवस पर अकीदत के फूल पेश कर याद किया

देवास। संगीत सम्राट उस्ताद रज्जब अली खां संगीत कल्याण समिति के तत्वाधान में भारत रत्न स्वर कोकिला सुश्री लता मंगेशकर के

उस्ताद अमानत अली खां साहब की 77 वीं पुण्यतिथि स्मरण दिवस (बरसी) के मौके पर स्थानीय वारसी नगर कब्रिस्तान पर स्थानीय पार्षद सोनू परमार समिति के अध्यक्ष मो. मुनव्वर खान सचिव आनंद गुप्ता समाजसेवी शहाबुद्दीन मंसूरी, इंजि.राशिद खान, साबिर खां,एवं खां साहब के चाहने वालों ने उनके स्मारक स्थल (कब्र) पर हकीकत के फूल एवं फूलों की चादर पेश कर उन्हें याद किया। मो. मुनव्वर खान ने बताया कि आगामी 8 जनवरी को विश्व के श्रेष्ठ संगीत आचार्य संगीत सम्राट उस्ताद रज्जब अली खां साहब की 66 वीं पुण्यतिथि उनके स्मारक पर मनाई जाएगी। प्रातः 10 बजे फूलों की चादर पेश की जावेगी तथा सालाना संस्कृति विभाग से होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम 8 और 9 जनवरी को आयोजित होंगे। सभी संगीत विदुषियों प्रबुद्ध जनों बुद्धिजीवी विद्वानों तथा शहर वासियों एवं अमनपसंद अवाम से अनुरोध कि अधिक से संख्या में प्रातः 8 जनवरी को सुबह 10 बजे स्मारक स्थल एरिना (देवास) पुलिस लाइन टेकरी के पास पहुंचकर पुष्पांजलि कार्यक्रम में पहुंचकर इस गंगा जमुनी तहजीब के साक्षी बने।

ब्रेल लिपि से पढ़कर उच्च पदों पर आसीन है दृष्टिहीन बालिकाएं

देवास/मोहन वर्मा। शहर में विगत पचास वर्षों से चल रहे दृष्टिहीन कन्या शाला से विगत वर्षों में ब्रेल लिपि से पढ़कर1700 से अधिक बालिकाएं निकली है और उनमें से कई रेल्वे, बैंक और कालेज में प्रतिष्ठित पदो पर आसीन हैं। दृष्टिहीन कन्या शाला के संरक्षक बलजीत सिंह सलूजा विगत 45 से अधिक वर्षों से संस्था से जुड़े हैं। सलूजा बताते है कि यहां स्कूल औरआवासीय छात्रावास है जिसमें कक्षा 01 से 08 तक दृष्टिहीन बालिकाओं का स्कूल भी है और आगे की पढ़ाई के लिए बालिकाएं चिमनाबाई स्कूल पढ़ने जाती हैं। प्राचार्य सीमा सोनी के अनुसार यहां निवासरत 41 से अधिक बालिकाओं को घर की तरह रखा जाता है और उनके सर्वागीण विकास के लिए ब्रेल लिपि की शिक्षा के अलावा संगीत,खेलकूद कम्प्यूटर शिक्षा जैसी गतिविधियां भी संचालित की जाती है।बालिकाओं को ब्रेल लिपि की शिक्षा देने वाली शारदा चौधरी विगत 38 वर्षों से यहां से जुड़ी है।

दादर स्कूल फॉर ब्लाइंड से ब्रेल लिपि में डिप्लोमाधारी चौधरी मैडम कहती हैं हमारे यहां की बालिकाएं अच्छे वेतनमान पर रेल्वे, बैंक में,स्कूल कॉलेज में अध्यापन कर रही है,और अच्छे वेतनमान के साथ पारिवारिक जीवन जी रही है। चुकि ब्रेल लिपि बहुत नाजुक होती है इसलिए आठ वर्ष की उम्र के बाद यह सिखाई जाती है।

पुलिस कर रही हादसे की जांच, हादसे के वक्त बस में 20 यात्री थे सवार

पाथाखेड़ा चौकी के पास तेज गति से चल रही यात्री बस पलटी, 15 घायल, घोड़ाडोंगरी अस्पताल में इलाज जारी

बैतूल। जिले के पाथाखेड़ा में शुक्रवार की सुबह एक यात्री बस अनियंत्रित होकर पलट गई। यहां गनीमत यह रही कि हादसे में किसी को गंभीर चोट नही आई, अन्यथा बड़ा हादसा भी हो सकता था। हादसा पाथाखेड़ा पुलिस चौकी के पास बस स्टैंड मोड के पास हुआ है। सभी घायलों को घोड़ाडोंगरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती किया गया हैं। जहां घायलों का उपचार खबर लिखे जाने तक जारी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार सुबह 7.30 बजे के करीब एनपी ट्रांसपोर्ट कंपनी की 51 सीटर यात्री बस क्रमांक एमपी. 48, पी-1122 सुबह यात्रियों को भरकर सारणी से बैतूल की ओर आ रही थी। जज्यादातर यात्री पाथाखेड़ा बस स्टैंड से बैठे थे, तभी बस स्टैंड मोड के आगे, पुलिस चौकी के नजदीक बस अचानक अनियंत्रित हो गई और पलट गई। बस पलटने से दरवाजा नीचे दब गया, जिससे यात्रियों को खिडक़ी से बाहर निकाला गया। इस हादसे में 15 यात्री घायल हो गए। जब यह हादसा हुआ, तब बस में करीब 20 यात्री सवार थे। सवारों में ज्यादातर मजदूर थे। बताया जा रहा है कि यह मजदूर कालीमाई में एक शादी समारोह में खाना बनाने के लिए जा रहे थे। यात्रियों ने बस हादसे को चालक की लापरवाही के कारण होना बताया है। सभी घायलों को घोड़ाडोंगरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती किया गया हैं। जँहा घायलो की हालात सामान्य बताई जा रही हैं। फिलहाल पुलिस हादसे की जांच कर रही हैं। सारणी थाना प्रभारी देवकरण डेहरिया ने बताया कि प्रथम दृष्टया बस चालक की लापरवाही सामने आ रही है, पुलिस हादसे की बारीकी से जांच कर रही है, यदि चालक दोषी पाया जाता है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

हादसे में यह हुए घायल ...

हादसे में 15 यात्री घायल हुए हैं, जिनमें अंजना पति सुनील बहादुर (50) निवासी मछली काटा सारणी, जयंती पति सुरेश आमझरे (55) निवासी मछली काटा, सारणी, माही पिता सुंदरलाल (22) निवासी सुपर एफ सारणी, बिंदिया पति रामप्रसाद डहारे (48 वर्ष), निवासी मछली काटा सारणी, लक्ष्मी पति इंदल आमझरे (52) निवासी मछली काटा सारणी, लक्ष्मीपति राजू डोमने (45) निवासी मछली काटा सारणी, निशा पति धर्मेंद्र महवे (20) निवासी मछली काटा सारणी, पूजा पति मुकेश (30) निवासी थाना बैतूल बाजार, नीला मंडल पति शिबू मंडल (40) निवासी मछली काटा सारणी, गीता पति मुकेश आमझरे (26) निवासी मछली काटा सारणी, रानी पिता किशन भलावी (19) निवासी वार्ड क्रमांक 10 सारणी, चांदनी पिता सुकेश सलाम (17) निवासी ग्राम खेरवानी, संगीता पिता खाडला भलावी (22) निवासी वार्ड क्रमांक 10 सारणी, राहुल पिता विजेंद्र (45) निवासी कोठी बाजार, बैतूल और दुल्ला पति दिनेश डहारे निवासी मछली काटा सारणी आदि घायल हुए हैं।

मवेशियों के कोठे में लगी आग, 5 मवेशी जिंदा जले, 3 झुलसे

मुलताई क्षेत्र में बीती रात एक गांव में भीषण आग लग गई। आग मवेशियों के कोठे में लगी। इस घटना में 5 मवेशियों की जिंदा जलने से मौत हो गई, वहीं 3 बुरी तरह से झुलस गए हैं। इनका उपचार चल रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार दुनावा पुलिस चौकी के अंतर्गत आने वाले ग्राम सोनेगांव में किसान राजू रघुवंशी के खेत में बने गाय के कोठे में रात 9.40 के लगभग अचानक भीषण आग लग गई। इसकी सूचना मुलताई नगर पालिका की फायर टीम को दी गई। सूचना मिलते ही नगर पालिका की फायर टीम मुलताई से मौके पर पहुंची और बड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। आग लगने के कारण कोठे में बंधे 5 मवेशियों की जलने से मौत हो गई। वहीं 3 मवेशी बुरी तरह से झुलस गए हैं। आग कैसे लगी, इसका खुलासा नहीं हो पाया है। आग लगने और मवेशियों की मौत से किसान को लाखों रुपये का नुकसान हुआ है।

तारमखेड़ा स्थित हनुमान मंदिर में विशाल भंडारा

हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंचकर की पूजा

बैतूल/चिचोली। प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी तारमखेड़ा स्थित झोत वाले दादा हनुमान मंदिर में नववर्ष के उपलक्ष में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम हनुमान जी की मूर्ति पर चोला चढ़ा कर सुंदरकांड भजन कीर्तन किए गए। इसके पश्चात विधि विधान से पूजा अर्चना कर विशाल भंडारे की शुरुआत हुई। जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु ने पहुंचकर भंडारा प्रसादी का लाभ लिया।

बता दे कि घने जंगलों के बीच बैतूल और नर्मदापुरम जिले की सीमा से सटे शाहपुर ब्लॉक के तरामखेड़ा स्थित प्रसिद्ध जोत वाले बाबा का हनुमान मंदिर है। यहां जो भी श्रद्धालु अपनी सच्चे मन से मनोकामना करते हैं, उनका मनोकामना पूर्ण होती है। इस स्थान पर ताप्ती जलधारा निरंतर बहती रहती है। गांव में कुंड बने हुए हैं। इस मंदिर में पूरे साल धार्मिक आयोजन होता है। मंदिर समिति से जुड़े विशाल ठाकुर सिंह ठाकुर ने बताया कि नववर्ष पर निरंतर 19 वर्षों से विशाल भंडारे का आयोजन किया जाता है। जिसमें पूरी श्रद्धाभाव से भक्त प्रसादी ग्रहण करते हैं। इस वर्ष भी लगभग 20 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने मंदिर में दर्शन करने पहुंचे हैं ।

सौरभ कचोटे के शतक से ईगल क्लब भौरा की जीत

बैतूल। भौरा नगर के महात्मा गांधी मैदान में चल रहे टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट के तहत शुक्रवार को ईगल क्रिकेट क्लब भौरा और कुंडी इलेवन के बीच खेले गए रोमांचक मुकाबले में ईगल क्लब ने 66 रनों से धमाकेदार जीत दर्ज की। कुंडी इलेवन ने टॉस जीतकर ईगल क्लब को पहले बल्लेबाजी करने का न्योता दिया। ईगल क्लब के सलामी बल्लेबाज सौरभ कचोटे ने मैदान पर तूफानी अंदाज में खेलते हुए महज 36 गेंदों पर 106 रनों की विस्फोटक पारी खेली, जिसमें 12 छक्के और 6 चौके शामिल थे। उनकी शानदार पारी के दम पर ईगल क्लब ने निर्धारित आठ ओवर में 138 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी कुंडी इलेवन की शुरुआत लडख़ड़ाती रही और ईगल क्लब के गेंदबाजों ने उन पर शुरू से दबाव बनाए रखा।

दानदात्री मां जयवंती की 58वीं पुण्यतिथि मनाई

छात्रवृत्ति वितरण के साथ किया किया गया पुण्य स्मरण

बैतूल। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस जयवंती हाक्सर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैतूल में दानदात्री मां जयवंती की 58 वीं पुण्यतिथि पर पूर्व सांसद सुभाष आहूजा, जभास अध्यक्ष घनश्याम मदान, जभास सदस्य ऋतु खंडेलवाल, अतीत पवार, विवेक शर्मा, नीलेश गिरि गोस्वामी, कुंवरलाल नागले, अभिषेक जैन, समाजसेवी हेमंत रावत, हेमलता कुंभारे, प्रशांत गर्ग, सहित महाविद्यालय के पूर्व प्राध्यापकगणों एवं महाविद्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा मां जयवंती को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए तथा उनकी गरिमामयी उपस्थिति में सर्वोत्कृष्ट विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। ज्ञातव्य है कि जिले के अग्रणी महाविद्यालय हेतु दानदात्री मां जयवंती द्वारा 16 एक? भूमि दान करने के साथ ही उनकी वसीयत अनुसार भौतिक शास्त्र, संस्कृत और वाणिज्य के सर्वोत्कृष्ट विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष उनकी पुण्यतिथि पर छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है। सत्र 2024-25 हेतु भौतिकीशास्त्र के लिए गीतिका साहू, ज्योति सातपूते, रश्मि देशमुख, संस्कृत के लिए दिव्यान्शी विश्वकर्मा, विजय माहोरे, साधना तथा वाणिज्य के लिए अजय भूसुमकर को जयवंती छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ मीनाक्षी चौबे ने अपने उद्बोधन में मां जयवंती की जीवन यात्रा पर प्रकाश डालते हुए महाविद्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से उनकी आशाओं और आकांक्षाओं के अनुरूप पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा के साथ दायित्वों का निर्वहन करने का आह्वान किया गया। जभास अध्यक्ष घनश्याम मदान ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि मां जयवंती के पुण्य संकल्प के कारण बैतूल जिले के सुदूर क्षेत्रों के विद्यार्थियों को उच्च अध्ययन का अवसर प्राप्त हो सका और अनेक क्षेत्रों में देश और प्रदेश में जिले को महत्वपूर्ण पहचान दिला पाये। पूर्व प्राचार्य डॉ.खेमराज मगरदे द्वारा अपने उद्बोधन में महाविद्यालय की जीवन यात्रा में मां जयवंती के योगदान को याद किया गया। कार्यक्रम के उपरांत महाविद्यालय की ईको क्लब की संयोजक डॉ अर्चना सोनारे के मार्गदर्शन में अतिथियों द्वारा पौधा रोपण किया गया, जिसमें समस्त अतिथिगयों सहित डॉ.खेमराज मगरदे, डॉ.अलका पांडे, डॉ.मीना डोनीवाल डॉ.यशपाल मालवीय, प्रो.अशोक दाभाडे, प्रो.अशोक कदवाने सहित महाविद्यालय के समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपनी सहभागिता दी। कार्यक्रम का संचालन प्रो. राकेश कुमार पवार एवं संतोष पवार द्वारा किया गया।

कुंभ जाने के लिए बैतूल-आमला से भी मिलेगी ट्रेन

बैतूल। नागपुर से प्रयागराज कुंभ मेला स्पेशल ट्रेन 26 जनवरी से शुरू होगी। इस ट्रेन का स्टॉपेज बैतूल और आमला स्टेशन पर भी होगा।

पूर्व यातायात निरीक्षक अशोक कटारे ने बताया यह ट्रेन नागपुर से 26 जनवरी एवं 5, 9 एवं 23 फरवरी को रवाना होगी। ट्रेन का आमला में दोपहर 1.13 बजे और बैतूल में 1.58 बजे पहुंचेगी। ट्रेन का स्टॉपेज दो मिनट का होगा। यह ट्रेन दूसरे दिन रात 2.35 बजे प्रयागराज पहुंचेगी इसके बाद अपने गंतव्य दानापुर तक जाएगी। वापसी में यह ट्रेन 27 जनवरी 6,10 एवं 24 फरवरी को आएगी। प्रयागराज से यह ट्रेन रात 11.30 बजे प्रस्थान करेगी, बैतूल अगले दिन दोपहर 4.18 बजे पहुंचेगी।, आमला में यह ट्रेन 4.40 बजे पहुंचेगी। इस ट्रेन का नागपुर आगमन 7.30 बजे होगा। इस ट्रेन में एसी टू टियर, एसी 3 टियर, स्लीपर क्लास एवं जनरल की बोगियां रहेंगी।

नर्मदा परियोजना की मंजूरी पर माना आभार

देवास। वरिष्ठ कांग्रेस नेता पं. रितेश त्रिपाठी द्वारा नर्मदा परियोजना की मंजूरी होने पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें उन्होंने पत्रकार बंधुओं का सम्मान कर आभार व्यक्त किया। सर्वप्रथम सावित्री बाई फूले के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। इस अवसर पर नवीन प्रेस क्लब अध्यक्ष, सचिव एवं कार्यकारिणी सदस्यों का पुष्पमाला से स्वागत कर शुभकामनाएं दी। पं. त्रिपाठी ने बताया कि नर्मदा परियोजना की मंजूरी में किए गए प्रयास में प्रेस जगत को सहयोग हेतु धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया एवं भविष्य में देवास में नवीन शासकीय मेडिकल कॉलेज, मेट्रो ट्रेन एवं अन्य जन हितेषी मुद्दों पर प्रेस जगत से सहयोग की अपेक्षा की। कार्यक्रम में शिवनारायण हाड़ा, गुलाबसिंह, दीपेश कानूनगो, एजाज शेख, जितेन्द्रसिंह मोंटू, चंद्रपालसिंह सोलंकी, जितेन्द्रसिंह गौड़, दिलीप परमार, गजराजसिंह, जगदीशसिंह टुटेजा, धर्मेन्द्र मिश्रा, युसूफ पटेल, साधना प्रजापति, पवन चौधरी, विजयसिंह चौहान, मोहित शर्मा, अतुलसिंह, दीपेश हरोड़े, गुरमितसिंह, ब्रजराजसिंह, संजू चौधरी, ईश्वरसिंह अकालिया, धर्मेन्द्र कुशवाह, मनोज त्रिपाठी, गौरव राठौर आदि का सहयोग रहा

त्रैमासिक और अर्धवार्षिक परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं का अवलोकन विषय शिक्षकों के साथ अनिवार्य करें : जेडी श्रीमती दुबे

बेहतर परीक्षा परिणाम प्राप्त करने संस्था प्रमुखों की कार्यशाला आयोजित

बैतूल। शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करते हुए बेहतर परीक्षा परिणाम प्राप्त करने के उद्देश्य से नर्मदापुरम संभाग संयुक्त संचालक लोक शिक्षण श्रीमती भावना दुबे की अध्यक्षता में जिले के शिक्षा विभागीय हाईस्कूल एवं उच्च माध्यमिक शालाओं के संस्था प्रमुखों की कार्यशाला आयोजित की गई। शुक्रवार को स्थानीय महारानी लक्ष्मीबाई शास. कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के सभाकक्ष में शिक्षा विभागीय विकासखंड आमला, बैतूल, मुलताई एवं प्रभात पट्टन स्थित शासकीय हाई स्कूल, उमावि, विभागीय कस्तूरबा गांधी एवं अन्य छात्रावास अधीक्षक, मॉडल स्कूल के प्राचार्य, प्रभारी प्राचार्यों की बैठक में गुणवत्ता उन्नयन को लेकर गत वर्ष के परीक्षा परिणाम के साथ त्रैमासिक और अर्धवार्षिक परीक्षा परिणाम को सम्मिलित करते हुए गहन विश्लेषण किया गया। श्रीमती दुबे द्वारा संस्था प्रमुखों को निर्देशित किया कि त्रैमासिक और अर्धवार्षिक परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं का अवलोकन अनिवार्य रूप से विषय शिक्षकों के साथ किया जाए। किसी भी परीक्षा परिणाम में अप्रत्याशित कमी या वृद्धि की ओर ध्यान दिया जाए। शिक्षक और परीक्षार्थियों, किसी को भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है बल्कि यदि गंभीरता से प्रयास किए जाएं तो अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य होगी।

कार्यशाला में उन्होंने बच्चों की शाला में नियमित उपस्थिति, नियमित अध्ययन-अध्यापन, अभ्यास पर जोर, बच्चों के साथ सहज भाव से चर्चा, बच्चों के छोटे-छोटे ग्रुप बनाकर, इन ग्रुप की जिम्मेदारी शिक्षकों को सौंपी जाना, इत्यादि उपाय के माध्यम से गुणवत्ता में वृद्धि कर पाने संबंधी टिप्स दिए। संयुक्त संचालक कार्यालय में उपसंचालक श्रीमती ज्योति प्रहलादी, संभागीय कार्यालय अंतर्गत एकेडमिक नोडल अधिकारी जसवंत सिंह चौधरी द्वारा विशेष रूप से कार्यशाला में उपस्थित रहकर प्राचार्यों से समक्ष में चर्चा कर उनके द्वारा शाला में अपनाई जा रही रणनीति के बारे में जानकारी ली गई।

विद्यार्थियों से उनके परिणाम के बारे में लक्ष्य ज्ञात करें

जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. अनिल सिंह कुशवाहा द्वारा बच्चों के शैक्षणिक स्तर अनुसार चिन्हित करते हुए उसी के अनुरूप अध्यापन किए जाने पर जोर दिया गया। श्रीमती दुबे द्वारा प्राचार्यों का आह्वान किया गया कि वे विद्यार्थियों से उनके परिणाम के बारे में लक्ष्य ज्ञात करें, विषय शिक्षकों, कक्षा शिक्षकों से लक्ष्य प्राप्त करें और उनके साथ बैठकर अपनी शाला के लिए परीक्षा परिणाम का लक्ष्य निर्धारित करें, इस लक्ष्य का अवलोकन, प्रतिदिन छात्र-छात्राओं, विषय शिक्षकों एवं प्राचार्य द्वारा भी किया जाता रहे ताकि वे अपने संकल्प से संबद्ध बने रहें, इससे मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी होगा जो उन्हें प्रेरित करेगा।

कार्यशाला में अनुपस्थित रहने वाले प्राचार्य, प्रभारी प्राचार्य एवं बिना अनुमति के प्रतिनिधि भेजने वाले शालाओं के प्राचार्यों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी करने के निर्देश संयुक्त संचालक महोदया द्वारा दिए गए।

कार्यशाला में विभागीय अधिकारी सुबोध शर्मा, सहायक संचालक भूपेंद्र वरकडे द्वारा गुणवत्ता उन्नयन के अतिरिक्त विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रगति के संबंध में भी चर्चा की गई।

आभार व्यक्त करते हुए श्री वरकडे ने संयुक्त संचालक को आश्वस्त किया कि प्राचार्यों के साथ मिलकर जिला कार्यालय गत वर्ष की तुलना में परीक्षा परिणाम में कम से कम 10 प्रतिशत की वृद्धि करने के लिए पूरी तरह प्रयासरत रहेगा। विकासखंड शिक्षा अधिकारी एनके प्रहलादी, महेंद्र प्रजापति, सक्षम बारमाते, आईके मालवीय, वरिष्ठ प्राचार्यगण, प्रभारी प्राचार्यगण आदि उपस्थित रहे।

घड़ियाल अभ्यारण पर विशेष

के.के. जोशी

80 प्रतिशत से अधिक घड़ियालों का घर है मध्यप्रदेश

वन्य जीवन से समृद्ध मध्यप्रदेश बाघ प्रदेश, चीता प्रदेश, तेंदुआ प्रदेश के साथ अब घड़ियाल प्रदेश भी है। यहाँ गिद्धों का आदर्श रहवास है। देश में घड़ियालों की संख्या 3044 है और उसमें से मध्यप्रदेश में 2456 है। इस प्रकार देश में 80 प्रतिशत से अधिक घड़ियालों का घर है मध्यप्रदेश। यहाँ पर डॉल्फिन का भी रहवास है। मध्यप्रदेश में अथक प्रयासों से घड़ियालों के संरक्षण का कार्य किया गया। उनके प्राकृतिक रहवास को सुरक्षित बनाया गया और अवैध शिकार पर रोक लगायी गयी। साथ ही अवैज्ञानिक मछली पकड़ने के तौर-तरीकों को बंद किया गया।

435 किलोमीटर क्षेत्र को किया चंबल घड़ियाल अभयारण्य घोषित

चंबल नदी के 435 किलोमीटर क्षेत्र को चंबल घड़ियाल अभयारण्य घोषित किया गया है। चंबल नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश की सीमा पर बहती है। नदी में घड़ियालों की वृद्धि की वजह देवरी ईको सेंटर है। इस सेंटर में घड़ियाल के अण्डे लाये जाते हैं और उनसे बच्चे निकलने के बाद उनका पालन किया जाता है। बच्चों की आयु 3 साल होने पर उन्हें नदी में छोड़ दिया जाता है। प्रतिवर्ष 200 घड़ियाल को ग्रो-एण्ड-रिलीज'' कार्यक्रम के तहत नदी में छोड़ा जाता है। स्वच्छ नदियों में रहना और नदियों को स्वच्छ रखना घड़ियालों की विशेषता है। इसी वजह से कई राज्यों से इसकी माँग की जाती है। चंबल नदी के घड़ियाल प्रदेश एवं देश की नदियों की शान बढ़ा रहे हैं। जलीय जीव घड़ियाल नदियों का ईको सिस्टम मजबूत करते हैं।

देश में वर्ष 1950 और 1960 के दशक के बीच घड़ियालों की आबादी में 80 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आयी। भारत सरकार ने 1970 के दशक में इसे संरक्षण प्रदान किया। संरक्षण समूहों ने प्रजनन और पुनः प्रवेश कार्यक्रम शुरू किये। हालांकि, वर्ष 1997 और वर्ष 2006 के बीच घड़ियालों की आबादी में गिरावट आयी।

घड़ियाल को गेवियलिस गैंगेटिकस, जिसे गेवियल या मछली खाने वाला मगरमच्छ भी कहा जाता है। वयस्क मादा घड़ियाल 2.6 से 4.5 मीटर (8 फीट 6 इंच से 14 फीट 6 इंच) लम्बी होती है और नर घड़ियाल 3 से 6 मीटर (9 फीट 10 इंच से 19 फीट 8 इंच) लम्बे होते हैं। वयस्क नर के थूथन के अंत में एक अलग सिरा होता है, जो घड़ा नामक मिट्टी के बर्तन जैसा दिखता है, इसलिये इसका नाम घड़ियाल पड़ा। घड़ियाल अपने लम्बी, संकरी थूथन और 110 आपस में जुड़े तीखे दाँतों की वजह से मछली पकड़ने में सहायक होते हैं।

राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य की स्थापना के लिये 30 सितम्बर, 1978 में भारत सरकार की प्रशासनिक स्वीकृति मिली थी। घड़ियालों का कुनबा बढ़ाने के लिये मुरैना में चंबल घड़ियाल सेंक्चुरी के देवरी घड़ियाल सेंटर में हेचिंग सेंटर शुरू किये जायेंगे। इन नदियों के किनारे बसे 75 गाँव के लोगों को जागरूक किया गया है। गाँव के 1200 लोग घड़ियाल मित्र के रूप में वन विभाग के साथ काम कर रहे हैं।

पंजाब में वर्ष 1960-70 के बाद से वहाँ की नदियों से घड़ियाल गायब हो गये थे। चंबल नदी के देवरी घड़ियाल सेंटर से वर्ष 2017 में घड़ियाल पंजाब भेजे गये थे। वर्ष 2018 में 25 घड़ियाल सतलुज नदी के लिये भेजे गये और वर्ष 2020 में व्यास नदी के लिये 25 घड़ियाल भेजे गये थे।

राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य

चंबल नदी के पारिस्थतिकी तंत्र को सुरक्षित रखने की दिशा में राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य बनाया गया था। तीन राज्यों में स्थित इस सेंचुरी का मुख्य आकर्षण घड़ियाल और दुर्लभ पक्षी 'स्कीमर' है। यह गंगेटिक में पायी जाने वाली डॉल्फिन, घड़ियाल, मगरमच्छ और साफ पानी के कछुओं के लिये प्रसिद्ध है।

वर्ष 1979 में इसे राष्ट्रीय अभयारण्य घोषित किया गया था। यह तीन राज्यों मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान में फैला हुआ है। अब तक प्रवासी एवं यहाँ रहने वाले पक्षियों की 290 से अधिक प्रजातियों की पहचान की जा चुकी है। इस अभयारण्य का मुख्य आकर्षण घड़ियाल और दुर्लभ पक्षी इण्डियन स्मीकर'' है। यह दुर्लभ पक्षी गर्मियों के मौसम में यहाँ अपना घरोंदा बनाते हैं। देश में अपनी कुल आबादी के करीब 80 फीसदी स्मीकर चंबल सेंचुरी में प्रवास करते हैं।

हार-जीत खेल का हिस्सा, खेलों में सहभागिता आवश्यक : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी में पश्चिम क्षेत्र इंटर विश्वविद्यालय (महिला) शतरंज टूर्नामेंट का किया शुभारंभ

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि शिक्षा और स्वास्थ्य का स्तर ऊंचा उठाकर ही देश को तरक्की के पथ पर आगे बढ़ाया जा सकता है। खेल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि हार-जीत खेल का हिस्सा है, खेलों में सहभागिता आवश्यक है। उन्होंने सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन छात्रों के आत्मविश्वास और कौशल को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी और एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज के तत्वावधान में पश्चिम क्षेत्र इंटर यूनिवर्सिटी (महिला) शतरंज टूर्नामेंट (2024-2025) का सैम यूनिवर्सिटी परिसर भोपाल में माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण भी किया। टूर्नामेंट में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश सहित 60 विश्वविद्यालयों की 255 महिला खिलाड़ी सहभागिता करेंगी। सैम समूह के अध्यक्ष डॉ. हरप्रीत सिंह सलूजा, कुलपति डॉ. एन. के. तिवारी सहित अन्य प्रतिनिधि उपस्थित रहे। डॉ. तिवारी ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की जानकारी दी।

एमपी के आईएएस आकाश त्रिपाठी को केंद्र में नई जिम्मेदारी

ऊर्जा विभाग में एडिशनल सेक्रेटरी बनाया; पर्सनल वजह से लौटेंगी आईएएस रूही खान

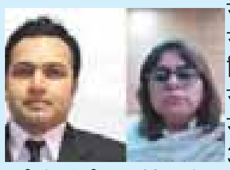

भोपाल (नप्र)। एमपी कैडर के आईएएस अधिकारी आकाश त्रिपाठी को केंद्र सरकार ने नई जिम्मेदारी सौंपी है। त्रिपाठी को ऊर्जा विभाग में एडिशनल सेक्रेटरी बनाया गया है। प्रमुख सचिव स्तर के एक अन्य आईएएस फैज अहमद किदवई को भी केंद्र में नई जिम्मेदारी सौंपी गई है।वहीं, दिल्ली में स्वास्थ्य विभाग में पदस्थ आईएएस अधिकारी रूही खान अपने व्यक्तिगत कारणों से भोपाल लौटने वाली हैं। केंद्रीय कार्मिक और प्रशिक्षण मंत्रालय ने रूही खान की वापसी को मंजूरी दे दी है। प्रमुख सचिव स्तर के 1998 बैच के आईएएस अधिकारी आकाश त्रिपाठी एमपी में इंदौर कलेक्टर रहने के साथ विभिन्न विभागों में उपसचिव और सचिव के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। त्रिपाठी अक्टूबर 2022 से भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन मंत्रालय में माय जीओवी के सीईओ के तौर पर काम कर रहे हैं। मोहन यादव सरकार ने केंद्र सरकार को पत्र लिखकर आकाश त्रिपाठी को एमपी वापस भेजने का आग्रह किया है। ऐसे में माना जा रहा था कि आकाश त्रिपाठी इसी माह एमपी वापस लौट सकते हैं लेकिन इस बीच तीन जनवरी को केंद्रीय कार्मिक और प्रशिक्षण मंत्रालय द्वारा पांच आईएएस की नई पदस्थापना के आदेश जारी किए गए हैं।इसमें एमपी कैडर के प्रमुख सचिव स्तर के आईएएस अफसर फैज अहमद किदवई को भी नई जिम्मेदारी सौंपी गई है। किदवई अभी कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय में एडिशनल सेक्रेटरी हैं और उन्हें मिनिस्ट्री आफ सिविल एविएशन में एडिशनल सेक्रेटरी का जिम्मा सौंपा गया है।दूसरी ओर राज्य प्रशासनिक सेवा से आईएएस पद पर प्रमोट होने वाली 2013 बैच की आईएएस अधिकारी रूही खान अपने व्यक्तिगत कारणों की वजह से केंद्र में प्रतिनियुक्ति अवधि खत्म होने के पहले एमपी लौटने वाली हैं। केंद्रीय कार्मिक और प्रशिक्षण मंत्रालय ने इसे मंजूरी देते हुए उन्हें पैरेंटल कैडर मध्यप्रदेश लौटने की सहमति दे दी है। रूही खान भी जल्दी ही भोपाल में मंत्रालय में अपनी आमद देने वाली हैं। खान अभी दिल्ली में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में उपसचिव के पद पर पदस्थ हैं।

पत्नी नहीं बच सकती... सुनकर पति को आया हार्ट अटैक, फिर दोनों ने साथ ही छोड़ी दुनिया

एक ही चिता पर हुआ दोनों का अंतिम संस्कार, लोगों की आंखें नम

गुना (नप्र)। गुना जिले की तहसील बमोरी के ग्राम धनोरिया में पति और पत्नी का निधन एक ही समय पर हुआ। धनोरिया में रहने वाले 70 वर्षीय कल्याण सिंह धाकड़ उर्फ कालूराम की पत्नी भागवती बाई कुछ समय से बीमार चल रही थी। सुबह घर वाले एक साथ बैठकर बात कर रहे थे कि इनका अंतिम समय एक-दो दिन में आने वाला है। यह सुनकर उनके पति कल्याण सिंह बेहोश होकर गिर पड़े, जिन्हें गुना अस्पताल में भर्ती कराया गया। उन्हें हार्ट अटैक आया था और दोपहर करीब एक बजे उनका निधन हो गया।

गांव से फोन आया पत्नी भी चल बसी-इसी समय गांव से फोन आया कि उनकी पत्नी भी चल बसीं। दोनों ने एक ही समय पर प्राण त्यागे। इसके बाद परिवार वालों ने एक ही चिता पर दोनों पति-पत्नी का अंतिम संस्कार किया। एक साथ दोनों की अंतिम यात्रा देखकर हर किसी की आंखें नम थीं।गांव के लोगों के बीच यहीं बात हो रही थी कि दोनों में इतना प्रेम था कि एक साथ ही दुनिया से विदा हुए।

केंद्रीय मंत्री शिवराज ने राज्यों के ग्रामीण विकास मंत्रियों के साथ मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा बैठक की

योजनाएं सिर्फ योजना नहीं, लोगों की जिंदगी बदलने का है अभियान

ग्रामीण विकास मंत्रालय वर्ष 2025 को गरीबी मुक्त गांव बनाने के लिए कृतसंकल्प है : चौहान

नईदिल्ली। केंद्रीय ग्रामीण विकास व कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज नई दिल्ली में राज्यों के ग्रामीण विकास मंत्रियों के साथ मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा बैठक की। इस बैठक में ग्रामीण विकास सचिव श्री शैलेश कुमार सिंह और मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मंत्रालय के विभिन्न कार्यों की समीक्षा करते हुए श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि यह नया साल हमारे ग्रामीण भारत और गांव के भाई-बहनों के लिए सुख समृद्धि और ऋद्धि सिद्धि लाये और हम उनकी जिन्दगी में हम खुशिओं के रंग भर पायें। ग्रामीण भारत के विकास के बिना विकसित भारत नहीं बन सकता है।

हमारा उद्देश्य तो भारत को वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाना है, जो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का विज़न है। राज्यों के बिना केंद्र काम नहीं कर सकता है। मैं अपने आप को इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए समर्पित करता हूं। योजनाएं सिर्फ योजना नहीं लोगों की जिंदगी बदलने का अभियान है। ग्रामीण विकास मंत्रालय वर्ष 2025 को गरीबी मुक्त गांव बनाने के लिए कृतसंकल्प है। गांव में कोई बेरोजगार न हो और उनकी न्यूनतम रोजमर्रा की आवश्यकताओं को ठीक ढंग से पूरा कर पायें। हम सब मिलकर इसको पूरा कर सकते हैं और इस अवधारणा को साकार करने के लिए हमें कई काम करने की ज़रूरत है।

पीथमपुर में जहरीला कचरा जलाना अमानवीय : भाकपा

भोपाल । भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने मध्य प्रदेश के औद्योगिक क्षेत्र पीथमपुर में यूनियन कार्बाइड का जहरीला कचरा जलाने को अनुचित और अमानवीय बताते हुए सरकार से इस जहरीले कचरे को अमेरिका भेजने हेतु प्रभावी कार्रवाई करने की मांग की है।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के मध्य प्रदेश राज्य सचिव कॉमरेड अरविन्द श्रीवास्तव और राज्य सह सचिव कॉमरेड शैलेन्द्र शैली ने यहां जारी एक विज्ञप्ति में कहा कि मध्य प्रदेश सरकार द्वारा गैर जिम्मेदाराना ढंग से यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे को औद्योगिक क्षेत्र पीथमपुर में जलाने के लिए भेजना अनुचित और अमानवीय है।इस कचरे को भारत से बाहर ले जाकर नष्ट करना अमेरिका की सरकार और डॉव केमिकल्स कम्पनी की जिम्मेदारी है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने पीथमपुर की जनता के साथ अपनी एकजुटता व्यक्त कर मध्य प्रदेश सरकार से पीथमपुर की जनता को विश्वास में लेकर इस जहरीले कचरे को तत्काल ही अमेरिका भेजने हेतु प्रभावी कार्रवाई करने की घोषणा करने की मांग की है।

भाजपा में भ्रष्टाचारियों का जखीरा आपस में लड़ रहा है : जीतू पटवारी

कचरा डिस्पोजल को लेकर चल रहा है भूमाफिया का खेल

भोपाल। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी ने आज अपने निवास पर पत्रकारों से चर्चा करते हुये कहा कि प्रदेश और देश में जनता ने भाजपा पर भरोसा किया। पिछले एक महीने से भ्रष्टाचार का जो आलम है, इस तरीके से पूरे देश में मध्यप्रदेश का चेहरा काला हो रहा हैं, भ्रष्टाचार के कोढ़ से मप्र ग्रसित हो गया है। हमने एक माह पहले से आग्रह किया कि युनियन काबाईड का कचरा है, इसके पीछे भूमाफिया का जो खेल है, कचरा डिस्पोजल को लेकर जो बाते सामने आयी हैं, उससे सरकार को बचना चाहिए था, लेकिन सरकार उससे नहीं बच सकी। आनन-फानन, रातों-रात कचरे को यहां से वहां डंप किया गया, रात्रि में दो बजे पता चला कि कचरा जायेगा, कचरा पहुंचाने की किसी को कानों कान खबर नहीं लगी, ऐसा क्यों?

श्री पटवारी ने कहा कि प्रदेश के काबिना मंत्री कैलाश विजयवर्गीय जो धार के प्रभारी मंत्री हैं वे कहते हैं हमें पता ही नहीं चला। इंदौर के प्रभारी मंत्री स्वयं मुख्यमंत्री मोहन यादव जी हैं, क्या हालात बन गये हैं कि लोग मोहन यादव को जगाने के लिए खुद को आग के हवाले कर रहे हैं। इतनी निर्लज्ज और निकम्मी सरकार है ये कि लोग खुद को आग लगा रहे हैं। ये बहुत ही दुख का विषय है। जैसा मैंने कल इंदौर में सुमित्रा महाजन जी से मुलाकात कर आग्रह किया था कि जब तक इसका टेक्नीकल सत्यापन नहीं होता है, कचरे को रोकना चाहिए। श्री पटवारी ने कहा कि कल जिस तरीके से मोहन यादव और कैलाश विजयवर्गीय का बयान आया कि 25 साल पहले कचरे का जो जहरीला तत्व था, वह समाप्त हो गया, क्या ये वैज्ञानिक है, ज्ञाता हैं, आखिर क्या है? इस विधा को जानने वाले तो कह रहे हैं कि इससे लोगों में केंसर का खतरा बड़ेगा। उन्होंने कहा कि रामकी कंपनी के 10 किलोमीटर के दायरे में मैं स्वयं गया वहां फसलें जहां पांच क्विंटल होती थी, वहां एक क्विंटल हो रही हैं, हर गांव में लोग कैंसर एवं अन्य शारीरिक समस्या से ग्रसित हैं। पानी पीने योग्य नहीं है और यषवंत सागर बांध 30 किलोमीटर है। जहां इंदौर का कैचमंट एरिया आता है, उसका पानी पूरा इंदौर शहर पीता है वहां इसका असर होने लगा है। श्री पटवारी ने कहा कि भाजपा पागल हाथी हो गई है, किसी को कुछ नहीं समझ रही, केवल भ्रष्टाचारी हो गई है भाजपा, भ्रष्टाचारियों का जखीरा आपस में लड़ रहा है, उन्हें जो मत मिले उसमें इतने मदमस्त हो।

टैंकर ने ऑटोरिक्शा को टक्कर मारी, दो की मौत

सीधी (नप्र)। सीधी से 60 किमी दूर पड़रिया में स्कूल के पास एक तेज रफ्तार 18 चक्के के टैंकर ने सामने से आ रहे ऑटोरिक्शा को टक्कर मार दी। भिड़ंत इतनी जोरदार थी कि ऑटो पिचक गया। हादसे में दो लोगों की मौके पर मौत हो गई, जबकि 7 लोग घायल हैं। इन्हें रीवा के संजय गांधी अस्पताल रेफर किया गया है। हादसा शुक्रवार शाम 4 बजे का है। अभी मृतकों और घायलों के नाम-पते की जानकारी नहीं मिली है। जहां हादसा हुआ है, वह इलाका बहरी थाने के तहत आता है।

डंपर छोड़कर चालक फरार

बताया जा रहा है कि टैंकर सिंगरौली की तरफ जा रहा था, जबकि ऑटोरिक्शा सीधी की तरफ आ रहा था। बहरी थाना प्रभारी राकेश बैस ने बताया कि ड्राइवर टैंकर छोड़कर फरार हो गया। उसकी तलाश की जा रही है।

एम्स भोपाल में 'बेहतर स्वास्थ्य के लिए महिलाओं की आर्थिक शक्ति' विषय पर व्याख्यान आयोजित

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में, संस्थान ने 3 जनवरी 2025 को सावित्रीबाई फुले भवन, नर्सिंग कॉलेज में 'बेहतर स्वास्थ्य के लिए महिलाओं की आर्थिक शक्ति' विषय पर एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और स्वास्थ्य सुधार के आपसी संबंधों पर केंद्रित था, जिसमें यह दर्शाया गया कि आर्थिक स्वतंत्रता कैसे व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकती है। इस मौके पर, प्रो. सिंह ने अपने संबोधन में कहा, 'महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को मजबूत करना एक स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक है। बेहतर स्वास्थ्य परिणामों के लिए बदलाव की शुरुआत स्कूल स्तर से ही होनी चाहिए।' उनकी टिप्पणियों ने लैंगिक समानता के माध्यम से दीर्घकालिक सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देने के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप और मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता पर जोर दिया।

अतिथि व्याख्यान डॉ. दिलीप सिंह, आईईएस, निदेशक, दूरसंचार विभाग, संचार मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिया गया। उन्होंने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुंच के बीच गहरे संबंध को समझाते हुए बताया कि आर्थिक स्वतंत्रता से महिलाएं नियमित स्वास्थ्य जांच, निवारक देखभाल और परिवार नियोजन जैसे निर्णयों में अधिक स्वतंत्रता और जागरूकता के साथ आगे बढ़ सकती हैं। कार्यक्रम में सहभागिता बढ़ाने के लिए एक एक्सटेम्पोर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें भाग लेने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन डॉ. ममता वर्मा, नर्सिंग कॉलेज की एसोसिएट प्रोफेसर और प्रभारी प्राचार्य द्वारा किया गया। प्रोफेसर (डॉ.) अमित अग्रवाल, जो कि डीन (नर्सिंग और संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान) हैं, ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की, और डॉ. सैकत दास, जो कि एसोसिएट डीन (नर्सिंग और संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान) हैं, ने आयोजन सचिव के रूप में भूमिका निभाई। इस व्याख्यान में संकाय सदस्यों, छात्र-छात्राओं और स्टाफ सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया, जिससे महिला सशक्तिकरण और स्वास्थ्य विषय पर एक सार्थक संवाद संभव हुआ।

57वीं शलाका जनजातीय चित्र प्रदर्शनी जनजातीय संग्रहालय में

भील समुदाय की युवा चित्रकार सुश्री रीता भूरिया के चित्रों की प्रदर्शनी

भोपाल । मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय द्वारा प्रदेश के जनजातीय चित्रकारों के लिए चित्र प्रदर्शनी और चित्रों की बिक्री के लिये सार्थक मंच उपलब्ध कराने की दृष्टि से प्रतिमाह 'लिखन्दरा प्रदर्शनी दीर्घा' में किसी एक जनजातीय चित्रकार की प्रदर्शनी सह विक्रय का संयोजन 'शलाका' नाम से किया जाता है। इसी क्रम में 3 जनवरी, 2025 से भील समुदाय की युवा चित्रकार सुश्री रीता भूरिया के चित्रों की प्रदर्शनी सह-विक्रय का संयोजन किया गया है। प्रदर्शनी 30 जनवरी, 2025 (मंगलवार से रविवार) तक निरंतर रहेगी।

युवा भीली चित्रकार रीता भूरिया-युवा भीली चित्रकार सुश्री रीता भूरिया का जन्म भोपाल (मध्यप्रदेश) में हुआ। पिता श्री विजय भूरिया निजी क्षेत्र में नौकरी करते हैं एवं माता श्रीमती शांता भूरिया भी भीली चित्रकला में जाना-पहचाना नाम हैं। वे प्रख्यात भीली चित्रकार पद्मश्री श्रीमती भूरीबाई की नातिन हैं। उन्हें चित्रकला का हुनर विरासत में मिला है।

सुश्री रीता ने विज्ञान विषय में स्नातक तक की शिक्षा हासिल की है। उन्हें चित्रकला का शौक बचपन से ही रहा है। उन्होंने बैंगलोर, नई दिल्ली, लखनऊ आदि शहरों में आयोजित कुछेक एकल एवं संयुक्त चित्रकला प्रदर्शनियों में भाग लिया है। उनके चित्रों में जंगली पशु-पक्षी और प्रकृति विशेष तौर पर दृष्टव्य होते हैं। वे अपनी सफलता का सम्पूर्ण श्रेय अपनी कला-गुरु अर्थात् अपनी नानी श्रीमती भूरीबाई को देती हैं।

विद्युत नियामक आयोग के अध्यक्ष पद की नियुक्ति के लिये चयन समिति गठित

भोपाल। राज्य शासन द्वारा मध्यप्रदेश विद्युत नियामक आयोग के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति के लिये पैनल का चयन करने हेतु चयन समिति का गठन किया गया है। चयन समिति के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री रूपेश चंद्र वार्ष्णेय होंगे। मुख्य सचिव, मध्यप्रदेश शासन और अध्यक्ष केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण समिति के सदस्य होंगे।

॥ मंदिरम् ॥

03

चौसठ योगिनी मंदिर, मितौली

इस मंदिर को एकत्तरसो महादेव मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, मध्यप्रदेश के मुरैना जिले में 11वीं सदी का मंदिर है। कच्छपघाट शासनकाल के दौरान निर्मित, यह भारत में सबसे अच्छी तरह से संरक्षित योगिनी मंदिरों में से एक है। मंदिर 65 कक्षों वाली एक गोलाकार दीवार से बना है, जो जाहिर तौर पर 64 योगिनियों और देवियों के लिए है और एक गोलाकार प्रांगण के केंद्र में एक खुला मंडप है, जो शिव को समर्पित है। मंदिर लगभग 100 फीट (30 मीटर) ऊंची पहाड़ी पर है। प्रवेश द्वार तक चढ़ने के लिए 100 सीढ़ियाँ हैं। यह 170 फीट (52 मीटर) की त्रिज्या के साथ गोलाकार है। जबकि इसके अंदर 65 छोटे कक्ष हैं, जिनमें से प्रत्येक में एक मंडप है जो खुला है और पिलस्टर और स्तंभों का एक अग्रभाग है। मंदिरों की अंगूठी की छत सपाट है, जैसा किशिव के केंद्रीय मंदिर की है, गोलाकार प्रांगण हाइपेथ्रल है। जो आकाश की ओर खुला है, जिसका प्रवेश द्वार एक खुला बरामदा है। कहा जाता है कि भारत का संसद भवन इसी मंदिर पर आधारित है।

पीथमपुर में प्रदर्शन कर रहे लोगों पर लाठीचार्ज

पुलिस ने वाटर कैनन से खदेड़ा, युवक ने की आत्मदाह की कोशिश, दो झुलसे

पीथमपुर (नप्र)। पीथमपुर में भोपाल की यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री के जहरीले कचरे को नष्ट करने का विरोध कर रहे लोगों पर पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर वाटर कैनन का इस्तेमाल कर उन्हें खदेड़ा। दरअसल, प्रदर्शनकारियों ने पीथमपुर के गुडलक चौराहे पर चक्काजाम कर दिया है। जिससे हाईवे पर करीब 7 किलोमीटर तक वाहन फंसे हैं।

इससे पहले पीथमपुर में ही एक अन्य जगह पर प्रदर्शन के दौरान राजकुमार रघुवंशी नाम के युवक ने अपने ऊपर पेट्रोल डालकर आत्मदाह की कोशिश की। पास ही में खड़ा राजू पटेल नाम का शख्स भी आग की चपेट में आ गया। दोनों को इंदौर में चोइथराम अस्पताल के बर्न यूनिट आईसीयू में भर्ती कराया गया है।

पीथमपुर में मुख्य धरना प्रदर्शन महाराणा प्रताप बस स्टैंड पर किया जा रहा है। जिसमें पीथमपुर बचाओ समिति, पीथमपुर रक्षा मंच, कांग्रेस, भाजपा, राठौर समाज, क्षत्रिय समाज, सेन समाज, आदिवासी समाज, ऑल ट्रेड यूनियन समेत अन्य संगठन शामिल हैं।

इसके अलावा सांवरिया मंदिर, अकोलिया चौराहा, बरदरी चौराहा, छत्रछाया गेट, आजाद चौराहा, गुडलक चौराहा, एबी रोड पर मनाल होटल के सामने स्थानीय लोग प्रदर्शन कर रहे हैं। पीथमपुर के गुडलक चौराहे पर पुलिस ने प्रदर्शन कर रहे लोगों पर लाठियां भांजी।

रामकी एनवायरो इंडस्ट्रीज जाने की कोशिश, पुलिस ने रोका- बुधवार रात को भोपाल के यूनियन कार्बाइड से करीब 337 मीट्रिक टन जहरीला कचरा 10 कंटेनर में भरकर पीथमपुर भेजा गया था। जिसे रामकी एनवायरो इंडस्ट्रीज में जलाया जाना है। कचरे को यहां नष्ट करने का विरोध कर रहे

लोगों ने रामकी एनवायरो इंडस्ट्रीज जाने की कोशिश की, पुलिस ने बैरिकेडिंग करके उन्हें रोक लिया है।

मंत्री बोले- कचरे में डरने जैसी बात नहीं, वो जल जाएगा- भोपाल गैस त्रासदी, राहत एवं पुनर्वास विभाग के मंत्री विजय शाह ने कहा कि भोपाल की यूनियन कार्बाइड का जहरीला कचरा पीथमपुर ले जाने से पहले वैज्ञानिक तरीके से सर्वे कराया। सभी के मार्गदर्शन में कचरा शिफ्ट कराया। उसमें डरने जैसी कोई बात नहीं है। वो कचरा वहां जल जाएगा। विजय शाह छिंदवाड़ा में मीडिया से बात कर रहे थे।

धरना स्थल पर पहुंचे एसपी-कलेक्टर- कलेक्टर प्रियंक मिश्र और एसपी मनोज कुमार सिंह धरना स्थल पर पहुंचे हैं। उन्होंने लोगों को समझाकर प्रदर्शन खत्म करने की अपील की है।

उन्होंने कहा कि यह मुद्दा गंभीर है। माननीय न्यायालय के निर्देश पर ही कचरा पीथमपुर लाया गया है। मध्य प्रदेश सरकार किसी भी नागरिक की जान खतरे में नहीं डालना चाहती है। कचरा अभी सिर्फ आया है, बिना प्रोसेस के यह नहीं जलाया जाएगा। प्रशासन और नागरिकों में संवाद से ही हल निकलेगा।

प्रदर्शन के दौरान आत्मदाह की कोशिश का वीडियो- पीथमपुर में यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे को जलाने का विरोध के दौरान दो युवकों ने खुद पर पेट्रोल छिड़क लिया। इस दौरान पीछे से किसी ने आग लगा दी। जिससे दोनों झुलस गए। लोगों ने आग बुझाकर उन्हें अस्पताल पहुंचाया। फिलहाल दोनों इंदौर के चोइथराम अस्पताल में भर्ती हैं।

रीवा में तेंदुए की दहशत 4 लोगों पर किया हमला

6 दिनों से भटक रही वन विभाग की टीम अधिकारी बोले- लापता हुआ तेंदुआ

रीवा (नप्र)। रीवा में 6 दिनों से वन विभाग की टीम तेंदुए की तलाश में भटक रही है, लेकिन अब तक कोई सुराग नहीं लग पाया। लिहाजा तराई गांव के लोग अब खुद ही सर्चिंग ऑपरेशन चला रहे हैं। वन विभाग का कहना है कि तेंदुआ लापता हो गया है, जरूर वह जंगल की ओर गया लगी। ग्रामीणों का कहना है कि जब तक शिकारी तेंदुआ पकड़ा नहीं जाता। तब तक हम राहत की सांस नहीं ले पाएंगे। तराई गांव में शाम ढलते ही लोग घरों में कैद हो रहे हैं। उधर, वन विभाग तेंदुए की इलाके से निकल जाने की बात कह कर पल्ला झाड़ रहा है।

थाना प्रभारी कन्हैया बघेल ने

होगा। वहीं, मच्छरदानी से तेंदुआ पकड़ने निकले पूर्व विधायक श्यामलाल द्विवेदी भी अब गांव से रवाना हो चुके हैं।

वन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि लगातार निगरानी जारी है, लेकिन तेंदुए का कोई मूवमेंट अब नजर नहीं आ रहा है। चार लोगों को घायल करने के बाद तेंदुआ कहां छुपा बैठा है, इसकी जानकारी अभी तक नहीं लग पाई है।

यूपी वन विभाग की टीम के साथ तेंदुआ पकड़ने चलाया अभियान- जानकारी के मुताबिक, उत्तर प्रदेश वन विभाग की टीम के साथ रीवा वन विभाग ने तेंदुए को पकड़ने के लिए संयुक्त रूप से भी अभियान चलाया था, लेकिन कोई सफलता हाथ नहीं

बताया कि तेंदुआ सरसों की खेत पर घात लगाकर बैठा था। हमले में चार लोग घायल हुए हैं। सभी की हालत फिलहाल स्थिर बताई जा रही है। घायलों में राम सागर कोल (55), भैरव प्रसाद कोल (50), सूरज कोल (16) बृजलाल कोल (57) शामिल है।

ग्रामीण रजनीश जायसवाल ने बताया कि अब डर तो लगता ही है। तेंदुआ हमले के बाद भी इलाके में नजर आया था। जिसकी वजह से हम ग्रामीण राहत की सांस नहीं लें पा रहे हैं।

एडिशनल एसपी विवेक लाल ने बताया कि आसपास के लोगों को सतर्क रहने की सूचना दी गई है। वन विभाग के साथ मिलकर पुलिस भी लगातार पूरे मामले में नजर बनाये हुए है।

अधिकारी बोले- वन विभाग की टीम गांव में तैनात

वन विभाग के अधिकारी ह्रदय लाल सिंह ने बताया कि तेंदुए की उम्र लगभग 5 से 6 साल है, जो एक तंदुरूस्त और वयस्क तेंदुआ है। हालांकि 27 दिसंबर को हमला करने के बाद उसने किसी और पर हमला नहीं किया। फिर भी वन विभाग पूरी तरह से मुस्तैद है। लगातार हमारी टीम निगरानी कर रही है। डरने की जरूरत नहीं है, लेकिन सतर्कता जरूरी है।

भोपाल, इंदौर-उज्जैन समेत 40 जिलों में कोहरा

ग्वालियर में 100 मीटर रही विजिबिलिटी, एमपी में 3 दिन शीतलहर का अलर्ट नहीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर-उज्जैन समेत मध्यप्रदेश के करीब 40 जिलों में शुक्रवार सुबह भी कोहरा छाया रहा। ग्वालियर में यह इतना घना था कि विजिबिलिटी 100 मीटर के आसपास रही। भोपाल में ओस के चलते शहरभर की सड़कें भीगी नजर आईं।

जबलपुर में बीते कुछ दिन से पारा 8 डिग्री सेल्सियस पर ठहरा है। यहां सुबह और रात को कड़ाके की ठंड पड़ रही है। प्रदेश के इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी में पारा 4 डिग्री सेल्सियस के नीचे है। वहीं, सभी शहरों में पारा 13 डिग्री से कम बना हुआ है।

मौसम विभाग ने अगले 3 दिन तक मध्यम से घने कोहरे का अलर्ट जारी किया है। हालांकि, इस दौरान शीतलहर का अलर्ट नहीं है। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा ने बताया कि प्रदेश में अभी कोहरे का असर बना रहेगा। तीन दिन के बाद न्यूनतम तापमान में 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी होगी।

इसलिए बढ़ रही ठंड- फिलहाल, जम्मू, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड,

लद्दाख में बर्फबारी हो रही है। जिससे सर्द हवाएं प्रदेश में आ रही हैं। मौसम विभाग के अनुसार, जेट स्ट्रीम हवा 12.6 किमी की ऊंचाई पर 222 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से चल रही है। इस कारण ठंड का असर है। आने वाले दिनों में बर्फ पिघलेगी। जिससे हवा की रफ्तार तेज होगी और प्रदेश में ठंड का असर बढ़ जाएगा। इस कारण जनवरी में प्रदेश का मौसम ठंडा ही रहेगा। 20 से 22 दिन तक शीतलहर चलने का अनुमान है।

बारिश थमते ही ठंड का असर बढ़ा- बता दें कि वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) की एक्टिविटी के चलते दिसंबर के आखिरी दिनों में बारिश और ओले का दौर रहा। भोपाल, इंदौर, जबलपुर, उज्जैन समेत 45 से अधिक जिलों में बारिश हुई। वहीं, 20 जिले ऐसे रहे, जहां ओले भी गिरे। बारिश का दौर खत्म होते ही ठंड का असर बढ़ गया। साल 2024 की आखिरी रात भी ठंडी रही। वहीं, नए साल 2025 के पहले और दूसरे दिन सर्दी का असर बना रहा।

अगले 2 दिन ऐसा रहेगा मौसम

4 जनवरीः भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, नीमच, मंदसौर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, राजगढ़, विदिशा, सीहोर, रायसेन, सागर, नरसिंहपुर, दमोह, निवाड़ी, टीकमगढ़, पन्ना, कटनी, सतना, मैहर, सीधी, मऊगंज, सिंगरौली और रीवा में घना कोहरा रहेगा।

5 जनवरीः भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, नीमच, मंदसौर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, राजगढ़, विदिशा, सीहोर, रायसेन, सागर, नरसिंहपुर, दमोह, निवाड़ी, टीकमगढ़, पन्ना, कटनी, सतना, मैहर, सीधी, मऊगंज, सिंगरौली और रीवा में घना कोहरा छाया रहेगा।

पचमढ़ी में रिकॉर्ड 3.4 डिग्री पारा

नए साल की दूसरी रात ने भी प्रदेश को कंपकंपा दिया। गुरुवार-शुक्रवार की रात पचमढ़ी में तो एक ही रात में पारा 7.6 डिग्री लुढ़क कर 3.4 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। रीवा, रायसेन, मंडला, नौगांव, राजगढ़, खजुराहो, उमरिया, गुना में पारा 7 डिग्री के नीचे रहा। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में सबसे कम 6.8 डिग्री, जबलपुर में 7 डिग्री, ग्वालियर में 7.6 डिग्री, उज्जैन में 9 डिग्री और इंदौर में 9.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

बच्ची से रेप के बाद हत्या, नहर किनारे फेंका शव

मां के पास सोते समय उठाकर ले गया था आरोपी; परिजन ने किया चक्काजाम

सिवनी मालवा (एजेंसी)। सिवनी मालवा में 6 साल की बच्ची की रेप के बाद हत्या कर दी गई। आरोपी उसे सोते समय घर से उठाकर जंगल ले गया और गलत काम किया। इसके बाद शव नहर किनारे फेंक दिया।

शुक्रवार अल सुबह 3 बजे उसका शव पड़ा मिला। गुस्साए परिजन और आदिवासी समाज के लोगों ने सुबह चौराहे पर शव रखकर चक्काजाम कर दिया। दो घंटे तक प्रदर्शन चलता रहा। इससे सड़क के दोनों ओर वाहनों की कतार लग गई। लोग आरोपी को फांसी देने की मांग करते रहे। मौके पर पुलिस बल तैनात रहा। लोगों ने बच्ची का शव रखकर चक्काजाम कर दिया। वे आरोपी को फांसी देने की मांग कर रहे थे।

लिखित आश्वासन के बाद माने परिजन- प्रदर्शन की सूचना मिलते ही एसडीएम सरोज सिंह

परिहार, एसडीओपी राजू रजक और थाना प्रभारी अनूप सिंह उइके घटनास्थल पर पहुंचे। एसडीएम परिहार ने गुस्साए लोगों को समझाइश दी।

इसके बाद स्टाम्प पर थाना प्रभारी अनूप सिंह उइके ने लिखित में दिया कि 10 दिन में न्यायालय में चालान पेश कर मामले को फास्ट ट्रैक कोर्ट मे चलाया जाएगा। तब जाकर परिजन माने। पुलिस ने आरोपी अजय धुर्वे (30) को गिरफ्तार कर लिया है।

पोस्टमार्ट्म रिपोर्ट में रेप-हत्या की पुष्टि- बच्ची के परिजन ने बताया कि आरोपी का नाम अजय धुर्वे है। वह ग्राम खारदा का रहने वाला है। वह खेत पर काम करता था। रात में बच्ची मां के पास सो रही थी। आरोपी उसे उठाकर ले गया था। रेप के बाद हत्या कर दी और शव फेंक दिया। पुलिस ने शव बरामद किया और पोस्टमॉर्ट्म के लिए जिला अस्पताल भेजा। पोस्टमॉर्ट्म रिपोर्ट में बच्ची के साथ रेप और हत्या की पुष्टि हुई है।

रेलवे में ट्रेन मैनेजर ने योगा टीचर से किया रेप

खंडवा में पीड़िता बोली- 2 साल लिवइन में रखा, शादी दूसरी से कर ली

खंडवा (नप्र)। खंडवा में योगा टीचर ने रेलवे में ट्रेन मैनेजर के खिलाफ दुष्कर्म का केस दर्ज कराया। टीचर का आरोप है कि उसने शादी का झांसा देकर रेप किया। वह दो साल से लिव इन रिलेशनशिप में था। अचानक उसने दूसरी लड़की से शादी कर ली। पीड़िता ने इसकी शिकायत खरगोन डीआईजी से की थी। जिसके बाद खंडवा पुलिस ने आरोपी मैनेजर के खिलाफ गुरुवार को केस दर्ज कर लिया है।

पीड़िता ने पुलिस से शिकायत में बताई आपबीती- शादी के लिए देखने आया था, पहले मना कर दिया। पीड़िता ने बताया कि मैं एक शासकीय स्कूल में योगा टीचर हूं। फरवरी 2023 में सावन तिरोले मुझे शादी के लिए देखने के लिए मेरे घर पर आया था। पहले मैंने सावन को मना कर दिया था। लेकिन उसने मुझे बार-बार फोर्स कर मना लिया। इसके बाद सावन ने मुझे शादी के लिए प्रपोज किया तो मैंने उसे हां कर दिया था।

फिर कुछ दिन बाद सावन ने मुझे शारीरिक संबंध बनाने के लिए कहा, तो मैंने उसे मना कर दिया कि, शादी के पहले मैं ऐसा काम नहीं करूंगी। उसने मुझे कहा कि तुम मुझ पर भरोसा करो, मैं तुमसे शादी जरूर करूंगा और तुमसे ही करूंगा।

मेरे मना करने के बावजूद सावन मुझे पहली बार जुलाई 2023 में उसके किराए के मकान खंडवा के रामनगर स्थित अरिहंत कॉलोनी में ले गया। जहां उसने मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाएं। वह मेरे घर से मुझे खंडवा लेकर आया था।

शादी फिक्स होने की बात छिपाई- आखिरी बार 4 दिसंबर 2024 को मैंने सावन को संबंध बनाने से साफ इनकार कर दिया था, तब भी उसने मुझे फिर से शादी का झांसा दिया और मेरी सहमति नहीं होने के बाद भी उसने मेरे साथ रेप किया। उस समय उसकी शादी

सावन तिरोले, आरोपी

दूसरी जगह फिक्स हो चुकी थी। तब भी उसने मुझे यह बात नहीं बताई थी।

कहता रहा- मुझसे ही शादी करेगा- शादी फिक्स हो जाने के बाद भी वह मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाता रहा और मुझे शादी करने का आश्वासन देता रहा। यह बात मुझे कुछ दिन पहले ही पता चली कि सावन की शादी किसी और लड़की से होने वाली है। मैंने सावन को कहा तो उसने मुझे फिर से कहा कि मैं दूसरी लड़की से शादी नहीं करूंगा।

शादी रूकवाने पुलिस बुलाई, नहीं माना आरोपी- जब मुझे भनक लगी कि आरोपी दूसरी शादी करने जा रहा हैं तो मैं खंडवा में आरोपी के गांव कोंडावत पहुंची। पुलिस को सूचना देकर बुलाया। लेकिन आरोपी नहीं माना और बारात लेकर सनावद चला गया। पुलिस ने भी आपसी का मामला होकर ज्यादा हस्तक्षेप नहीं किया।

टीआई ने कार्रवाई नहीं की तो खंडवा एसपी से मिले। उन्होंने सीएसपी को जांच सौंप दी। फिर हम लोग खरगोन जाकर डीआईजी से मिले। जिसके बाद हमें थाने बुलाया गया। हालांकि, पीड़िता ने मौखिक तौर पर अफसरों से कहा कि सावन यदि शादी के लिए राजी हो जाता हैं तो वह शिकायत वापस ले लेगी। पुलिस के संपर्क करने के बाद भी आरोपी ने जवाब नहीं दिया।

आरोपी का परिवार रसूखदार, काका पीडब्ल्यूडी में- आरोपी सावन का परिवार रसूखदार हैं। उसके काका एसई तिरोले पीडब्ल्यूडी में इंजीनियर है, जो कि जुलाई 2024 में लोकायुक्त में ट्रेस हो चुके हैं। लोकायुक्त ने नर्मदापुरम में एक ठेकेदार से 10 लाख रूपए की रिश्वत लेते हुए रंगेहाथ पकड़ा था।

पीड़िता के पिता बोले- आरोपी के काका ने धमकाया- पीड़िता के पिता का कहना है कि जब बेटी ने सावन की शादी होने के बारे में बताया तो हम लोग 28 दिसंबर को उसके घर गए। जहां उसके काका ने हमें धमकाया। कहने लगा कि जहां जाना हो वहां चले जाओ। पुलिस भी बगैर कार्रवाई के वापस लौट आई। योगा टीचर ने रेलवे में मैनेजर सावन तिरोले के खिलाफ रेप का केस दर्ज कराया है।

रेलवे में 2018 से नौकरी कर रहा आरोपी- रेलवे से मिली जानकारी के मुताबिक, आरोपी सावन तिरोले की ज्वाइनिंग 2018 में हुई थी। उसकी नौकरी गार्ड बाबू की है, सरकार ने नाम परिवर्तन कर इस पद को ट्रेन मैनेजर का नाम दिया हैं। जिसका काम ट्रेन को लाल और हरी झंडी बताकर सिग्नल देने का हैं। आरोपी ने हाल ही में रेलवे से शादी की छुट्टी ली थी। 2 जनवरी को ही वह ड्यूटी पर लौटा हैं।

समाधान ऑनलाइन मीटिंग में शिकायत करने वालों से होगी बात

सीएम यादव वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से पूछेंगे, क्यों समय पर नहीं सुलझी समस्या

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव नए साल में आज पहली बार प्रदेश के सभी जिलों के कलेक्टरों और पुलिस अधीक्षकों के साथ मीटिंग करेंगे। समाधान ऑनलाइन कार्यक्रम के जरिए होने वाली इस बैठक में विभागीय अफसरों की लापरवाही के कारण लोगों की समस्याओं का समाधान नहीं हो पाने का मुद्दा उठाया जाएगा।

इसमें मुख्यमंत्री संबंधित मामलों में कलेक्टरों से जवाब तलब करेंगे। साथ ही, सरकारी योजनाओं का लाभ देने में लापरवाही बरतने वाले अफसरों पर कार्यवाही भी की जाएगी। समाधान ऑनलाइन कार्यक्रम में रीवा और सिंगरौली जिलों के भी दो मामले शामिल हैं।

इस समाधान ऑनलाइन बैठक में रीवा जिले के मनगवां कॉलेज में एक कंप्यूटर ऑपरेटर की शिकायत पर मुख्यमंत्री सुनवाई करेंगे। बताया जा रहा है कि कंप्यूटर ऑपरेटर ने प्राचार्य पर संस्था से नियमविरुद्ध तरीके से निष्कासित करने का आरोप लगाया है।

इस मामले में मुख्यमंत्री यादव समाधान ऑनलाइन के दौरान रीवा की कलेक्टर प्रतिभा पाल से जानकारी लेंगे। इसी तरह, सिंगरौली जिले की एक अन्य शिकायत में मुख्यमंत्री यादव कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक से जवाब तलब करेंगे।

मीटिंग में सीएस अनुराग जैन भी शामिल रहेंगे

दोपहर 4.30 बजे से शुरू होने वाले इस समाधान ऑनलाइन कार्यक्रम में प्रदेश के अन्य जिलों के मामले भी शामिल होंगे। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से होने वाली इस बैठक में चीफ सेक्रेटरी अनुराग जैन भी मौजूद रहेंगे।

बैठक में सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों की विभागवार और जिला वार ग्रेडिंग और पेंडिंग शिकायतों के मामलों पर चर्चा होगी। मुख्यमंत्री यादव और चीफ सेक्रेटरी जैन, अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव और सचिव स्तर के अफसरों के साथ कलेक्टरों और पुलिस अधीक्षकों से जनसमस्या निराकरण को प्राथमिकता देने के निर्देश देंगे।

29 अक्टूबर को सस्पेंड किए थे 11 अधिकारी, कर्मचारी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इससे पहले, 29 अक्टूबर को हुए समाधान ऑनलाइन कार्यक्रम में आमजन की शिकायतों के समाधान में देरी के कारण विद्युत महाप्रबंधक सहित विभिन्न विभागों के 11 अधिकारी-कर्मचारियों को निलंबित करने के निर्देश दिए थे। साथ ही, वरिष्ठ अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के लिए कहा था। इस संबंध में भी आज की बैठक में जानकारी दी जाएगी।